नमो नमः श्री गुरु राम-जगच्चन्द्र सूरये।।

वै.व.४, २०७२
26-5-2016
Khetarvasi
Patan

श्रीसिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनम्

अध्याय ७ (कर्ता- हेमचन्द्राचार्य जी)
(चन्द्रकान्त भाई पंडितजी, पाटण)

यः ७-१-१ ★

सूत्रार्थ - यहाँ से आगे जो भी बताएँगे, उसमें ईय प्रत्यय के पहले तक (७-१-२८) य प्रत्यय अधिकृत जानना।

वहति रथ-युग-प्रासङ्गात् ७-१-२ ★

सूत्रार्थ - द्वितीयान्त ऐसे इन शब्दों से 'वहति' वहन करने अर्थ में य प्रत्यय होता है।
'तमर्हति' ६-४-१७७ सूत्र से तम् का अधिकार चालू है। इससे द्वितीयान्त अर्थ लिया।

eg.
1. द्वौ रथौ वहति इति द्विरथ्यः (दो रथ को चलाने वाला)
2. युगं वहति इति युग्यः (युग यानि धुरा अथवा ५ वर्ष का काल, उसे चलाने वाला)
3. प्रासङ्गं वहति इति प्रासङ्ग्यः (वत्स-बछड़े के दमन काल में जो काष्ठ उसके स्कन्ध पर लगाया जाता है, वह प्रासङ्ग, उस काष्ठ को वहन करने वाला)

विशेष ① प्र. जो रथ को चलाता है, वह रथ का वोढा (वह्+तृच्) होता है। 'रथात्सादेश्च वोढ्रङ्गे ६-३-१७५' सूत्र से वोढृ अर्थ में रथ शब्द से य प्रत्यय कहा गया है। तो फिर यह सूत्र वापस क्यों बनाया?

उ. इस सूत्र से रथ्यः प्रयोग सिद्ध होता है। किन्तु 'द्विरथ्यः' ऐसा द्विगु समास वाला प्रयोग उस सूत्र से सिद्ध नहीं होता क्योंकि द्विगु समास में वह सूत्र लगाने पर 'द्विगोरनपत्ये यस्वरादेर्लुबद्विः ६-१-२४' सूत्र से य प्रत्यय का लोप होकर 'द्विरथः' प्रयोग सिद्ध होता है। अतः 'द्विरथ्यः' ऐसे प्रयोग को सिद्ध करने के लिए यह सूत्र फिर से बनाया गया। यह सूत्र लगाने पर ६-१-२४ सूत्र नहीं लगेगा क्योंकि प्राग्जितीयत्व यहाँ नहीं है।

② प्रासङ्ग शब्द अर्थ यदि प्रसङ्गाद् आगतं आदि लेंगे तो यह सूत्र नहीं लगेगा क्योंकि यहाँ 'वत्सदमनस्कन्धकाष्ठम्' अर्थ ही लेना है।

धुरो यैयण् ७-१-३ ★

संधि विग्रह - धुरः य-एयण्

सूत्रार्थ - द्वितीयान्त ऐसे धुर् शब्द से वहति अर्थ में य और एयण् प्रत्यय होते हैं।

eg. धुरं वहति यः इति धुर्यः, धौरेयः।

विशेष ① वहति अर्थ में धुर् शब्द से अण् प्रत्यय का बाध करने के लिए यह सूत्र बनाया है।
② अन्य मत वाले यट् और एयकण् प्रत्यय का विधान करते हैं। धुर्यः, धौरेयकः

यहाँ यट् प्रत्यय टित् होने से स्त्रीलिंग में ङी प्रत्यय लगेगा।
धुरं वहति या इति धुरी
धुर् + य = धुर्य + ङी 'अणञेयकण्-नञ्-स्नञ्-टितम् 2-4-20'
धुरी 'व्यञ्जनात् तद्धितस्य 2-4-88' से य लोप

★ वामाद्यादेरीनः 7-1-4

सूत्रार्थ वाम आदि पूर्वपद में हो जिसके ऐसे द्वितीयान्त धुर् शब्द से वहति अर्थ में ईन प्रत्यय होता है।

eg. 1. वामा चासौ धूश्च वामधुरा / वामधुर् + अत् 'धुरोऽनक्षस्य 7-3-77' से अत् समासान्त
वामधुर + आ (आप्) 'आत् 2-4-18'
वामधुरा तां वामधुरां वहति इति वामधुरीणः

★ अश्चैकादेः 7-1-5

सूत्रार्थ एक पूर्वपद में हो जिसके ऐसे द्वितीयान्त धुर् शब्द से वहति अर्थ में अ और ईन प्रत्यय

eg. एकधुरः = एकस्य धूः इति एकधूः अथवा एका चासौ धूश्च ~~एकधूः~~ एकधुरा ....
एकधुरीणः पूर्ववत्

★ हलसीरादिकण् 7-1-6

सूत्रार्थ हल और सीर (ऐसे द्वितीयान्त) से वहति अर्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. हल + इकण् = हालिकः, सीर + इकण् = सैरिकः (किसान) [7-4-1 वृद्धि, अ 7-4-68 अ लोप]

★ शकटादण् 7-1-7

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे शकट शब्द से वहति अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. शकट + अण् = शाकटो गौः

विशेष प्र. 'तस्येदम् 6-3-160' सूत्र से शकट शब्द से अण् प्रत्यय और 'हल-सीरादिकण् 6-3-161' सूत्र से हल-सीर शब्द से पर इकण् प्रत्यय सिद्ध ही है, तो ये दोनों सूत्र क्यों बनाएँ?

उ. क्योंकि द्विगु समास में इन शब्दों से पर 'द्विगोरनपत्ये य-स्वरादे र्लुबद्विः 6-1-24' से ये प्रत्यय लोप होने वाले थे। अतः द्विगु समास में भी लोप न करने के लिए यह सूत्र बनाया।

★ विध्यत्यनन्येन 7-1-8

संधि विग्रह विध्यति अनन्येन

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे नाम से विध्यति (बींधने की क्रिया में) अर्थ में य प्रत्यय होता है, यदि व्यधन क्रिया अन्य करण से न हो तो।

eg. पादौ विध्यन्ति इति पद्या: शर्करा: । शर्कर यानि काच के टुकड़े, पत्थर आदि। शर्कर पैरों को बींधते हैं और स्वयं खुद से ही बींधते हैं, अन्य करण से नहीं। इसलिए उस अर्थ में कर्म को य प्रत्यय हुआ।

पाद + य 'हिम-हति-काषि-ये पद् 3-2-96' से पद् आदेश।

पद्य ⇒ पद्या: शर्करा:

★ धनगणं लब्धरि 7-1-9

सूत्रार्थ धन और गण (द्वितीयान्त) शब्द से लब्धृ अर्थ में य प्रत्यय।

लभ् + तृन् = लब्धृ । तृच् नहीं लेना।

eg. धनं लब्धा इति धन्य:, गणं लब्धा गण्य: । यदि तृच् लेंगे तो 'धनस्य लब्धा' ऐसा विग्रह होगा और षष्ठी वि. होने से सूत्र नहीं लगेगा।

★ णोऽन्नात् 7-1-10

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे अन्न शब्द से लब्धृ अर्थ में ण: प्रत्यय।

eg. अन्नं लब्धा आन्न: ।

★ हृद्य-पद्य-तुल्य-मूल्य-वश्य-पथ्य-वयस्य-धेनुष्या-गार्हपत्य-जन्य-धर्म्यम् 7-1-11

सूत्रार्थ ये सब शब्द य प्रत्ययान्त विशेष अर्थों में निपातन होते हैं।

eg. 1. हृद्य = हृदयस्य प्रियं बन्धनं वशीकरणमन्त्रं वा। 'हृदयस्य हृल्लासलेखाण्ये 3-2-94' से हृद् आदेश। हृदय को प्रिय औषध, देश। हृदयस्य बन्धन: हृद्यो वशीकरणमन्त्र:। निपातन रूढ़ि के लिए है, अत: यहाँ नहीं होगा हृदयस्य प्रिय: पुत्र:।

2. पद्य = पदं दृश्यं अस्मिन् (जिसमें पगधीर दिखें) पद्य: पङ्क: ।

3. तुल्यं = तुलया सम्मितं। तुल्य भाण्ड और सदृश अर्थ निपातन।

4. मूल्य = धान्य या बेचने से जो प्राप्त हो वह। यह अर्थ निपातन।

5. वश्य= वशं गतः (वश में गया हुआ) गौः।

6. पथ्य= पथः अनपेतं पथ्यं। अनपेत यानि युक्त। निपातन होने खाद्य वस्तु संबंधी ही अर्थ रहेगा, 'पथ्यः वाहनः' प्रयोग नहीं होगा।

7. वयस्य= वयसा तुल्यः यः। मित्र अर्थ में निपातन, शत्रु यदि समान वय वाला होगा तो भी वयस्य नहीं कहा जाएगा।

8. धेनुष्या= प्रधान गाय अर्थ में धेनु शब्द से य प्रत्यय, ष् का आगम। निपातन होने से 'गोपालक द्वारा पैसे लेने के लिए दी हुई गाय' ऐसा अर्थ लेना।
[गोपालक ने किसी सेठ को कहा कि 'आप मुझे इतने पैसे दो, मैं दो साल तक आपको इस गाय का दुध दूँगा।] इस प्रकार पीतदुग्धा इस गाय की प्रसिद्धि है।

9. गार्हपत्य= गृहपतिना संयुक्तः। ञ्यः प्रत्ययः। निपातन से 'गृहपति द्वारा घर में रखी हुई अग्नि' अर्थ लेना। [ब्राह्मणों, याज्ञिकों आदि के घर में सालों से यह अग्नि जलती ही रहती है]

10. जन्य= जनीं जनीं वहन्ति। जनी यानि वधू, वधू को वहन करने वाले जमाई के मित्र।
अथवा
जनस्य अपत्यः जन्यः।

11. धर्म्य= धर्मेण प्राप्यं अथवा धर्मति अनपेतं। सुख अर्थ में निपातन।

★ नौ-विषेण तार्य-वध्ये 7-1-12

सूत्रार्थ तृतीयान्त ऐसे नौ और विष शब्द से तार्य (तैरने योग्य) और वध्य (मारने योग्य) अर्थ में क्रमशः य प्रत्यय।

eg. 1. नावा तार्या= नाव्या नदी (नाव से तैरने योग्य नदी)

2. वधं अर्हति वध्यः 'दण्डादेर्यः 6-4-178' से य प्रत्यय।
विषेण वध्यः विष्यः गजः (विष से मारने लायक हाथी)

★ न्यायाऽर्थादनपेते 7-1-13

सूत्रार्थ पञ्चम्यन्त न्याय और अर्थ शब्द से अनपेत (युक्त) अर्थ में य प्रत्यय।

eg. न्यायादनपेतं न्याय्यम् | अर्थादनपेतं अर्थ्यम्

मतमदस्य करणे 7-1-14

★ सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त मत और मद शब्द से करण अर्थ में य प्रत्यय।

eg. 1. मतस्य करणं मत्यम् । मत = इष्ट, साम्य, ज्ञान, मति।

2. मदस्य करणं मद्यम् (मद नशे को करने वाला)

तत्र साधौ 7-1-15

★ सूत्रार्थ तत्र = सप्तम्यन्त शब्द से साधु अर्थ में य प्रत्यय। साधु = प्रवीण, योग्य, उपकारक

eg. 1. सभ्यः = सभायां साधुः
भा = दीप्ति, भया सह वर्तते या सा सभा।

2. शरणे साधुः शरण्यः

3. कर्मणि साधुः कर्मण्यः (क्रिया करने में कुशल)

पथ्यतिथिवसतिस्वपतेरेयण् 7-1-16

★ सूत्रार्थ पथिन् अतिथि, वसति, स्वपति शब्द से 'तत्र साधु' अर्थ में एयण् प्रत्यय।

eg. 1. पथि साधुः पाथेयम्, आतिथेयम्, वासतेयम्, स्वापतेयम् (स्व = द्रव्य, स्वपति = द्रव्य का मालिक)

भक्ताण्णः 7-1-17

★ सूत्रार्थ भक्त शब्द से 'तत्र साधु' अर्थ में ण प्रत्यय।

eg. भक्ते साधुः = भाक्तः (शालिः)

पर्षद्यो ण्य-णौ 7-1-18

★ सूत्रार्थ पर्षद् शब्द से 'तत्र साधु' अर्थ में ण्य और ण प्रत्यय।

eg. पर्षदि साधुः पार्षद्यः पार्षदः।
अन्य मत- परिषद् शब्द → पारिषद्यः पारिषदः

सर्वजनाण्ण्येनञौ 7-1-19

★ सूत्रार्थ सर्व-जन शब्द से 'तत्र साधु' अर्थ में ण्य ईनञ् प्रत्यय।

eg. सर्वे च ते जनाश्च सर्वजनाः तेषु सर्वजनेषु साधुः सार्वजन्यः सार्वजनीनः

PAGE NO.
DATE / /

★ प्रतिजनादेरीनञ् 7-1-20

सूत्रार्थ प्रतिजन आदि शब्दों से 'तत्र साधु' अर्थ में ईनञ् प्रत्यय।

eg. 1. प्रतिकूलः प्रतीतो वा जनः प्रतिजनः 'तत्र साधु' प्रातिजनीनः।

2. अनुकूलः अनुरूपो वा जनः अनुजनः → आनुजनीनः।

→ विश्वजनः पञ्चजनः महाजनः इदंयुगः समयुगः परयुगः परस्यकुल अमुष्यकुल।

इदंयुगे साधुः = ऐदंयुगीनः धर्मः

★ कथादेरिकण् 7-1-21

सूत्रार्थ सप्तम्यन्त कथादि शब्दों से 'तत्र साधु' अर्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. कथायां साधुः काथिकः। विशिष्टा विपरीता विकृता वा कथा विकथा 'तत्र साधु' वैकथिकः।

विश्वकथा, संकथा, वितण्डा, जनवाद, जनेवाद, वृत्ति, संग्रह, गुण, गण, आयुर्वेद, कुल्माष, इक्षु, अपूप, संग्राम, संघात, प्रवास, निवास, उपवास आदि।

★ देवतान्तात्तदर्थे 7-1-22

सूत्रार्थ → तदर्थ = तस्याः चतुर्थ्याः अर्थः यस्य स तदर्थः (चतुर्थी विभक्ति का अर्थ)

देवता अन्त वाले चतुर्थी अन्त शब्द से 'तदर्थ' अर्थ में य प्रत्यय।

eg. अग्निदेवतायै इदम् अग्निदेवत्यम्। पितृदेवत्यम् देवदेवत्यम्।

★ पाद्यार्घ्ये 7-1-23

सूत्रार्थ पाद्य और अर्घ्य ये शब्द य प्रत्ययान्त निपातन होते हैं।

eg. 1. पादाभ्यां इदम् = पाद्यं जलम्। जल अर्थ निपातन। निपातन होने 3-2-96 से पद् आदेश नहीं हुआ।

2. अर्घ = मूल्य, पूजन। अर्घाय इदं अर्घ्यम् रत्नं पूजोपकरणं वा।

★ ण्योऽतिथेः 7-1-24

सूत्रार्थ चतुर्थ्यन्त अतिथि शब्द से 'तदर्थ' अर्थ में ण्य प्रत्यय।

eg. अतिथये इदं आतिथ्यम्।

★ सादेश्चा तद्: 7-1-25

सूत्रार्थ 'तद् 7-1-50' सूत्र तक जो प्रत्यय कहे जाएँगे, वे सादे: = पूर्वपद सहित और च= केवल प्रकृति से होते हैं।

★ हलस्य कर्षे 7-1-26

कृष् धातु + अधिकरण अर्थ में घञ् प्रत्यय। = कर्ष: = हल द्वारा खोदा हुआ मार्ग।

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त हल शब्द से कर्ष अर्थ में य प्रत्यय।

eg. हलस्य कर्ष: = हल्या। द्वयो: हलयो: कर्ष: = द्विहल्या।

विशेष हेमलिङ्गानुशासन नपुंसक लिंग प्रकरण के प्रथम श्लोक से य अंत वाले शब्द नपुंसक लिंग में होते हैं किन्तु बहुलाधिकार से पुं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग भी होते हैं।

★ सीतया संगते 7-1-27

सूत्रार्थ तृतीयान्त सीता शब्द से संगत अर्थ में य प्रत्यय।

सीता = हल से की हुई रेखा।

eg. सीतया संगतं = सीत्यम्। तिसृभि: सीताभि: संगतं त्रिसीत्यम्।

★ ईय: 7-1-28

सूत्रार्थ 'तद् 7-1-50' सूत्र तक कहे जाने वाले अर्थों में ईय प्रत्यय अधिकृत जानना।

★ हविरन्नभेदाऽपूपादे र्यो वा 7-1-29

सूत्रार्थ हवि के भेद वाचक शब्द, अन्न के भेद वाचक शब्द और अपूप आदि शब्दों से 'तद् 7-1-50' तक कहे जाने वाले अर्थों में य: प्रत्यय विकल्प से अधिकृत किया जाता है। (ईय का अपवाद)

eg. 1. आमिक्षायै इदं दधि आमिक्ष्यम् आमिक्षीयम् (आमिक्षा = फटे दूध का छेना, छेने के लिए यह दही) (हविर्भेद)

2. ओदनाय इमे ओदन्या: ओदनीया: तण्डुला: (चावल के लिए कच्चे चावल) (अन्न भेद) भात

3. अपूपाय इदं अपूप्यम्, अपूपीयम्

4. यवापूपाय इदं यवापूप्यम्, यवापूपीयम् (सादे: 7-1-25 के अधिकार से)

★ उवर्ण-युगादेर्यः 7-1-30

सूत्रार्थ — उवर्णान्त अने युगादि शब्दों थीसे 'तद् 7-1-50' सु तक के अर्थों में य प्रत्यय।

eg. शङ्कवे इदं शङ्कव्यं दारु (खीले के लिए लकड़ी)
युगाय हितं युग्यं। हविषे इदं हविष्यम्।

→ अष्टका बर्हिस्, मेधा, स्रुच्-स्रुच्, बीज, कूप, अक्षर, खर, असुर

★ नाभे र्नभ् चादेर्हांशात् 7-1-31

सूत्रार्थ — देह के अंश सिवाय के नाभि शब्द से 'तद् 7-1-50' तक के अर्थों में य प्रत्यय। और नाभि शब्द का नभ् आदेश।

eg. नाभ्ये नाभ्यै वा हितः नभ्यः अक्षः (बैलगाड़ी की धौंसरी), नभ्यं अञ्जनम्।

प्रति उदाहरण — अदेर्हांशादिति किम्? क्या नाभि शब्द देह के अंश सिवाय के अर्थ में ही चाहिए? हाँ

eg. नाभये नाभ्यै वा हितं नाभ्यं तैलम् - पेट दुःखने का तेल। 7-1-37 से य प्रत्यय

★ न् चोधसः 7-1-32

सूत्रार्थ — 'तद् 7-1-50' तक के अर्थों में ऊधस् शब्द से य प्रत्यय होता है। और ऊधस् के ऊधस् का न् होता है।

eg. ऊधसे हितं ऊधन्यम्। ऊधस् = गाय के थन

★ शुनो वश्चोदूत् 7-1-33

सूत्रार्थ — 'तद् 7-1-50' तक के अर्थों में श्वन् शब्द से य प्रत्यय और व का उ और ऊ होता है।

eg. शुने हितं शुन्यम् शून्यम्।

★ कम्बलाच्च संज्ञायाम् 7-1-34

सूत्रार्थ — कम्बल शब्द से 'तद् 7-1-50' तक के अर्थों में संज्ञा के विषय में य प्रत्यय।

eg. कम्बल शब्द यहाँ माप-मान वाचक है।
कम्बलः अस्य स्यात् 'तद् 7-1-50' कम्बल्यं ऋणापित्वशतम्।
1 कम्बल्य = 100 ऋणापित्व

प्रतिउदाहरण — संज्ञायाम् इति किम्? क्या कम्बल शब्द माप का संज्ञा वाचक ही होना चाहिए? हाँ.

eg. कम्बलाय इमे इति कम्बलीया ऊर्णा (कंबल बनाने के लिए ऊन)

★ तस्मै हिते 7-1-35

सूत्रार्थ तस्मै= चतुर्थ्यन्त शब्द से हित अर्थ में अधिकृत प्रत्यय होते हैं।

eg. 1. वत्साय हितः = वत्सीयः (7-1-28 सूत्र से ईय प्रत्यय)

2. आमिक्षायै इदं = आमिक्ष्यम् (7-1-29 से य प्रत्यय)

3. युगाय हितः = युग्यः (7-1-30 से य प्रत्यय)

★ न राजा-ऽऽचार्य-ब्राह्मण-वृष्णः 7-1-36

सूत्रार्थ चतुर्थ्यन्त इन नामों से हित अर्थ में अधिकृत प्रत्यय नहीं होता।

eg. राज्ञे, आचार्याय, ब्राह्मणाय, वृष्णे वा हित इति वाक्यमेव।

★ प्राण्यङ्ग-रथ-खल-तिल-यव-वृष-ब्रह्म-माषाद् यः 7-1-37

सूत्रार्थ प्राणि अंग के अर्थ वाले और रथादि चतुर्थ्यन्त शब्दों से हित अर्थ में य प्रत्यय।

eg. दन्तेभ्यः हितं दन्त्यम्। रथाय हिता रथ्या भूमिः। खलाय हितं खल्यं तमः। तिल्यम्। यव्यम्। वृष्यं क्षीरम् (बछड़े के लिए हितकारी दूध)। ब्रह्मण्यो देशः। माष्यः वातः। राजमाष्यः (सादेः अधिकार से)

★ अव्यजात् थ्यप् 7-1-38

सूत्रार्थ अवि अज शब्द से हित अर्थ में थ्यप् प्रत्यय।

eg. अविभ्यो हितं अविथ्यम्। अजेभ्यो हितं अजथ्यम्। (अवि= भेड़)

→ पित् पुंवद् भाव के लिए। अजाभ्यो हिता अजथ्या यूतिः (बकरी के लिए हितकारी जूथ)

★ चरक-माणवादीनञ् 7-1-39

सूत्रार्थ चरक और माणव शब्द से हित अर्थ में ईनञ् प्रत्यय।

eg. 1. चरकः ऋषिः। चरकेण प्रोक्तं चारकः (वेदः) ⇒ चरक + अण् 'तेन प्रोक्ते 6-3-181'

⇒ चारकः (चरक ऋषि द्वारा कहे गए शास्त्र वेद)

चारकं वेत्ति अधीते वा इति चारकः। ⇒ चारकः + अण् 'तद् वेत्त्यधीते 6-2-117'

चारक + अण् 'प्रोक्तात् 6-2-129' से अण् लोप
⇒ चारक चारक 'कठादिभ्यो वेदे लुप् 6-3-183' से पहले अण् का भी लोप।
⇒ चरक: ऋ = चरक ऋषि के वेद को जानने या पढ़ने वाला।
चरकाय हित: = चारकीण:।

2. प्राणव: ऋषि: । प्रक्रिया पूर्ववत् ⇒ प्राणव: = प्राणव ऋषि के शास्त्र को जानने या पढ़ने वाला
प्राणवाय हित: प्राणवीन:।

★ भोगोत्तरपदा-ऽऽत्मभ्यामीन: 7-1-40
सूत्रार्थ भोग है उत्तरपद जिसका ऐसे सामासिक शब्द और आत्मन् शब्द से हित अर्थ में ईन प्रत्यय।
eg. 1. मातृभोग: मातृभोग: तस्मै हित: मातृभोगीण:। आत्मने हित: आत्मनीन:। पितृभोगीण:..

★ पञ्च-सर्व-विश्वाज्जनात् कर्मधारये 7-1-41
सूत्रार्थ पञ्च, सर्व और विश्व शब्द का जन शब्द के साथ कर्मधारय समास हो तो जन शब्द से हित अर्थ में ईन प्रत्यय।
eg. पञ्च च ते जनाश्च = पञ्चजना: (पञ्चजन = रथकार, यह ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र के बाद पाँचवां वर्ण माना जाता है।) पञ्चजनाय हित: पाञ्चजनीन:। सार्वजनीन:, विश्वजनीन:
प्रतिउदाहरण कर्मधारये इति किम्? क्या कर्मधारय समास हो तो ही प्रत्यय होगा? हाँ
eg. पञ्चानां जन: = पञ्चजन: तस्मै हित: पञ्चजनीय:, ईय अधिकृत प्रत्यय।

★ महत्-सर्वादिकण् 7-1-42
सूत्रार्थ महत् और सर्व शब्द का जन शब्द के साथ कर्मधारय समास होतो जन शब्द से हित अर्थ में इकण् प्रत्यय।
eg. महाजनाय हित: माहाजनिक:। सार्वजनिक:।

★ सर्वाण्णो वा 7-1-43
सूत्रार्थ सर्व शब्द से पर हित अर्थ में ण प्रत्यय। विकल्प से होता है।
eg. सार्व:, सर्वीय:।

★ ण प्रत्यय से पर स्त्रीलिंग का आप् प्रत्यय।
अण् प्रत्यय से पर स्त्रीलिंग का ङी प्रत्यय।

→ जनात् और कर्मधारय के अधिकार की निवृत्ति।

★ परिणामिनि तदर्थे 7-1-44

सूत्रार्थ चतुर्थ्यन्त ऐसे शब्द से परिणामी अर्थ में 'तदर्थ' अर्थ होने पर अधिकृत प्रत्यय होता है। अर्थात् परिणाम वाचक शब्द से परिणामी अर्थ में प्रत्यय।

eg. अङ्गारेभ्य: इमानि अङ्गारीयाणि काष्ठानि → अंगारे परिणाम, काष्ठ परिणामी है और काष्ठ अंगारे बनाने के लिए ही है।

★ चर्मण्यञ् 7-1-45

सूत्रार्थ चतुर्थ्यन्त शब्द से परिणामी चर्म अर्थ में 'तदर्थ' अर्थ हो तो अञ् प्रत्यय।

eg. वध्र्यै चर्म = वार्ध्रं चर्म (वध्र के लिए चमड़ा)। वारत्रं चर्म।

★ ऋषभोपानहाञ्ञ्य: 7-1-46

सूत्रार्थ चतुर्थ्यन्त ऋषभ और उपानह् शब्द से 'परिणामी तदर्थ' अर्थ में ञ्य प्रत्यय।

eg. 1. ऋषभाय वत्स: = आर्षभ्यो वत्स: (बैल बनने के लिए बछड़ा)

2. उपानहे मुञ्ज: = औपनह्यो मुञ्ज: (उपानह के लिए घास)।

विशेष प्र. उपानह् व्यञ्जनान्त शब्द है तो मूल सूत्र में 'ऋषभोपानहात्' ऐसा पंचमी वि. का रूप कैसे किया?

उ. ऋषभश्च उपानद् च एतयो: समाहार: ऋषभोपानहम् 'चवर्ग-द-ष-ह: समाहारे 7-3-98' से अत् समासान्त प्रत्यय होने से अकारान्त जैसे रूप हुए।

★ छदिर्बलेरेयण् 7-1-47

सूत्रार्थ छदिस् बलि चतुर्थ्यन्त शब्द 'परिणामी तदर्थ' अर्थ में एयण् प्रत्यय।

eg. छदिस = छापरा, छदिषे इमानि छादिषेयाणि तृणानि। बलये इमे बालेया: तण्डुला:।

★ परिखाऽस्य स्यात् 7-1-48

सूत्रार्थ प्रथमान्त परिखा शब्द से षष्ठी के अर्थ में परिणामी अर्थ होने पर एयण् प्रत्यय होता है, यदि वह परिखा संभावना करने योग्य हो तो।

eg. परिखा = खाई। परिखा आसां इष्टकानां स्यात् ⇒ परिखा + ख्यण् = पारिखेय + ङी
⇒ पारिखेयी बहु. पारिखेय्य: इष्टका:

इन ईंटों की खाई हो सकती है ⇒ ईंट परिणामी, खाई परिणाम, परिखा प्रथमान्त, स्यात् शब्द से संभावना अर्थ है, षष्ठी का अर्थ।

प्रतिउदाहरण (1) स्यादिति किम्? संभावना ही होना चाहिए? हाँ

eg. परिखा इष्टकानां = ईंटों की खाई है।

★ अत्र च 7-1-49

सूत्रार्थ परिखा स्यात्' ऐसी संभावना वाले प्रथमान्त परिखा शब्द से सप्तमी वि. के अर्थ में ख्यण् प्रत्यय।

eg. परिखा स्यात् अस्यां इति पारिखेयी भूमि:।
परिखा + ख्यण् + ङी

– परिणामिनि और तदर्थ का अधिकार निवृत्त।

★ तद् 7-1-50

सूत्रार्थ 'स्यात्' ऐसी संभावना करने लायक प्रथमान्त नाम से परिणामी षष्ठी अर्थ में और सप्तमी के अर्थ में अधिकृत प्रत्यय।

eg. 1. षष्ठ्यर्थे- प्राकार: स्यात् आसां इष्टकानां प्राकारीया इष्टका: (7-1-28 से ईय प्रत्यय)
(परिणाम) (परिणामी)
परशु: स्यात् अस्य अयस: पारशव्यमय: परशु = कुल्हाड़ी
(7-1-30 से य प्रत्यय)

2. सप्तम्यर्थे- प्रासाद: स्यात् अस्मिन् देशे प्रासादीयो देश:

– 'ईय 7-1-28' की अवधि पूर्ण।

★ तस्याऽर्हे क्रियायां वत् 7-1-51

सूत्रार्थ तस्य = षष्ठ्यन्त नाम से क्रियारूप योग्य अर्थ में वत् प्रत्यय।

eg. राज्ञ: अर्हं राजवत् (राजा के योग्य क्रिया) | कुलीनवत्, साधुवत्।

प्रतिउदाहरण क्रियायामिति किम्? क्या क्रिया रूप योग्य अर्थ ही चाहिए? हाँ

eg. राज्ञोऽर्हं मणि: = राजा के योग्य मणि। यहाँ मणि क्रिया नहीं है, वस्तु है।

★ स्यादेरिव 7-1-52

सूत्रार्थ स्यादि अन्त वाले नाम से सादृश्य क्रिया के अर्थ में वत् प्रत्यय।

eg. 1. अश्ववत् याति चैत्रः अश्वः इव।

2. देवं इव देववत् पश्यन्ति मुनिम्।

3. साधुना इव साधुवद् आचरितं चैत्रेण।

4. ब्राह्मणाय इव ब्राह्मणवद् दत्तं क्षत्रियाय।

5. पर्वताद् इव पर्वतवद् अवरोहति आसनात्।

6. प्रासादे इव उपाश्रये वसति प्रासादवत्। (षष्ठी वि. सिवाय सभी विभक्ति)

★ तत्र 7-1-53

सूत्रार्थ तत्र=सप्तम्यन्त नाम से पर इव अर्थ में वत् प्रत्यय।

eg. स्रुघ्ने इव स्रुघ्नवत् साकेते परिखा = स्रुघ्न देश की तरह साकेत नगर में भी खाई है।

मथुरायां इव मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः।

विशेष → 'तत्र' मूल सूत्र में पञ्चम्यन्त पद है। पञ्चमी वि. का लोप हुआ है।

→ ऊपर 51 और 52 सूत्र में क्रिया का सादृश्य था। यहाँ द्रव्य/वस्तु का सादृश्य है।

★ तस्य 7-1-54

सूत्रार्थ तस्य= षष्ठ्यन्त नाम से पर इव अर्थ में वत् प्रत्यय।

eg. चैत्रस्य इव चैत्रवद् मैत्रस्य भ्रूः।

विशेष ① 'तस्य' मूल सूत्र भी लुप्तपञ्चम्यन्त पद है।

② यहाँ भी वस्तु/द्रव्य का सादृश्य है, क्रिया का नहीं।

③ तत्र और तस्य सूत्र एक साथ भी बना सकते थे किन्तु तस्य का अधिकार आगे ले जाने के लिए अलग किया।

★ भावे त्व-तल् 7-1-55

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त नाम से भाव में त्व और तल् प्रत्यय होते हैं।

शब्द की प्रवृत्ति का हेतु रूप जो गुण, वह भाव। जैसे- 'साधु' शब्द की प्रवृत्ति का हेतु भूत गुण 'साधुता'।

PAGE NO.
DATE / /

गो: भाव: गोत्वम् , गोता । शुक्लस्य भाव: शुक्लत्वम् , शुक्लता ।

विशेष eg. (1) हेमलिङ्गानुशासन नपुंसकलिंग प्रकरण श्लोक 9 से त्व अन्त वाले सभी शब्द नपुंसक लिंग में होते हैं।

(2) लित् प्रत्ययान्त सभी स्त्रीलिंग होते हैं। इसलिए तल् प्रत्यय के बाद तुरंत आप् प्रत्यय लग जाएगा।

★ प्राक् त्वादगडुलादे: 7-1-56

सूत्रार्थ 'ब्रह्मणस्त्व: 7-1-77' सूत्र से पहले के सूत्रों में त्व और तल् प्रत्यय अधिकृत जानना, किन्तु गडुलादि शब्दों से त्व-तल् नहीं करना।

प्रतिउदाहरण गडुलादिवर्जनं किम्? गडुलादि क्यों छोड़े? क्योंकि गडुलादि से अन्य प्रत्यय होंगे।

eg. गाडुल्यम् - 7-1-60 से ट्यण् प्रत्यय।

कामण्डल्वम् - कमण्डलु शब्द कमण्डल्वा: भाव: 7-1-69 से अण् प्रत्यय 'अस्वयम्भुवोऽव् 7-4-70' से अव्

→ गडुलादि - गडुल (कुबड़ा), विशस्त (कटा हुआ, प्रख्यात, अशिष्ट), दायाद (उत्तराधिकारी), बालिश, संवादिन्, बहुभाषिन्, शीर्षघातिन्, कमण्डलु । (कमण्डलु सिवाय सबको 7-1-60 से ट्यण्)

→ केचित् गडुलादे: अपि त्व-तल् इच्छन्ति। तन्मते गडुलत्वम् गडुलता इत्यादि।

★ नञ्तत्पुरुषादबुधादे: 7-1-57

सूत्रार्थ '7-1-77' सूत्र से पहले नञ् तत्पुरुष समास से पर त्व-तल् ही होते हैं। उन-उन सूत्रों में बताए हुए प्रत्यय नहीं होते। किन्तु बुधादि शब्द सिवाय अर्थात् बुधादि शब्दों से नञ् तत्पुरुष समास में भी त्व-तल् नहीं होते।

eg. 1. न शुक्ल: इति अशुक्ल: तस्य भाव: अशुक्लत्वं अशुक्लता। ट्यण् नहीं होगा।
अशौक्ल्यम् में पहले ट्यण् लगाकर फिर नञ् लगाया है।

2. अपते: भाव: अपतित्वम् अपतिता।

प्रतिउदाहरण अबुधादेरिति अबुधादेरिति किम्? बुधादि शब्द से उन-उन सूत्रों में बताए हुए प्रत्यय करना।

eg. बोधतेय: इति बुध: 'नाम्युपान्त्य-प्री-कृ-गृ-ज्ञ: क: 5-1-54' से कर्ता अर्थ में क प्रत्यय
न बुध: इति अबुध: तस्य भाव: आबुध्यम् 7-1-60 से ट्यण्

→ बुधादि - बुध, चतुर, संगत, लवण, रस, यथा, तथा, यथातथ, ईश्वर, क्षेत्रज्ञ, संवादिन्,

संभाषिन्, बहुभाषिन्, शीर्षघातिन्, परमस्थ, मध्यस्थ, दुष्पुरुष, कापुरुष, विशाल आदि
इन सभी से के नञ् तत्पुरुष समास से 'राजादि गण पाठ 7-1-60' से ट्यण्।

★ पृथ्वादेरिमन् वा 7-1-58

सूत्रार्थ पृथ्व पृथु आदि शब्दों से भाव में इमन् प्रत्यय विकल्प से होता है, विकल्प में त्व-तल् और उन-उन सूत्र में बताए हुए प्रत्यय भी।

eg.1. पृथु + इमन् 7-4-39 से ऋ → र
प्रथु + इमन् 'त्र्यन्त्यस्वरादे: 7-4-43' से उ लोप
प्रथिमा, पृथुत्वम्, पृथुता, पार्थवम् (7-1-69 से अण्)

2. म्रदिमा, मृदुत्वम्, मृदुता, मार्दवम्

→ पृथ्वादि- पृथु, मृदु, पटु, तनु, लघु, बहु, साधु, ऋरु, गुरु, पाण्डु, बाल, होड, स्वादु, ऋजु, कटु आदि।

★ वर्ण-दृढादिभ्यष्ट्यण् च वा 7-1-59

सूत्रार्थ वर्ण विशेष वाचक शब्द और दृढादि शब्दों से भाव में ट्यण् च=इमन् वा= त्व-तल (अंग) और उन-उन सूत्रों में आने वाले प्रत्यय।

eg. शुक्लस्य भाव: शौक्ल्यम्, शुक्लिमा, शुक्लत्वम्, शुक्लता।
शिते: भाव: शैत्यम्, शितिमा, शितित्वम्, शितिता, शैतम् '7-1-69 से अण्'।

→ दृढादि – दृढ, वृढ(समर्थ), परिवृढ, कृश, भृश, लवण, शीत, उष्ण, जड, मूक, मूर्ख, पण्डित, मधुर आदि।

★ पति-राजान्त-गुणाङ्ग-राजादिभ्य: कर्मणि च 7-1-60

सूत्रार्थ पति अन्त वाले शब्द, राजा अन्त वाले शब्द, गुणाङ्ग और राजादि शब्दों से भाव और कर्म (क्रिया) अर्थ में ट्यण् प्रत्यय और प्राक् त्वात् के अधिकार से त्व-तल् प्रत्यय।

गुणाङ्ग= गुण है अंग (प्रवृत्ति का निमित्त) जिसका ऐसे शब्द। जैसे- मूढ, विदु विद्वान्, आदि।

eg.1. पत्यन्त- अधिपते र्भाव: कर्म वा अधिपत्यं, अधिपतित्वम् अधिपतिता।

2. राजान्त- अधिराजस्य भाव: कर्म वा आधिराज्यं, अधिराजत्वं अधिराजता।

3. गुणाङ्ग - मूढस्य भाव: कर्म वा- मौढ्यम्, मूढत्वम्, मूढता।

PAGE NO.
DATE / /

5. राजादि- राज्ञः भावः कर्म वा राज्यं, राजत्वं राजता।
→ राजादि- राजन् कवि ब्राह्मण चोर धूर्त्त कुशल चपल निपुण पिशुन स्वस्थ विश्वस्त विफल पुरोहित बाल मन्द होड आदि।

★ अर्हतस्तो न्त् च 7-1-61

सूत्रार्थ अर्हत् शब्द से भाव और कर्म अर्थ में ष्यण् प्रत्यय, प्राक् त्वात् के अधिकार से त्व-तल् प्रत्यय और ष्यण् प्रत्यय पर अर्हत् के त् का न्त होता है।

eg. अर्हतः भावः कर्म वा आर्हन्त्यम्, अर्हत्त्वम्, अर्हत्ता।

★ सहायाद् वा 7-1-62

सूत्रार्थ सहाय से पर ष्यण् प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में विकल्प से होता है, विकल्प में 7-1-72 से अकञ् प्रत्यय, प्राक् त्वात् के अधिकार से त्व-तल् प्रत्यय।

eg. सहायस्य भावः कर्म वा साहाय्यम्, साहायकम्, सहायत्वम्, सहायता।

★ सखि-वणिग्- दूताद् यः 7-1-63

सूत्रार्थ सखी, वणिज्, दूत शब्द से भाव और कर्म अर्थ में य प्रत्यय, प्राक् त्वात् के अधिकार से त्व-तल्।

eg. 1. सख्युः भावः कर्म वा सख्यम्, सखित्वम्, सखिता।
2. वणिजः भावः कर्म वा वणिज्यम् वणिक्त्वम् वणिक्ता वाणिज्यम् (राजादि आकृति गण)
3. दूतस्य भावः कर्म वा दूत्यम्, दूतत्वम्, दूतता, दौत्यम् (राजादि आकृति गण ष्यण्)

★ स्तेनान्नलुक् च 7-1-64

सूत्रार्थ स्तेन शब्द से तस्य भावः कर्म अर्थ में य प्रत्यय और उसके योग में न का लोप। प्राक् त्वात् से त्व-तल्। राजादि आकृति गण 7-1-60 से ष्यण्।

eg. स्तेनस्य भावः कर्म वा स्तेयम्, स्तेनत्वम्, स्तेनता, स्तैन्यम्

★ कपि- ज्ञातेरेयण् 7-1-65

सूत्रार्थ कपि और ज्ञाति अर्थ से भाव और कर्म अर्थ में एयण् प्रत्यय। प्राक् त्वात् से त्व-तल्

eg. कापेयम्, कपित्वम्, कपिता। ज्ञातेयम्, ज्ञातित्वम्, ज्ञातिता।

विशेष ① कपि को 7-1-69 से अण् की प्राप्ति का बाध और ② ज्ञाति को 7-1-66 से अञ् की प्राप्ति का बाध कर ढयण् की प्राप्ति के लिए यह सूत्र बनाया।

★ प्राणिजाति-वयोऽर्थादिञ् 7-1-66

सूत्रार्थ प्राणिजातिवाचक नाम और वय अर्थ वाले नाम से भाव और कर्म अर्थ में अञ् प्रत्यय।

eg. अश्वस्य भावः कर्म वा आश्वम् अश्वत्वम् अश्वता। कुमारस्य भावः कर्म वा कौमार्य, कुमारत्वं, कुमारता
हस्तिनः भावः कर्म वा हास्तम् 'नोऽपदस्य तद्धिते 7-4-61' से अन्त्यस्वरादि का लोप।

★ युवादेरण् 7-1-67

सूत्रार्थ युवादि शब्दों से भाव और कर्म अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. यूनः भावः कर्म वा यौवनम्, युवत्वम्, युवता। स्थाविरम्, स्थविरत्वम्, स्थविरता।

विशेष ① प्र. 7-1-66 में हस्तिन् के न् का लोप किया तो युवन् में क्यों नहीं किया?
उ. युवन् में 7-4-61 सूत्र नहीं लगकर 7-4-52 सूत्र लगता है।
② युवन् शब्द चौरादि गणपाठ में आने से 7-1-73 सूत्र से यौवनिका रूप भी बनता है।
③ युवन् शब्द सामान्यग्रहण होने से स्त्रीलिंग में युवति शब्द के भाव और कर्म में यही रूप होंगे।
④ युवादि – युवन्, स्थविर, यजमान, श्रमण, श्रवण, परिव्राजक, सब्रह्मचारिन्, सुहृत्, दुहृत्, चपल, कुशल, निपुण, पिशुन, कुतूहल, क्षेत्रज्ञ, भ्रातृ, सुष्ठु, दुष्ठु, कर्तृ, कुलीन आदि।
→ श्रमण, पिशुन, निपुण, कुशल, चपल आदि को राजादि गणपाठ 7-1-60 से ट्यण् प्रत्यय भी।

★ हायनान्तात् 7-1-68

सूत्रार्थ हायन् अन्त वाले शब्दों से भाव और कर्म अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. द्वे हायने यस्य स द्विहायनः तस्य भावः कर्म वा द्वैहायनम्, द्विहायनत्वम्, द्विहायनता

विशेष ये नाम वयवाचक नहीं हैं। यदि ये वयवाचक बनेंगे तो 'प्राणिजाति-वयोऽर्थादिञ् 7-1-66' से अञ् प्रत्यय होगा। अञ् प्रत्यय होने पर 'त्रिचतुर्भ्यो हायनस्य वयसि 2-3-75' से न् का ण् होगा। अण् प्रत्यय पर न् का ण् नहीं होगा।

PAGE NO.
DATE / /

★ ऋवर्णाल्लिवादेः 7-1-69

सूत्रार्थ — लघु स्वर है पास में जिनके ऐसे इ, उ, ऋ अन्तवाले नामों से तस्य भाव-कर्म अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. शुचेः भावः कर्म वा शौचम्, शुचित्वम्, शुचिता। शुचि इकारान्त
हरीतकी → हारीतकम्। पटु – पाटवम्। वधू – वाधवम्। पितृ = पैत्रम्। मौलम्। (ऋ लघु स्वर)

प्रतिउदाहरण — लघ्वादेरिति किम्? पास में लघु स्वर ही होना चाहिए।

eg. पाण्डु – उकारान्त है किन्तु पास में गुरु स्वर है।

★ पुरुषहृदयादसमासे 7-1-70

सूत्रार्थ — असमास के विषय वाले पुरुष और हृदय शब्द से भाव और कर्म अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. पौरुषम्, पुरुषत्वम्, पुरुषता। हार्दम् '3-2-94' से हृद् आदेश।

प्रतिउदाहरण — असमास इति किम्? क्या समास सिवाय का ही शब्द चाहिए? हाँ

eg. परमश्चासौ पुरुषश्च परमपुरुषः तस्य भावः परमपुरुषत्वम्। परमपौरुषम् नहीं होगा।

★ श्रोत्रियाद् यलुक् च 7-1-71

सूत्रार्थ — श्रोत्रिय शब्द से भाव और कर्म अर्थ में अण् प्रत्यय और अण् प्रत्यय पर य का लोप।

eg. छन्दः अधीते = श्रोत्रियः छन्दः 'छन्दोऽधीते श्रोत्रश्च वा 7-1-173' से इय प्रत्यय
श्रोत्रियः और छन्द → श्रोत्र

तस्य भावः कर्म वा श्रोत्रिय + अण् ⇒ श्रौत्रम्, श्रोत्रियत्वम्, श्रोत्रियता, श्रौत्रियकम्
(चौरादि 7-1-73)

★ योपान्त्याद् गुरूपोत्तमादसुप्रख्यादकञ् 7-1-72

सूत्रार्थ — जिस शब्द में तीन या अधिक स्वर हों, उसके अन्त्य स्वर को उत्तम कहते हैं। उत्तम के समीप वाला स्वर = उपोत्तम। उपोत्तम स्वर गुरु है जिसका ऐसे य उपान्त्य वाले सुप्रख्य शब्द को छोड़कर शेष नाम से भाव और कर्म अर्थ में अकञ् प्रत्यय होता है।

eg. रमणीय → य उपान्त्य, उपोत्तम स्वर ई गुरु ⇒ रामणीयकम्। आचार्यकम्।

प्रतिउदाहरण (1) गुरूपोत्तमादिति किम्? उपोत्तम स्वर गुरु ही चाहिए।

eg. क्षत्रियत्वम् – इ ह्रस्व-लघु, कायत्व → तीन स्वर ही नहीं हैं।

(2) असुप्रख्यादिति किम्? सुप्रख्य शब्द छोड़कर अन्य शब्दों से अकञ् प्रत्यय।

eg. सुष्ठु प्रचष्टे = सुप्रख्य: सु + प्र + ख्या + ड: ~~आतो डोऽह्वा-मा~~ 'उपसर्गादातो डोऽश्य: 5-1-56'
⇒ सुप्रख्य: तस्य भाव: कर्म वा सुप्रख्यत्वम्, सौप्रख्यम्
↓
गुणाङ्गत्वात् ट्यण् 7-1-60

★ चौरादे: 7-1-73

सूत्रार्थ चौरादि शब्दों से भाव और कर्म अर्थ में अकञ् प्रत्यय।

eg. चौरिका, चौरकं, चौरत्वम्, चौरता, चौर्यम् (राजादि-7-1-60 ट्यण्)

→ चौरादि - चौर, युवन्, धूर्त, शरपत्र, मनोज्ञ, प्रियरूप, बहुल, मेधाविन्, ~~कल~~ कल्याण, सुकुमार, छात्र, वृद्ध, अवश्यम् आदि।

विशेष - ① चौर से शरपत्र शब्द तक स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग दोनों होंगे। (हैमलिङ्गानुशासन स्त्री - नपुंसकलिङ्ग प्रकरण श्लोक 3)

② मनोज्ञ से अवश्य शब्द तक नपुंसकलिंग ही होंगे। (हैमलिङ्गानुशासन नपुंसकलिङ्ग प्रकरण श्लोक 9)

★ द्वन्द्वाल्लित् 7-1-74

सूत्रार्थ द्वन्द्व समास से भाव और कर्म अर्थ में लित् अकञ् प्रत्यय। लित् स्त्रीलिङ्ग के लिए।

eg. वि = पक्षी। विश्च ना च विनर:, तयो: विन्नो: भाव: कर्म वा वैन्रिका, विनृत्वम्, विनृता

★ गोत्र-चरणाच्छ्लाघा-ऽत्याकार-प्राप्त्यवगमे 7-1-75

सूत्रार्थ गोत्र अर्थ और चरण अर्थ वाले नामों से भाव और कर्म अर्थ में लित् अकञ् प्रत्यय होता है, यदि श्लाघा, अत्याकार (पर का अपमान), प्राप्ति या अवगम अर्थ का विषय हो तो।

eg. 1. गर्गस्यं वृद्धापत्यं गार्ग्य: 'गर्गादि यञ् 6-1-42'। तस्य भाव: कर्म वा गार्गिका 'तद्धितयस्वरेऽनाति 2-4-92' से य लोप। तया गार्गिकया ~~श~~ श्लाघते।
लित् अकञ् होने से आप् प्रत्यय हुआ, पूर्व के अ का इ 'अस्याऽयत्-तत्-क्षिपका-दीनाम् 2-4-111' से।

2. कठ: ऋषि:। व्याकरण में ऋषि के नामों को चरण वाचक नामों में लिया है।
काठिका पूर्ववत्।

प्रतिउदाहरण श्लाघादिषु इति किम्? श्लाघादि अर्थ में ही अकञ् प्रत्यय होता है।
eg. गार्ग्यस्य: भाव: कर्म वा गार्ग्यम् 'प्राणिजाति-वयोऽर्थादिम् 7-1-66' से प्राणिजाति लक्षण में अञ् । एवं काठम्।

★ होत्राभ्य ईय: 7-1-76
सूत्रार्थ होत्रा = ऋत्विग् विशेष । होत्रा अर्थ वाले नाम से भाव और कर्म अर्थ में ईय प्रत्यय होता है।
eg. मित्रश्च वरुणश्च मित्रावरुणं 'वेद सहश्रुताऽवायुदेवतानाम् 3-2-51' से आ। ~~तस्य भाव: कर्म च मैत्रावरुण:~~ मित्रावरुणौ देवते यस्य स मैत्रावरुण: । तस्य भाव: कर्म वा मैत्रावरुणीयम् । मित्र और वरुण देव के नाम हैं। प्राक् त्वात् के अधिकार से त्व-तल् भी।

★ ब्रह्मणस्त्व: 7-1-77
सूत्रार्थ ऋत्विक् अर्थ वाले ब्रह्मन् शब्द से भाव और कर्म अर्थ में त्व प्रत्यय।
eg. ब्रह्मत्वम्। 7-1-76 से होने वाले ईय का अपवाद किया।
विशेष- ब्राह्मणवाचक या ब्रह्मा वाचक ब्रह्मन् शब्द से भाव में त्व-तल् दोनों होंगे।
→ प्राक् त्वात् का अधिकार पूर्ण हुआ।

★ शाकट-शाकिनौ क्षेत्रे 7-1-78
सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त नाम से क्षेत्र अर्थ में शाकट और शाकिन प्रत्यय।
eg. इक्षूणां क्षेत्रं = इक्षुशाकटम् (इक्षु का खेत)। एवं शाकशाकिनम् (सब्जी का खेत)।
विशेष क्षेत्र का अर्थ धान्य की ~~उत्प~~ उत्पत्ति में आधार भूमि लेना है, शरीर अर्थ ग्रहण नहीं करना।

★ धान्येभ्य ईनञ् 7-1-79
सूत्रार्थ धान्य अर्थ वाले षष्ठ्यन्त नाम से क्षेत्र अर्थ में ईनञ् प्रत्यय।
eg. मुद्गानां क्षेत्रं मौद्गीनम्, कौद्रवीणम्।

★ व्रीहि-शालेरेयण् 7-1-80
सूत्रार्थ व्रीहि और शालि शब्द से क्षेत्र अर्थ में एयण् प्रत्यय। ईनञ् का अपवाद।

eg. व्रीहिणां क्षेत्रं व्रैहेयम्, शाल्येयम्।

★ सूत्रार्थ
यव-यवक-षष्टिकाद् यः 7-1-81
षष्ठ्यन्त ऐसे यव-यवक और षष्टिक शब्द से य क्षेत्र अर्थ में य प्रत्यय।

eg. 1. यवानां क्षेत्रं यव्यम्।
2. यवानां सदृश तुल्याः यवकाः 'तस्य तुल्ये कः संज्ञा-प्रतिकृत्योः 7-1-108' से क प्रत्यय।
यवकानां क्षेत्रं यवक्यम्।
3. षष्टि-रात्रेण पच्यमानाः षष्टिकाः = जो धान्य 60 रात्री तक पकाना पड़े।
षष्टिकानां क्षेत्रं षष्टिक्यम्। → क प्रत्यय सूत्र सामर्थ्य से।

★ सूत्रार्थ
वाऽणु-माषात् 7-1-82
षष्ठ्यन्त अणु और माष शब्दों से क्षेत्र अर्थ में य प्रत्यय विकल्प से होता है; विकल्प में 'धान्येभ्य ईनञ् 7-1-79' से ईनञ् प्रत्यय।

eg. अणु = राई। तस्य क्षेत्रं अणव्यम्, आणवीनम्। एवं माष्यम्, माषीणम्।

★ सूत्रार्थ
उमा-भङ्गा-तिलात् 7-1-83
उमा-भङ्गा और तिल शब्द से क्षेत्र अर्थ में य प्रत्यय विकल्प से होता है, विकल्प में 'धान्येभ्य ईनञ् 7-1-79' से ईनञ् प्रत्यय।

eg. उमा = हत्थी या अतसी। तस्याः क्षेत्रं = उम्यम्, औमीनम्
भङ्गा = भांग। तस्याः क्षेत्रं भङ्ग्यम्, भाङ्गीनम्
तिलानां क्षेत्रं = तिल्यम्, तैलीनम्।
→ 7-1-82 से अलग सूत्र नीचे अधिकार ले जाने के लिए बनाया।

★ सूत्रार्थ
अलाबूश्च करो रजसि 7-1-84
षष्ठ्यन्त ऐसे अलाबू और च = उमा, भङ्गा, तिल शब्द से रज अर्थ में कट प्रत्यय।

eg. अलाबू = तुंबड़ा। रज = धूल, चूर्ण, आटा।
अलाबूनां रजः अलाबूकटं। एवं उमाकटम्, भङ्गाकटम्, तिलकटम्

PAGE NO.
DATE / /

★ अह्ना गम्येऽश्वादीनञ् 7-1-85

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त ऐसे अश्व शब्द से एक दिन द्वारा गम्य अर्थ में ईनञ् प्रत्यय।

eg. अश्वस्य एकेन अह्ना गम्यः आश्वीनः अध्वा।
→ यहाँ मास आदि अन्य कालवाचक शब्द नहीं लेना।

★ कुलाज्जल्पे 7-1-86

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त कुल शब्द से जल्प अर्थ में ईनञ् प्रत्यय।

eg. कुलस्य जल्पः कौलीनः (कुलवान् व्यक्ति की आवाज)

★ पील्वादेः कुणः पाके 7-1-87

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त पीलु आदि शब्दों से पाक अर्थ कुण प्रत्यय।

eg. पीलूनां पाकः पीलुकुणः, एवं शमीकुणः।
→ पीलु आदि- पीलु (वृक्ष विशेष), कर्कन्धु, शमी, बदर (बेर), अश्वत्थ (पीपल), करीर (रेगिस्तान का वृक्ष), खदिर (आदि)

★ कर्णादेर्मूले जाहः 7-1-88

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त ऐसे ~~अह्न~~ कर्णादि शब्द से मूल अर्थ में जाह प्रत्यय।

eg. कर्णयो मूलं कर्णजाहं। एवं अक्षिजाहम्।
→ कर्णादि- आस्य वक्त्र नख मुख केश दन्त ओष्ठ भ्रू शृङ्ग पाद गुल्फ पुष्प फल।

★ पक्षात्तिः 7-1-89

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त पक्ष शब्द से मूल अर्थ में जाह प्रत्यय।

eg. पक्षस्य जाह मूलं ~~पक्षजाहम्।~~ पक्षतिः

★ हिमादेलुः सहे 7-1-90

सूत्रार्थ हिम शब्द से 'सहन करने वाला' अर्थ में एलु प्रत्यय।

eg. हिमस्य सहः, हिमं सहमानः हिमेलुः।

★ वत्स-वातादूल: 7-1-91

सूत्रार्थ वत्स और वात शब्द से सह अर्थ में ऊल प्रत्यय।

eg. वत्सस्य सह: वत्सूल:। वातूल:।

★ शीतोष्णातृप्रादालुरसहे 7-1-92

सूत्रार्थ शीत, उष्ण, और तृप्र शब्द से 'सहन नहीं करने वाले' अर्थ में आलु प्रत्यय।

eg. शीतस्य असह: शीतालु:। उष्णालु:। तृप्रालु:। (तृप्र= दु:ख)

★ यथामुख-संमुखादीनस्तद् दृश्यतेऽस्मिन् 7-1-93

सूत्रार्थ प्रथमान्त ऐसे यथामुख और संमुख शब्द से 'अस्मिन् दृश्यते' अर्थ में ईन प्रत्यय।

eg. यथामुख= प्रतिबिम्ब। यथामुखं दृश्यतेऽस्मिन् = यथामुखीन आदर्श।

समं मुखं अथवा समं मुखं अस्य अनेन इति संमुख: = प्रतिबिम्ब। संमुखीन:।

★ सर्वादि: पथ्यङ्ग-कर्म-पत्र= पात्र-शरावं व्याप्नोति 7-1-94

सूत्रार्थ सर्व शब्द पूर्वक ऐसे पथिन्, अंग, कर्म, पत्र, पात्र, शराव शब्द द्वितीयान्त होतो व्याप्नोति अर्थ में ईन ~~होते~~ प्रत्यय।

eg. सर्वश्चासौ पन्थाश्च सर्वपथ: 'ऋक्-पू:-पथ्यपोऽत् 7-3-76' से अत् समासान्त

'नोऽपदस्य तद्धिते 7-4-61' से पथिन् के इन् का लोप

तं सर्वपथं व्याप्नोति सर्वपथीन: रथ: (सभी ~~रह~~ रास्तों पर घूमने वाला रथ)

सर्वपथीनं उदकं (सभी रास्तों पर भरा पानी)

सर्वाङ्गीण: ताप:। सर्वकर्मीणो ना। सर्वपत्रीणो यन्ता (सभी वाहन चलाने वाला सारथि)

सर्वपात्रीणं भक्तम्। सर्वशरावीणमोदनम्।

★ आप्रपदम् 7-1-95

~~सूत्रार्थ पदं अन्वायता इति आप्रपदम् 'दैर्घ्येऽनु: 3-1-34' से समास (पैर तक लंबे)~~

सूत्रार्थ आ पादाग्राद् इति आप्रपदम् (पैर के आगे भाग तक लंबा)

'पर्यपा-ऽऽऽऽ-बहिरच् पञ्चम्या' 3-1-32 से अव्ययीभाव समास।

आप्रपद शब्द से व्याप्नोति अर्थ में ईन प्रत्यय। आप्रपदीन: पट:।

* अनुपदं बद्धा 7-1-96

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे अनुपदं शब्द से बद्ध अर्थ में ईन प्रत्यय। eg.

eg. (अम् अन्त वाले) पदं अनु आयत्ता 'दैर्घ्येऽनुः 3-1-34' से अव्ययीभाव समास।

अनुपदं (पैर तक लंबा)

अनुपदं बद्धा इति अनुपदीना उपानत् (पैर तक लंबे मोजे)

* अयानयं नेयः 7-1-97

सूत्रार्थ द्वितीयान्त अयानय शब्द से नेय अर्थ में ईन प्रत्यय।

eg. 1. अय= सीधे हाथ की तरफ गमन ~~इसका~~ अनय= उल्टे हाथी की ओर गमन

अयानयं नेयः अयानयीनः शारः (पासा; द्यूत में कुछ पासे सीधे, कुछ उल्टे हाथ की तरफ जाते हैं)

अय = शुभ भाग्य & अनय = अशुभ भाग्य

2. जिस क्रिया में शुभ भाग्य से अशुभ का परिवर्तन हो अथवा दूर हो, ऐसा जो शांतिकर्म, चतुः शरण प्रतिपत्ति, अमारि घोषणा, देवगुरु पूजा, तप, दान, ब्रह्मचर्य आदि अयानय कहे जाते हैं। वे नियम जिसके द्वारा किए जाने चाहिए नेय= कारयितव्य, वह अयानयीनः ईश्वरः।

* सर्वान्निमत्ति 7-1-98

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे सर्वान्न शब्द से अत्ति अर्थ में ईन प्रत्यय।

सर्व शब्द के दो अर्थ- प्रकार और कार्त्स्न्य (संपूर्ण)

eg. सर्वप्रकारं अन्नं सर्वान्नम् तदत्ति इति सर्वान्नीनः भिक्षुः (सभी प्रकार के अन्न खाने वाला भिक्षु)

~~सर्वं अन्नं सक सर्वं समस्तपादः~~ अन्नं च सर्वान्नं तदत्ति सर्वान्नीनः भिक्षुः (सभी अन्न, पूर्ण अन्न खाने वाला)

* परोवरीण-परम्परीण-पुत्रपौत्रीणम् 7-1-99

सूत्रार्थ 'अनुभव करता है' अर्थ में ये शब्द ईन अन्त वाले निपातन होते हैं।

eg. 1. परांश्च अवरांश्च अनुभवति परोवरीणः। अवर के अ → उ निपातन।

2. परांश्च परतरांश्च अनुभवति परम्परीणः। परंपर आदेश निपातन।

3. पुत्रांश्च पौत्रांश्च अनुभवति पुत्रपौत्रीणः। ईन प्रत्यय निपातन।

★ यथाकामा-ऽनुकामा-त्यन्तं गामिनि 7-1-100

सूत्रार्थ अम् अन्त वाले इन नामों से गामी=जाने वाला अर्थ में ईन प्रत्यय।

eg. कामस्यानुरूपं यथाकामं। यथाकामं गामी यथाकामीन: ~~गामी~~।

एवं ~~अनुगा~~ अनुकामीन:। अत्यन्तं गामी अत्यन्तीन:।

★ पारावारं व्यस्त-व्यत्यस्तं च 7-1-101

सूत्रार्थ अम् अन्त वाले ~~इन~~ पार अवार शब्द समस्त, व्यस्त, व्यत्यस्त योग में गामी अर्थ में ईन प्रत्यय।

eg. 1. समस्त= पारावार। अवारस्य ~~पर~~ पारं = पारावार: 'राजदन्तादिषु 3-1-159' से पूर्वनिपात समास।
पारावारं गामी = पारावारीण: (समुद्र तट जाने वाला)

2. व्यस्त= पार, अवार। पारं गामी पारीण:, अवारं गामी अवारीण:।

3. व्यत्यस्त= अवारपार। अवारपारं गामी अवारपारीण:।

★ अनुग्वलम् 7-1-102

सूत्रार्थ अम् अन्त वाले अनुगु शब्द से अलम् गामी अर्थ में ईन प्रत्यय।
अलम्= पर्याप्त भृश

eg. गवां पश्चात् अनुगु 3-1-39 से समास, 'क्लीबे 2-4-97' से ह्रस्व
'अनुगु अलं गामी अनुगवीनो गोप: 'अस्वयम्भुवोऽव् 7-4-70' से उ→अव्।

★ अध्वानं येनौ 7-1-103

सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे अध्वन् शब्द से अलं गामी अर्थ में य और ईन प्रत्यय।

eg. अध्वानं अलं गामी अध्वन्य: 'अनोऽह्ये ये 7-4-51'
अध्वनीन: 'ईनेऽध्वाऽऽत्मनो: 7-4-48' से अन्त्यस्वरादि का लोप न हुआ।

★ अभ्यमित्रमीयश्च 7-1-104

सूत्रार्थ अम् अन्त वाले अभ्यमित्र शब्द से अलं गामी अर्थ में ईय, य, ईन प्रत्यय।

eg. अमित्रस्य अभि= अभ्यमित्रं। अभ्यमित्रं अलं गामी अभ्यमित्रीय:, अभ्यमित्र्य:, अभ्यमित्रीण:
दुश्मन तरफ सामने अत्यंत जाने वाला।

PAGE NO.
DATE / /

★ समांसमीना-ऽद्यश्वीना-ऽद्यप्रातीना-ऽऽगवीन-साप्तपदीनम् 7-1-105

सूत्रार्थ इन अन्त वाले ये निपात हैं, साप्तपदीन ईनन् प्रत्ययान्त है।

1. समा= वर्ष। समां समां धारयति गर्भं इति समांसमीना गौः (हरसाल गर्भ धारण करनेवाली)
'कालाध्वनोर्व्याप्तौ 2-2-52' से द्वितीया। वीप्सा में द्वित्व। नेमनाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम् 3-1-18' से समास।

2. अद्य श्वो वा विजनिष्यमाणा अद्यश्वीना गौः (आज या कल में प्रसव करने वाली)

3. अद्य प्रातर्वा भविष्यति अद्यप्रातीनः लाभः (आज या सुबह होने वाला)

4. आगो प्रतिदानं कारी आगवीनः कर्मकृत् (गाय प्राप्त न हो तब तक कर्म करने वाला नौकर)
'अपर्यपा-ऽऽ-बहिरञ्चः पञ्चम्या 3-1-32' से समास। प्रतिदान का लोप निपात।

5. सप्तभिः पदैः अवाप्यं साप्तपदीनं सख्यम् (सात कदम जाकर प्राप्त करने वाले)
ईनञ् प्रत्यय निपात।

★ अषडक्षा-ऽऽशितंग्वलङ्कर्मा-ऽलंपुरुषादीनः 7-1-106

सूत्रार्थ इन शब्दों से स्वार्थ में ईन प्रत्यय।

eg. 1. अविद्यमानानि षडक्षीणि अस्मिन् 'अषडक्षीण 'सक्थ्यक्ष्णः स्वाङ्गे 7-3-126' से ट समासान्त फिर ईन प्रत्यय। (छ आँखें जिसमें न हो अर्थात् कोई गुप्त वस्तु)
अषडक्षीणः मन्त्रः कन्दुको वा।
'अविद्यमानानि षडक्षीणि अस्य अषडक्षीण (अक्षि=इंद्रिय) (5 इंद्रिय + मन जिसमें न हो अर्थात् उपयोग बिना की या विचार बिना की प्रवृत्ति।)

2. आशिताः गावः यस्मिन् आशितंगु, निपातन से म् आगम।
आशितंगवीनं वनम् (जहाँ गाय पेट भरकर चरे)

3. अलं कर्मणे = अलङ्कर्मीणः } '3-1-47' से समास

4. अलं पुरुषाय= अलंपुरुषीणः } (हर कार्य के लिए समर्थ)

★ अदिक्स्त्रियां वाऽञ्चः 7-1-107

सूत्रार्थ अञ्च् अन्त वाले नामों से स्वार्थ में ईन प्रत्यय विकल्प से होता है, यदि वह स्त्रीलिंग दिशावाचक न हो तो।

eg. प्राक् एव = प्राचीनं, प्राक्। प्राक् शब्द से 7-2-113 से था प्रत्यय, 7-2-123 से लोप।

प्राची एव = प्राचीना शाखा, प्राची
सम्यक् एव = समीचीन 'सह-सम: सध्रि-समि 3-2-123' से समि आदेश।

प्रतिउदाहरण. अदिक् स्त्रियां इति किम्? दिशावाचक स्त्रीलिंग शब्दों में नहीं होगा।
eg. प्राची दिक्

★ तस्य तुल्ये क: संज्ञा-प्रतिकृत्यो: 7-1-108
सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त नाम से तुल्य अर्थ में क प्रत्यय होता है, संज्ञा और प्रतिकृति के विषय में
eg. अश्वस्य तुल्य: अश्वक:। प्रतिकृति = काष्ठादिमय प्रतिच्छन्दक (पुतला)
अश्वस्य प्रतिमा अश्विका प्रतिमा।
अश्वस्य रूपं अव अश्वकं रूपम्।

न नृ-पूजार्थ-ध्वज-चित्रे 7-1-109
सूत्रार्थ मनुष्य-पूजा की विषयक, ध्वज और चित्रकर्म अर्थ में क प्रत्यय नहीं होता।
eg. इन अर्थों 'वह यही है सोऽयम्' अर्थ होता है।
eg. 1. चञ्चा = घास का मनुष्य जो खेत में रखा जाता है।
(i) चञ्चातुल्य: पुरुष: चञ्चा। एवं वाध्रिका, खरकुटी
2. अर्हत: प्रतिमा अर्हन् (यही अरिहंत हैं।) एवं शिव: [पूजार्थ]
3. [ध्वज] - सिंह:, ताल:, गरुड: ध्वज:
4. [चित्र] - दुर्योधन: भीम:।

★ अपण्ये जीवने 7-1-110
सूत्रार्थ जीव्यते येन इति जीवनम्। जिसके द्वारा जीया जाए, उसे 'बेचने लायक न हो तो' क प्रत्यय नहीं होता।
eg. 1. शिवस्य तुल्य: शिव:। कोई शिव का भक्त है, वह शिव की कृपा से ही जीता है। और शिव की प्रतिमा जो उसके घर में है, वह बेचने लायक भी नहीं है क्योंकि वह भगवान है। इसलिए शिवस्य तुल्या शिवा प्रतिमा; क प्रत्यय न होगा।

प्रतिउदाहरण अपण्य इति किम्? क्या बेचने लायक वस्तु नहीं होना चाहिए। हाँ,
eg. हस्तिन: तुल्य: हस्तिक:। तान् हस्तिकान् विक्रीणीते। कोई व्यक्ति हाथी के पुतले बनाकर

बनाकर बेचता है इसलिए वह जीवन है और बेचने लायक है। इसलिए क प्रत्यय लगा।

देव-पथादिभ्यो 7-1-111

★ सूत्रार्थ देवपथ आदि शब्दों से संज्ञा-प्रतिकृति अर्थ में क नहीं होता।

eg. देवानां पन्थाः देवपथः 7-3-76 से अत् समासान्त।

देवपथस्य तुल्यः देवपथः

→ देवपथादि- देवपथ, हंसपथ, राजपथ, हंस, इन्द्र, दण्ड, पथ्य, मत्स्य आदि।

बस्तेरेयञ् 7-1-112

★ सूत्रार्थ वस्ति शब्द से तस्य तुल्य अर्थ में एयञ् प्रत्यय होता है।

eg. वस्ति= वादी। वास्तेयी प्रणालिका= इसकी प्रणालिका वादी जैसी है।

शिलाया एयच्च 7-1-113

★ सूत्रार्थ शिला शब्द से तस्य तुल्य अर्थ में एयच् प्रत्यय। च= एयञ् प्रत्यय।

eg. शिलेयं दधि= शिला जैसा घन दही।

शैलेय दधि। शिलेयी इष्टका, शैलेयी इष्टका।

शाखादेर्यः 7-1-114

★ सूत्रार्थ शाखा आदि शब्दों से तुल्य अर्थ में य प्रत्यय।

eg. शाखायाः तुल्यः शाख्यः। मुखस्य तुल्यः मुख्यः (सभी अंगों में जैसे मुख प्रधान है, वैसा ही जो प्रधान हो वह मुख्य)

→ शाखादि- जघन (जघन्य), स्कन्ध, मेघ, शृङ्ग, चरण, शरण, उरस्, शिरस्, अग्र आदि

द्रो भव्ये 7-1-115

★ सूत्रार्थ द्रु शब्द से भव्य अर्थ में य प्रत्यय।

भव्य = विशिष्टपरिणामेन भवति, विशिष्ट ऐसे इष्ट परिणाम से जो हो।

eg. ① द्रु = लकड़ी। द्रोः तुल्यं = द्रव्यं (जैसे गांठ और वक्रता बिना की लकड़ी का संस्कार करे तब द्रव्य अयं ना)

वह विशिष्ट इष्ट रूप वाली होती है वैसे ही शिष्य या पुत्र अच्छी तरह पढ़ता हुआ विद्या-लक्ष्मी-कीर्ति-महिमा का भाजन होता है. वह शिष्य या पुत्र द्रव्य कहा जाता है)

(2) द्रव्यं स्वर्णादि- सोना वगैरह भी इसी प्रकार इष्ट रूप में परिणत होते हैं।

(3) द्रु = वृक्ष / द्रव्यं राजपुत्रः = जैसे वृक्ष पुष्प-फल आदि से अर्थी को कृतार्थ करता है वैसे जो दूसरों को कृतार्थ करता है वह।

प्रतिउदाहरण भव्य इति किम् ? द्रव्य शब्द भव्य अर्थ में ही होता है।

eg. द्रुतुल्योऽयं न चेतयते = वृक्ष जैसे यह चेतना वाला नहीं है। यहाँ भव्य अर्थ न होने से द्रव्य नहीं हुआ।

★ कुशाग्रादीयः 7-1-116

सूत्रार्थ कुशाग्र शब्द से तुल्य अर्थ में ईय प्रत्यय।

eg. कुश = घास अग्र = अग्रभाग।

कुशाग्रस्य तुल्या = कुशाग्रीया बुद्धिः = जैसे घास का अग्र भाग तीक्ष्ण होता है वैसी तीक्ष्ण, सूक्ष्म बुद्धि।

कुशाग्रीयं शस्त्रम्।

★ काकतालीयादयः 7-1-117

सूत्रार्थ ईय प्रत्ययान्त ये शब्द तस्य तुल्य अर्थ में निपातन होते हैं।

eg.(1) काकतालीयम् = काकश्च तालश्च काकतालम् तस्यतुल्यं काकतालीयम्।

जैसे कोई कौआ अन्न ताड़ वृक्ष पर बैठे और वह अचानक गिर जाए, कौआ की ताकत नहीं की ताड़ वृक्ष को गिरा दे किन्तु अचानक गिर जाए। उसके तुल्य ... ।

(2) घुणाक्षरीयम् => घुण = लकड़ी का कीड़ा घुणस्य अक्षराणि घुणाक्षराणि तेषां तुल्यं घुणाक्षरीय। लकड़ी का कीड़ा लकड़ी को खा-खाकर उसमें आड़ी-तिरछी लाइने बनाता है, वह लाइन बहुत सुंदर लगती है, किन्तु घुण को पता नहीं था कि वह ऐसे अक्षर बना रहा है, इसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति को कोई तत्त्व समझ में आ जाए तो उसे 'घुणाक्षरीय' कहा जाता है।

(3) खलतिबिल्वीयम् = खलति => गंजा सिर, टाल बिल्व = एक फल। टाल पर फल का गिरना।

→ ~~आश्चर्यकारी~~ आश्चर्यकारी विषयवाले प्रसंग ऐसे शब्दों से वाच्य बनते हैं।

PAGE NO.
DATE / /

★ शर्करादेरण् 7-1-118

सूत्रार्थ शर्करादि शब्दों से तुल्य अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. शर्करायाः तुल्यं शार्करं दधि मधुरत्वात्। शार्करी मृत्तिका कठिनत्वात्।

→ गोपुच्छ गोलोमन् पुण्डरीक शतपत्र नकुल सिकता आदि।

★ अः सपत्न्याः 7-1-119

सूत्रार्थ सपत्नी शब्द से तुल्य अर्थ में अ प्रत्यय।

eg. सपत्न्याः तुल्यः सपत्नः (सौत जैसा) समानः पतिः यस्याः सा सपत्नी।

★ एकशालाया इकः 7-1-120

सूत्रार्थ एकशाला शब्द से तुल्य अर्थ में इक प्रत्यय।

eg. एकशालाया तुल्यं एकशालिकम्। एक = श्रेष्ठ।

★ गोण्यादेश्चेकण् 7-1-121

सूत्रार्थ गोणी आदि शब्दों से और एकशाला शब्द से तुल्य अर्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. गोण्याः तुल्यं गौणिकम्। (गोणी = फटे, पुराने कपड़े या द्रोण के बराबर माप)
एकशालिकम्।

→ गोण्यादि - अङ्गुली, बभ्रु (भूरा रंग, या गंजे सिर वाला), वल्गु (सुंदर), शष्कुली (रोटी, चावल का मांड, कान का छिद्र), कुलिश (वज्र), हरि, कपि, उदश्वित् (छाछ), मुनि, खल, रुरु (हिरण), तरस्।

★ कर्कलोहितादीकण् च 7-1-122

सूत्रार्थ कर्क = सफेद घोड़ा। लोहित = लाल रंग या लाल रंग वाली वस्तु। इन दो शब्दों से तुल्य अर्थ में टीकण् और इकण् का प्रत्यय।

टीकण् में ई दीर्घ, टित् से ङी। इकण् में इ ह्रस्व, स्त्री में आप्।

eg. कार्कीकः कार्किकः। लौहितीकः, लौहितिकः।

स्फटिक आदि जो अलोहित वर्णवाले हैं, वे जब आश्रय के वश से लाल लगते हैं तब वे लोहित कहे जाते हैं।

वे विस्तृते शाल-शङ्कटौ 7-1-123

★ सूत्रार्थ — विस्तृत अर्थ में वि उपसर्ग से शाल और शङ्कट प्रत्यय।

eg. वे विशाल:, विशङ्कट:।

कट: 7-1-124

★ सूत्रार्थ — विस्तृत अर्थ में वि उपसर्ग से कट प्रत्यय।

eg. विकट:।

→ पृथक् उपादान अधिकार के लिए।

संप्रोन्नेः संकीर्ण-प्रकाशा-ऽधिके-समीपे 7-1-125

★ सूत्रार्थ — सम्, प्र, उत्, नि से अनुक्रमशः संकीर्ण, प्रकाश, अधिक, समीप अर्थ में कट प्रत्यय।

eg. सङ्कट, प्रकट:, उत्कट:, निकट:

अवात् कुटारश्चावनते 7-1-126

★ सूत्रार्थ — अव उपसर्ग से अवनत (नीचे झुका हुआ) अर्थ में कुटार और कट प्रत्यय।

eg. अवकुटार: अवकट:)

नासानति-तद्वतोष्टीट-नाट-भ्रटम् 7-1-127

★ सूत्रार्थ — नाक झुकाना (नासानति), झुकी हुई नाक या झुकी हुई नाक वाला पुरुष, इन तीन अर्थों में अव अव्यय से टीट, नाट, भ्रट प्रत्यय।

eg. अवटीटम् अवनाटम् अवभ्रटम्। नाक झुकाने की क्रिया, तद्वतो: = द्विवचन से झुकी हुई या चपटी नाक और चपटी नाक वाला पुरुष।

→ लोक में तुच्छ वस्तु देखकर लोग नाक झुकाते हैं।

नेरिन-पिट-काशिक-चि-चिक श्चास्य 7-1-128

★ सूत्रार्थ — नासानति, नतनासा, तद्वान् पुरुष अर्थ में नि अव्यय से ~~चिक-चि-चिक~~ इन, पिट, क प्रत्यय होते हैं और नि का चिक, चि और चिक आदेश होता है। अनुक्रमसे

eg. नि + इन ⇒ चिक् + इन = चिकिनं, चिपिटम्, चिक्कं।

★ बिड-बिरीसौ नीरन्ध्रे च 7-1-129

सूत्रार्थ नीरन्ध्र अर्थ में और नासादि अर्थ में नि अव्यय से बिड-बिरीस प्रत्यय।

eg. निबिडाः निबिरीसाः केशाः (घन बाल)

निबिडं निबिरीसं नासानति, नासा, तद्वान् पुरुषः।

★ क्लिन्नाल्लश्चक्षुषि चिल्-पिल्-चुल् चास्य 7-1-130

सूत्रार्थ गीली आँख के अर्थ में क्लिन्न शब्द से ल प्रत्यय और क्लिन्न का चिल् पिल् चुल् आदेश।

eg. चिल्लम्, पिल्लं, चुल्लं चक्षुः। चिल्लः पिल्लः चुल्लः पुरुषः गीली आँख वाला पुरुष।

★ उपत्यका-ऽधित्यके 7-1-131

सूत्रार्थ उपत्यका = पर्वत की तलेटी, अधित्य की भूमि।

अधित्यका = पर्वत के शिखर की भूमि।

ये शब्द इन अर्थों में निपातन होते हैं। दोनों शब्द स्वभाव से स्त्रीलिंग में वर्तते हैं। अजादेः 2-4-16 से आप् प्रत्यय।

★ अवेः संघात-विस्तारे कट-पटम् 7-1-132

सूत्रार्थ अवि = भेड़। अवि शब्द से संघात और विस्तार अर्थ में कट-पट प्रत्यय क्रमशः होते हैं।

eg. अवीनां संघातः अविकटः, अवीनां विस्तारः अविपटः।

(भेड़ का समूह) (कोई जंगल में भेड़ अलग-अलग फैल कर हो)

→ समूह अर्थ (6-2-6) और विस्तार अर्थ (6-3-160, 6-3-32) के प्रत्ययों का अपवाद

★ पशुभ्यः स्थाने गोष्ठः 7-1-133

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त पशुवाचक शब्दों से स्थान अर्थ में गोष्ठ प्रत्यय।

eg. गवां स्थानं गोगोष्ठम्, अश्वगोष्ठम्, महिषीगोष्ठम्

द्वित्वे गोयुगः 7-1-134

सूत्रार्थ पशुवाचक शब्दों से उनके द्वित्व अर्थ में गोयुग प्रत्यय।

eg. गवोः द्वित्वं गोगोयुगम्, अश्वगोयुगम्, उष्ट्रगोयुगम्।

षट्त्वे षड्गवः 7-1-135

सूत्रार्थ पशुवाचक शब्दों से षट्क अर्थ में षड्गव प्रत्यय।

eg. उष्ट्रानां षट्त्वं उष्ट्रषड्गवम्, हस्तिषड्गवम्, अश्वषड्गवम्।

→ सूत्र 7-1-133, 7-1-134, 7-1-135 तस्येदम् अर्थ में होने वाले प्रत्ययों के अपवाद।

तिलादिभ्यः स्नेहे तैलः 7-1-136

सूत्रार्थ तिलादि शब्दों से स्नेह अर्थ में तैल प्रत्यय।

eg. तिलानां स्नेहः तिलतैलम्, सर्षपतैलम्, एरण्डतैलम्।

→ विकार अर्थ वाले प्रत्ययों का अपवाद।

तत्र घटते कर्मणष्ठः 7-1-137

सूत्रार्थ सप्तम्यन्त कर्मन् शब्द से 'घटते' अर्थ में ठ प्रत्यय।

eg. कर्मणि घटते कर्मठः (कार्य में दक्ष)

तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतः 7-1-138

सूत्रार्थ तारका आदि प्रथमान्त शब्द से षष्ठी के अर्थ में इत प्रत्यय, यदि प्रथमान्त नाम संजात अर्थ वाला हो तो (संजात = प्रगट)।

eg. तारकाः सञ्जाताः यस्य तद् तारकितः नभः।

पुष्पाणि सञ्जातानि यस्य स पुष्पितः तरुः।

पण्डा सञ्जाता यस्य स पण्डितः। पण्डा = तात्त्विक बुद्धि

→ तारका पुष्प विचार कुसुम पुष्प पण्डा पल्लव मुकुल (कली), निद्रा, तन्द्रा, श्रद्धा, बुभुक्षा, पिपासा क्षुध् तृष् रोग सुख दुःख तरङ्ग व्रण कण्डूक कण्टक रोमाञ्च हर्ष गर्व कुतूहल कुवलय कज्जल कलङ्क राग ज्वर फल आदि। आकृतिगण।

* गर्भादप्राणिनि 7-1-139

सूत्रार्थ — गर्भ शब्द से तद् अस्य संजात अर्थ में इत प्रत्यय, यदि प्राणी विषयक नहीं हो (तो)

eg. गर्भः संजातः यस्य स गर्भितः व्रीहिः।

प्रतिउदाहरण — अप्राणिनीति किम्? प्राणी सिवाय में ही प्रत्यय होगा।

eg. गर्भः संजातः यस्याः दास्याः। यहाँ प्रत्यय नहीं होगा क्योंकि दासी प्राणीवाचक है।
(गर्भिता दासी ✗)

* प्रमाणान्मात्रट् 7-1-140

सूत्रार्थ — प्रथमान्त प्रमाणवाचक नाम से षष्ठी अर्थ में मात्रट् प्रत्यय होता है।
प्रमाण = आयाम (माप)। प्रमाण 2 प्रकार से – 1. ऊर्ध्वप्रमाण 2. तिर्यक्प्रमाणं।

eg. 1. ऊर्ध्वप्रमाण – जानु प्रमाणं यस्य तद् जानुमात्रं जलम्
ऊरु प्रमाणं यस्याः सा ऊरुमात्री खाता।

2. तिर्यक्प्रमाण – तद् प्रमाणं यस्याः सा तन्मात्री भूः
रज्जुमात्री भूः। तावन्मात्री भूः।

→ टित् – ङी के लिए।

* हस्ति-पुरुषाद् वाऽण् 7-1-141

सूत्रार्थ — प्रथमान्त हस्ति-पुरुष शब्द से प्रमाण अर्थ में अण् प्रत्यय विकल्प से होता है।

eg. हस्ती प्रमाणं यस्य तद् हास्तिनं उदकम्। हस्तिमात्रम् (7-1-145), हस्तिदघ्नं, हस्तिद्वयसं (7-1-142)।
पुरुषः प्रमाणं यस्याः सा ~~पुरुष~~ पौरुषी पुरुषमात्री छाया।

* वोर्ध्वं दघ्नट् द्वयसट् 7-1-142

सूत्रार्थ — ऊर्ध्व प्रमाण के अर्थ में प्रथमान्त ऐसे नाम से षष्ठी अर्थ में दघ्नट्, द्वयसट् प्रत्यय विकल्प से होते हैं। विकल्प में 7-1-140 से मात्रट् प्रत्यय।

eg. ऊरुः प्रमाणं यस्य तद् ऊरुदघ्नम्, ऊरुद्वयसम्, ऊरुमात्रं जलम् (7-1-140 से मात्रट्)

प्रतिउदाहरण — ऊर्ध्व इति किम्? ऊर्ध्व प्रमाण में ही ये प्रत्यय होते हैं।

eg. रज्जु प्रमाणं यस्याः सा रज्जुमात्री भूः।

1 हस्त = 1 शम = 2 वितस्ति = 24 अंगुल्य
दृष्टि = मुट्ठी बंधी हुई बाया हाथ

PAGE NO. 35
DATE / /

★ मानादसंशये लुप् 7-1-143

सूत्रार्थ साक्षात् मान अर्थ में वर्तते प्रमाणवाचक शब्दों से (जैसे - हाथ, वेंत आदि) प्रस्तुत मात्रट् वगैरह प्रत्यय असंशय गम्यमान होने पर लुप् होता है।

eg. किन्तु रज्जु आदि (~~काल्पनी~~ काल्पनिक) प्रमाणवाचक शब्दों से नहीं।

eg. हस्तः प्रमाणं यस्य स हस्तः (एक हाथ प्रमाण)

eg. वितस्तिः प्रमाणं यस्य स वितस्तिः (एक वेंत प्रमाण)

प्रतिउदाहरण ① मानादिति किम्? मानवाचक शब्द ही चाहिए।

eg. ऊरुः प्रमाणं यस्य तद् ऊरुमात्रं जत्यम्। ऊरु प्रमाणवाचक नाम नहीं है।

② असंशय इति किम्? असंशय गम्यमान हो तो ही प्रत्यय का लोप होगा।

eg. शमः प्रमाणं यस्य तद् शममात्रं स्यात्। स्याद् शब्द से संशय गम्यमान है।

★ द्विगोः संशये च 7-1-144

सूत्रार्थ मान अन्त वाले द्विगु समास से संशय और असंशय में प्रस्तुत मात्रट् आदि प्रत्ययों का लोप।

eg. द्वे वितस्ती प्रमाणं यस्य स द्विवितस्तिः। (असंशय अर्थ)
द्वौ प्रस्थौ प्रमाणं यस्य स द्विप्रस्थः स्यात्। (संशय अर्थ)

★ मात्रट् 7-1-145

सूत्रार्थ प्रथमान्त मानवाचक शब्दों से षष्ठी के अर्थ में संशय गम्यमान होने पर मात्रट् प्रत्यय।

eg. प्रस्थः प्रमाणं यस्य तद् प्रस्थमात्रं धान्यम्। पलमात्रं धान्यम्।

★ शत्-शद्-विंशतेः 7-1-146

सूत्रार्थ मान में वर्तते प्रथमान्त ऐसे शत् अन्त वाले, शद् अन्त वाले संख्यावाचक नाम और विंशति शब्द से षष्ठी अर्थ में मात्रट् प्रत्यय संशय गम्यमान होने पर होता है।

eg. ✱ दश प्रमाणं येषां ते दशमात्राः स्युः। त्रिंशन्मात्राः। विंशतिमात्राः।

डिन् 7-1-147

★ सूत्रार्थ — मानवाचक प्रथमान्त ऐसे शन्-शद्- विंशति अन्तवाले शब्दों से षष्ठी अर्थ में डिन् प्रत्यय।

eg. पञ्चदश प्रमाणं यस्य स पञ्चदशन् + डिन् = पञ्चदशिन् प्रथमा एकव.
= पञ्चदशी अर्धमासः (एक पक्ष)

त्रिंशी मासः। विंशिनो भवनेन्द्राः 'विंशतेस्तेडिति 7-4-67' (20 भवनपति के इंद्र)।

त्रयस्त्रिंशिनः देवविशेषाः।

→ नया सूत्र बनाने से संशय अर्थ की निवृत्ति।

इदं-किमोऽतुरिय्- किय् चास्य 7-1-148

★ सूत्रार्थ — मान अर्थ वाचक इदं और किं से षष्ठी अर्थ में मेय अर्थ गम्यमान (माप सके वैसा) हो तो अतु प्रत्यय और इदं - किं का क्रमशः इय् किय् आदेश होता है।

eg. इदं मानं यस्य सः इदं + अतु ⇒ इय् + अत् ⇒ इयत् ⇒ इयान् पटः।
किं मानं यस्य स किं + अतु ⇒ किय् + अत् = कियत् ⇒ कियान् पटः

विशेष → मान 4 प्रकार - 1. प्रमाण - eg. कियान् , इयान् पटः
2. परिमान - eg. इयद् कियद् धान्यम्
3. उन्मान eg. इयत् कियत् सुवर्णम्
4. संख्या - eg. इयन्तः कियन्तः गुणिनः।

→ उ इत् 'ऋदुदितः 1-4-70' से न् आगम और 'अभ्वादेरत्वसः सौ 1-4-90' से स्वर दीर्घ तथा 'अधातूदृदितः 2-4-2' से ङी के लिए।

यत्-तदेतदो डावादिः 7-1-149

★ सूत्रार्थ — मानवाचक प्रथमान्त ऐसे यत् तद् और एतद् से षष्ठी अर्थ में मेय अर्थ में अतु प्रत्यय डाव् आदि वाला अर्थात् डावत् प्रत्यय।

eg. यत् तद् एतद् वा मानं यस्य स यावान् तावान् एतावान् धान्यराशिः।

विशेष — यत् ऊर्ध्वं मानं यस्य तद् यद्दघ्नम् यद्द्वयसम्।
यत् मानं यस्य तद् यन्मात्रम्।

→ यद् वगैरह शब्द विशेष मान अर्थ बताते हो तब ऊपर के सूत्रों से मात्रट् आदि प्रत्यय होते

है। (विशेष = ऊर्ध्वमान, तिर्यक् मान) । जब सामान्य मानवाचक हो तब डावतु प्रत्यय करना।

★ यत्-तत्-किमः सङ्ख्याया डतिर्वा 7-1-150

सूत्रार्थ प्रथमान्त संख्या स्वरूप ऐसे मानवाचक ऐसे यत् तत् और किम् सर्वनाम से षष्ठी अर्थ में संख्येय मेय हो तो डति प्रत्यय विकल्प से होता है। विकल्प में डावतु प्रत्यय।

eg. या संख्या मानं येषां ते यद् + डति = यति, यावन्तः। तति, तावन्तः। कति कियन्तः।

विशेष → डति अन्त वाले अलिंग हैं, तीनों लिंग में एक ही रूप होंगे।
→ डति-डावतु प्रत्यय बहुवचन में ही होते हैं।
→ प्रथमा-द्वितीया वि. के जस्-शस् का लोप होता है।
यति 'डत्यतु संख्यावत् 1-1-39'
यति + जस्। शस् 'डतिष्णः संख्याया लुप् 1-4-54'
यति।

★ अवयवात् तयट् 7-1-151

सूत्रार्थ अवयव अर्थ में वर्तते संख्यावाचक प्रथमान्त नाम से अवयवी रूप षष्ठी के अर्थ में तयट् प्रत्यय। अवयव = प्रकार, भाग।

eg. पञ्च अवयवा यस्य स पञ्चतयः यमः ~~प्रक~~ 5 प्रकार के नियम।
सप्ततयी नयप्रवृत्तिः। दशतयः धर्मः। द्वादशतयः सिद्धान्तः। चतुष्टयी रज्जुः।

★ द्वि-त्रिभ्यामयट् वा 7-1-152

सूत्रार्थ अवयव अर्थ में वर्तते संख्यावाचक प्रथमान्त द्वि त्रि शब्द से अवयवी रूप षष्ठी अर्थ में अयट् प्रत्यय।

eg. द्वौ प्रकारौ यस्य तत् द्वयम्, द्वितयम् तपः (द्वि + अयट् '7-4-68' ⇒ द्वयम्)
त्रयं त्रितयं जगत्, त्रयः त्रितयः मोक्षमार्गः। द्वयी द्वितयी त्रयी त्रितयी रज्जुः।
→ टित् ङी 2-4-20 से।

PAGE NO.
DATE / /

★ द्व्यादेर्गुणान्मूल्य-क्रेये मयट् 7-1-153

सूत्रार्थ गुणों में वर्तमान प्रथमान्त द्वि आदि शब्दों से षष्ठी के अर्थ में मयट् प्रत्यय होता है, यदि ये द्वि आदि शब्द मूल्य अर्थ वाले या क्रेय अर्थ वाले होतो। (गुण= गुना)

eg. द्वौ गुणौ मूल्यं यस्य तद् द्विमयमुदश्वित् यवानाम् = ~~यवों से का मूल्य इस बेचने वाली छाछ से दोगुना है~~। इस छाछ का मूल्य जौ का दो गुना है।

द्वौ गुणौ क्रेयौ येषां यवानां द्विमया: यवा: उदश्वित:। = छाछ से दो गुना खरीदे हैं जो यव वे...।

प्रतिउदाहरण गुणादिति किम्? गुण वृत्ति वाला शब्द ही चाहिए।

eg. द्वौ व्रीहि-यवौ मूल्यमस्य = ~~द्वौ~~ व्रीहि और यव दोनों मूल्य हैं जिसका। यहाँ गुण वृत्ति नहीं है।

★ अधिकं तत्सङ्ख्यमस्मिन् शत-सहस्रे शति-शद्-दशान्ताया ड: 7-1-154

सूत्रार्थ प्रथमान्त शति-शद्-दश अन्त वाले नाम से सप्तमी के अर्थ में शत अर्थ में अथवा सहस्र अर्थ में ड प्रत्यय, यदि प्रथमान्त नाम शतादि से विशिष्ट संख्या अर्थ वाली वस्तु हो तो।

eg. विंशति: योजनानि अधिकानि अस्मिन् योजनशते = विंशं योजनशतं।
एवं विंशं योजनसहस्रम्। त्रिंशं योजनशतं योजनसहस्रं वा। एकादशं योजनशतं योजनसहस्रं वा।

प्रतिउदाहरण तत्सङ्ख्यमिति किम्? वही संख्या अधिक होना चाहिए।

eg. विंशतिर्दण्डा अधिका अस्मिन् योजनशते। इस सौ योजन में 20 दंड अधिक है। यहाँ दंड और योजन दोनों अलग-अलग माप है।

★ सङ्ख्यापूरणे डट् 7-1-155

सूत्रार्थ संख्या पूर्यते येन संख्यापूरण। इस अर्थ में संख्यावाचक शब्द से डट् प्रत्यय।

eg. एकादशानां पूरणी ⇒ एकादशन् + डट् + ङी 'अणञेयेकण्-नञ्-स्नञ्-टिताम् 2-4-20'
⇒ एकादशी ग्यारहवीं।

प्रतिउदाहरण सङ्ख्या इति किम्? संख्यावाचक शब्द ही होना चाहिए।

eg. एकादशानां उष्ट्रिकाणां पूरण: घट = 11 ऊटों का पूरण करने वाला घट। यहाँ घट पूरण करता

है किन्तु संख्यावाचक नहीं है।

★ सूत्रार्थ
विंशत्यादेर्वा तमट् 7-1-156
विंशति आदि शब्दों से संख्यापूरण अर्थ में तमट् प्रत्यय विकल्पे। विकल्प में 7-1-155 से डट्।

eg. विंशतेःपूरणः विंशतितमः विंशः बीसवाँ। त्रिंशत्तमः त्रिंशः तीसवाँ।

★ सूत्रार्थ
शतादि-मासा-र्धमास-संवत्सरात् 7-1-157
शतादि शब्दों से और मास, अर्धमास, संवत्सर शब्द से संख्यापूरण अर्थ में तमट् प्रत्यय

eg. शतस्य पूरणः शततमः। सहस्रतमः। लक्षतमः।
मासस्य पूरणः मासतमः दिवसः (अमावस्या)। अर्धमासतमः (पूनम)। संवत्सरतमः (दिवाली)

★ सूत्रार्थ
षष्ट्यादेरसङ्ख्यादेः 7-1-158
संख्या आदि में ना हो जिसके ऐसे षष्टि आदि शब्दों से संख्यापूरण अर्थ में तमट् प्रत्यय अर्थात् षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति चार शब्द।

eg. षष्टितमः 60वाँ। सप्ततितमः 70वाँ।
प्रतिउदाहरण असंख्यादेरिति किम्? संख्या आदि में नहीं होना चाहिए।
eg. एकषष्टि → एकषष्ट्याः पूरणः एकषष्टः 61वाँ। 7-1-155 से डट्

★ सूत्रार्थ
नो मट् 7-1-159
संख्या आदि में न हो जिसके ऐसे न् अन्त वाले संख्यावाचक नामों से पूरण अर्थ में मट् प्रत्यय। अर्थात् पञ्चन् सप्तन् अष्टन् नवन् दशन्।

eg. पञ्चानां पूरणी पञ्चमी पाँचवीं।
प्रतिउदाहरण असंख्यादेरित्येव - संख्या आदि में नहीं होना चाहिए।
eg. द्वादशः 7-1-155 से डट्।

★ सूत्रार्थ
पित् तिथट् बहु-गण-पूग-संघात् 7-1-160
बहु-गण-पूग-संघ शब्द से संख्यापूरण अर्थ में पित् ऐसा तिथट् प्रत्यय।

PAGE NO.
DATE / /

eg. बह्वीनां पूरणी बहुतिथी । गणतिथः पूगतिथः सङ्घतिथः

विशेष → पित् पुंवद् भाव करने के लिए 'क्यङ्-मानि-पित्तद्धिते 3-2-50' ।

→ 'बहु-गणं भेदे 1-1-40 थी बहु-गण शब्द संख्यावत्

★ अतोरिथट् 7-1-161

सूत्रार्थ अतु सन्तवाले शब्दों से संख्यापूरण अर्थ में इथट् प्रत्यय। यह भी पित् होता है।

eg. इदं मानं यस्य तद् इयद् 'इदं-किमोऽतुरिय्-किय् चास्य 7-1-148'

इयतः पूरणः इयतिथः (इतने वां) तावतिथी (उतनी वाली)

★ षट्-कति-कतिपयात् थट् 7-1-162

सूत्रार्थ षट्, कति, कतिपय शब्द से संख्यापूरण अर्थ में थट् प्रत्यय।

eg. षण्णां पूरणी षष्ठी, कतिथः (कितने वां) कतिपयथी ।

विशेष षष् + थट् 'नाम सिदय्व्यञ्जने 1-1-21' से पद संज्ञा

षड् + थट् 'धुटस्तृतीयः 2-1-76' 'अघोषे प्रथमोऽशिटः 1-3-50'

षट् + थट् 'तवर्गस्य श्चवर्ग-ष्टवर्गाभ्यां योगे चटवर्गौ 1-3-60'

षट्ठट् 'अप्रयोगीत् 1-1-37'

~~षट्~~ षट्ठ ऐसा रूप सिद्ध होता है किन्तु 'षष्ठी वाऽनादरे 2-2-108' सूत्र में

विधानबल से षष्ठ रूप सिद्ध हुआ।

★ चतुरः 7-1-163

सूत्रार्थ चतुर् शब्द पूरण अर्थ में थट् प्रत्यय।

eg. ~~चतृणां प~~ चतुर्णां पूरणी चतुर्थी।

★ येयौ चलुक् च 7-1-164

सूत्रार्थ चतुर् शब्द से पूरण अर्थ में य और ईय् प्रत्यय ~~च~~ और ~~चक~~ च का लोप।

eg. तुर्यः तुरीयः

★ द्वेस्तीयः 7-1-165

सूत्रार्थ द्वि शब्द से पूरण अर्थ में तीय प्रत्यय। eg. द्वितीयः

* त्रेस्तृ च 7-1-166

सूत्रार्थ त्रिशब्द से पूरण अर्थ में तीय प्रत्यय और त्रि का तृ आदेश।

eg. तृतीया। टित् न होने से आप् प्रत्यय।

* पूर्वमनेन सादेश्चेन् 7-1-167

सूत्रार्थ पूर्व इस प्रकार केवल अथवा पूर्वपद सहित ऐसे अम् अन्त वाले पूर्व शब्द से कर्ता के अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. पूर्व कृतं अनेन इति पूर्वी कटम्। पूर्विन् → प्र. एकव. पूर्वी।
पीतं पूर्वं अनेन इति पीतपूर्वी पयः। 'नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम् 3-1-18' से समास।

* इष्टादेः 7-1-168

सूत्रार्थ प्रथमान्त ऐसे इष्टादि शब्दों से कर्ता अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. इष्टी यज्ञे (यज्ञ को करने वाला) पूर्त्ती श्राद्धे (श्राद्ध को पूर्त करने वाला)
→ इष्ट पूर्त्त, उपपादित, निगदित निकदित संकलित संरक्षित सर्चित अगणित अवकीर्ण आयुक्त गृहीत अधीत श्रुत आसेवित अवधारित कृत निराकृत उपकृत अनुयुक्त अनु-नि-पठित व्याकुचित कथित आदि।

* श्राद्धमद्यभुक्तमिकेनौ 7-1-169

सूत्रार्थ अद्यभुक्त अर्थ वाले प्रथमान्त श्राद्ध शब्द से कर्ता अर्थ में इक, इन् प्रत्यय।

eg. श्राद्धं अद्य अनेन भुक्तं श्राद्धिकः श्राद्धी।

* अनुपद्यन्वेष्टा 7-1-170

सूत्रार्थ अन्विष्यते इति अन्वेष्टा (शोधनार)। अन्वेष्टा अर्थ में इन् अन्त वाला 'अनुपदी' शब्द निपातन होता है।

eg. अनुपदी गवाम् (गायों को ढूँढने वाला)। अनुपदी उष्ट्राणाम्।

PAGE NO.
DATE / /

दाण्डाजिनिका-ऽऽयःशूलिक-पार्श्वकम् 7-1-171

★ सूत्रार्थ ये शब्द अन्वेष्टा अर्थ में निपातन होते हैं। दाण्डाजिनिक, आयःशूलिक इकण् और पार्श्वक शब्द क प्रत्ययान्त हैं।

eg. दाण्डाजिनिकः दाम्भिकः - दंभ करके, लोगों को ठगकर अर्थों को शोधने वाला।
आयःशूलिकः - अयःशूल यानि तीक्ष्ण उपाय। तीक्ष्ण उपाय से अर्थों को ढूंढने वाला।
पार्श्वकः- ऋजु उपाय से ढूंढने योग्य अर्थ को ~~अनत्र~~ अनृजु उपाय से ढूंढने वाला।

क्षेत्रेऽन्यस्मिन् नाश्य इयः 7-1-172

★ सूत्रार्थ अन्य उपाधि से विशिष्ट सप्तम्यन्त क्षेत्र शब्द से नाश्य अर्थ में इय प्रत्यय।

eg. (1) अन्यस्मिन् क्षेत्रे नाश्यः क्षेत्रियो व्याधिः। ~~ख~~ क्षेत्र = शरीर, अन्य शरीर में जाने से नष्ट होने वाली व्याधि eg. Cancer। क्षेत्रिय = असाध्य रोग।

(2) क्षेत्र= दारा। स्वक्षेत्राद् अन्यस्मिन् क्षेत्रे परदारेषु प्रवर्तमानः तत्र नाश्यः। अन्य स्त्री में रत वहीं पर नष्ट करने योग्य जार पुरुष।

छन्दोऽधीते श्रोत्रश्च वा 7-1-173

★ सूत्रार्थ द्वितीयान्त छन्दस् शब्द से अधीत अर्थ में इय प्रत्यय विकल्प से होता है और उसके योग में छन्दस् का श्रोत्र आदेश विकल्प से होता है।

eg. छन्दः अधीते श्रोत्रियः। छान्दसः 'तद् वेत्त्यधीते 6-2-117' से अण् प्रत्यय।

इन्द्रियम् 7-1-174

★ सूत्रार्थ इन्द्र शब्द से पर इय प्रत्ययान्त इन्द्रिय नाम निपातन होता है।

eg. 'इदु ऐश्वर्ये' इन्दति '~~अधितस्वराव्ने~~ उदितः स्वरान्नोऽन्तः 4-4-98' से न् आगम
इन्दति इति इन्द्रः। इन्द्र = आत्मा।
इन्द्रस्य लिङ्गं इति इन्द्रियम् = आत्मा को जानने का चिह्न।
इन्द्रस्य करणं = आत्मा कौ ज्ञान का साधन।
इन्द्रेण दृष्टं = विषयों को सौंपी हुई
इन्द्रेण सृष्टं = आत्मा द्वारा रचित
इन्द्रेण दृष्टं। जुष्टम् = आत्मा द्वारा भोगी हुई। सेवी हुई।

★ तेन वित्ते चञ्चु-चणौ 7-1-175

सूत्रार्थ ~~तृस~~ तृतीयान्त नाम से वित्त = प्रसिद्ध अर्थ में चञ्चु और चण प्रत्यय होते हैं।

eg. विद्यया वित्तः विद्याचञ्चुः। केशचणः।

★ पूरणाद् ग्रन्थस्य ग्राहके को लुक् चाऽस्य 7-1-176

सूत्रार्थ तृतीयान्त पूरण प्रत्ययान्त नाम से ग्रन्थ को ग्रहण करने वाले अर्थ में क प्रत्यय और पूरण प्रत्यय का लोप।

eg. द्वितीयेन रूपेण = वारेण ग्रन्थस्य ग्राहकः इति द्विकः शिष्यः।
द्वितीय + क ⇒ द्विकः दूसरी बार ग्रंथ पढ़ने वाला शिष्य।
त्रिकः चतुष्कः पञ्चकः षट्कः वैयाकरणः।

★ ग्रहणाद् वा 7-1-177

सूत्रार्थ गृह्यते अनेन इति ग्रहणं। ग्रंथ के ग्रहण करने के अर्थ में वर्तते पूरण प्रत्ययान्त नाम से स्वार्थ में क प्रत्यय और क प्रत्यय के योग में पूरण प्रत्यय का लोप विकल्प से होता है। (विकल्प लोप के साथ ही जोड़ना, प्रत्यय तो नित्य होता है)

eg. द्वितीयमेव इति द्विकं द्वितीयकं वा ग्रन्थग्रहणं चैत्रस्य (चैत्र का दूसरी बार ग्रंथ ग्रहण करना)

★ सस्याद् गुणात् परिजाते 7-1-178

सूत्रार्थ गुण अर्थ वाले तृतीयान्त सस्य शब्द से परिजात = संपन्न अर्थ में क प्रत्यय।
(सस्य = गुण, कोई विगुण नहीं होना चाहिए) सस्य = घास भी होता है किन्तु यहाँ गुण अर्थ लेना)

eg. सस्येन परिजातः सस्यकः शालिः देशो वा।

प्रतिउदाहरण गुणादिति किम्? गुण अर्थ ही लेना।

eg. सस्येन परिजातं क्षेत्रम् = घास से संपन्न खेत।

★ धन-हिरण्ये कामे 7-1-179

सूत्रार्थ सप्तम्यन्त ऐसे धन और हिरण्य शब्द से काम = इच्छा अर्थ में क प्रत्यय।

eg. धने कामः धनकः चैत्रस्य = चैत्र की धन विषयक इच्छा।
हिरण्ये कामः हिरण्यकः

★ स्वाङ्गेषु सक्ते 7-1-180
सूत्रार्थ सप्तम्यन्त ऐसे स्वांग वाचक नामों से सक्त = आसक्त अर्थ में क प्रत्यय।
eg. नखे सक्तः नखकः = जो नाखून में बहुत आसक्त हो।
केशकः दन्तकः।
→ बहुवचन स्वांग के समास का भी ग्रहण करने के लिए।
दन्तौष्ठकः केशनखकः।

★ उदरे त्विकणाघूने 7-1-181
सूत्रार्थ सप्तम्यन्त उदर शब्द से आघून ऐसे सक्त अर्थ में इकण् प्रत्यय।
eg. आघून = एकत्र पैदा अथवा जीतने की इच्छा रहित
उदरे सक्तः आघूनः औदरिकः।
eg. → तु शब्द क प्रत्यय के अधिकार को आगे ले जाने के लिए।

★ अंशं हारिणि 7-1-182
सूत्रार्थ द्वितीयान्त ऐसे अंश शब्द से हारि अर्थ में क प्रत्यय।
eg. अवश्यं हरिष्यति इति हारिन् 'णिन् चाऽऽवश्यकाऽधमर्ण्ये' 5-4-36'
अवश्यं अंशं हरिष्यति इति अंशकः = भाग अवश्य लेने वाला।

★ तन्त्रादचिरोद्धृते 7-1-183
सूत्रार्थ पञ्चम्यन्त तन्त्र शब्द से अचिर उद्धृत अर्थ में क प्रत्यय।
eg. तन्त्र = मशीन। अचिर उद्धृत = अभी ही बाहर निकाला हुआ।
तन्त्रात् अचिरोत्तीर्णः तन्त्रकः पटः।

★ ब्राह्मणान्नामि 7-1-184
सूत्रार्थ पञ्चम्यन्त ऐसे ब्राह्मण शब्द से अचिर उद्धृत अर्थ में क प्रत्यय (, संज्ञा विषय में)

eg. ब्राह्मणक: देश: = बहुत सारे ब्राह्मणों में से आचार और क्रिया से बाह्य और अलग किया गया समुदाय।

★ उष्णात् 7-1-185

सूत्रार्थ पञ्चम्यन्त उष्ण शब्द से अचिर उद्धृत अर्थ में क प्रत्यय, संज्ञा विषय में।

eg. उष्ण= अग्नि। उष्णाद् अचिरोद्धृता उष्णिका यवागू: गरम राब।

★ शीताच्च कारिणि 7-1-186

सूत्रार्थ द्वितीयान्त।अम् अन्त वाले शीत और उष्ण शब्द से कारि अर्थ में क प्रत्यय, संज्ञा विषय में।

eg. ~~शीतं=मन्दं क~~ अवश्यं करोति इति कारी 'णिनि न्याऽऽवश्यका-उधमर्ण्ये 5-4-36'।

शीतं = मन्दं करोति शीतक: अलस: = धीरे-धीरे काम करने वाला आलसी।

उष्णं करोति क्षिप्रं करोति उष्णक: दक्ष: = जल्दी-जल्दी काम करने वाला।

शीतं - उष्णं क्रियाविशेषण अव्यय।

★ अधेरारूढे 7-1-187

सूत्रार्थ आरूढ अर्थ में वर्तमान अधि शब्द से क प्रत्यय।

eg.① आरोहति स्म इति आरूढ: कर्तरि विग्रह। अधिक: द्रोण: खार्या: खार्या वा खारी से द्रोण अधिक है। 'अधिकेन भूयसस्ते 2-2-111' से पञ्चमी-सप्तमी।

② आरुह्यते स्म इति आरूढ: कर्मणि विग्रह। अधिका खारी द्रोणेन = द्रोण द्वारा खारी चढ़ीयानी कराय के अर्थात् द्रोण द्वारा खारी overtake की जाती है।

'तृतीयाऽल्पीयस: 2-2-112' से तृतीया।

★ अनो: कमितरि 7-1-188

सूत्रार्थ अनु शब्द से कमितृ अर्थ में क प्रत्यय।

eg. अनुकामयते अनुक: अभिलाषा करने वाला।

अभेरीश्च वा 7-1-189

सूत्रार्थ★ अभि शब्द से पर कामितृ अर्थ में क प्रत्यय और अभि के इ का ई विकल्प से होता है।

eg. अभिकामयते अभिक: अभीक: (कामी या कामुक)।

सोऽस्य मुख्य: 7-1-190

सूत्रार्थ★ प्रथमान्त नाम से षष्ठी अर्थ में क प्रत्यय यदि वह प्रथमान्त नाम मुख्य प्रधान होतो।

eg. देवदत्त: मुख्य: यस्य स देवदत्तक: सङ्घ:।

शृङ्खलक: करभे 7-1-191

सूत्रार्थ★ क प्रत्ययान्त शृङ्खलक शब्द करभ = ऊट के बच्चे अर्थ में निपातन होता है।

eg. शृङ्खलं बन्धनं अस्य शृङ्खलक: करभ:।

→करभाणां काष्ठमयं पादबन्धनं शृङ्खलम्। वय (उम्र) अर्थ निपात।

उदुत्सोरुन्मनसि 7-1-192

सूत्रार्थ★ उत् और उत्सु शब्द से ऊँचे मन वाले अर्थ में क प्रत्यय।

eg. उद्गतं उत्सुगतं मन: यस्य स उत्क: उत्सुक:।

काल-हेतु-फलाद् रोगे 7-1-193

सूत्रार्थ★ काल अर्थ, हेतु अर्थ और फल अर्थ वाले प्रथमान्त नाम से षष्ठी रोग अर्थ में क प्रत्यय।

eg. द्वितीय: दिवस: अस्य ज्वरस्य रोगस्य द्वितीयक: ~~रोग:~~ ज्वर: (दो दिन का बुखार)
पर्वत: हेतु: अस्य रोगस्य पर्वतक: रोग:
शीतं फलं अस्य ज्वरस्य शीतको ज्वर: (ठंड लगने वाला बुखार)
एवं सततक: (काल) ज्वर: रोगो वा, विषपुष्प: (हेतु) रोग:, उष्णक: (फल) रोग:

★ प्रायोऽन्नमस्मिन् नाम्नि 7-1-194
सूत्रार्थ — प्रथमान्त नाम से सप्तमी अर्थ में संज्ञा के विषय में क प्रत्यय, यदि वह प्रथमान्त नाम प्रायः उस दिन अन्न हो तो।
eg. गुडाश्च अपूपाश्च गुडापूपाः। गुडापूपाः प्रायः अन्नं अस्यां पौर्णमास्यां इति गुडापूपिका पौर्णमासी।

★ कुल्माषादण् 7-1-195
सूत्रार्थ — प्रथमान्त कुल्माष शब्द से प्रायः अन्नं अस्मिन् अर्थ में संज्ञा विषयक अण् प्रत्यय।
eg. कुल्माषः प्रायः अन्नं अस्यां कौल्माषी पौर्णमासी। कुल्माष या कुल्मास = खिचड़ी।

★ वटकादिन् 7-1-196
सूत्रार्थ — प्रथमान्त वटक शब्द से प्रायः अन्नं अस्मिन् अर्थ में इन् प्रत्यय।
eg. वटक = बड़ा। वटकाः प्रायः अन्नं अस्यां वटकिनी पौर्णमासी।

★ साक्षाद् द्रष्टा 7-1-197
सूत्रार्थ — साक्षात् शब्द से द्रष्टा अर्थ में संज्ञा विषयक इन् प्रत्यय।
eg. साक्षात् + इन् 'प्रायोऽव्ययस्य 7-4-65' से अन्त्यस्वरादि नो लोप।
~~साक्षी~~ साक्षिन् ⇒ साक्षी साक्षिणौ साक्षिणः

★ तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुः 7-2-1
सूत्रार्थ — प्रथमान्त नाम से षष्ठी या सप्तमी अर्थ में मतु प्रत्यय होता है, यदि प्रथमान्त नाम 'अस्ति' वर्तमान काल में हो तो।
eg. गावः सन्ति यस्य स गोमान्, वृक्षाः सन्ति यस्मिन् स वृक्षवान् पर्वतः।
विशेष → ~~यदि~~ मतु प्रत्ययान्त नाम विशेषण हैं। यदि इनका विशेष्य कोई व्यक्ति हो तो विग्रह में षष्ठी वि. होगी; यदि विशेष्य कोई स्थान हो तो सप्तमी होगी। (सामान्य नियम)
→ भूमनिन्दाप्रशंसासु नित्ययोगेऽतिशायने। संसर्गेऽस्तिविवक्षायां प्रायो मत्वादयो मताः॥
① भूमन् = प्राचुर्य, बड़ी संख्या, घनीभूत मात्रा, भारी परिमाण।

इस अर्थ में मतु होता है। eg. गोमान्, यवमान्
(2) निन्दा - eg. शङ्खोदकी, ककुदावर्ती
(3) प्रशंसा - ~~eg.~~ रूपवती, शीलवती कन्या।
(4) नित्ययोग - eg. क्षीरिणो वृक्षाः, ~~कण्ड~~ कण्टकिनः
(5) अतिशायन eg. उदरिणी कन्या, बलवान् मल्लः;
(6) संसर्ग eg. दण्डी, छत्री
(7) प्रायः - ~~प्रये~~ सब अर्थ का ~~सत्ताम~~ दर्शन सत्तामात्र होने पर भी प्रत्यय होगा। eg.
व्याघ्रवान्, ~~स्पर्शरूपवर्ण~~ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः।

★ आ यात् 7-2-2
सूत्रार्थ 'रूपात् प्रशस्ताहतात् 7-2-54' में जो य प्रत्यय है, वहाँ तक जो भी प्रकृतियाँ कही जाएँगी, उन्हें मतु प्रत्यय भी होगा।
eg. कुमारीमान् - 7-2-3 से कुमारी शब्द को मात्र इक प्रत्यय होने वाला था, किन्तु इस सूत्र से विकल्प में मतु भी किया।
व्रीहिमान् - 7-2-5 से इक-इन् और इस सूत्र से मतु।
→ अपवाद के सूत्रों से मतु प्रत्यय का बाध न हो इसलिए यह सूत्र बनाया।

★ नावादेरिकः 7-2-3
सूत्रार्थ नावादि शब्दों से मतु अर्थ में इक प्रत्यय।
eg. नौः अस्ति अस्य नाविकः, नौमान्। कुमारिकः, कुमारीमान्
→ नौ आदि- प्रयोगगम्याः।

★ शिखादिभ्य इन् 7-2-4
सूत्रार्थ शिखादि शब्दों से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।
eg. शिखी, शिखावान्। माली, मालावान्।
→ शिखादि - शिखा, माला, शाला, मेखला, ~~श~~ शाखा, संज्ञा, बलाका, कर्मन्, चर्मन्, वर्मन्, बल, उत्साह, मूल, आयाम, व्यायाम, शृङ्ग, वृन्द, कूल(तट), फल, मान, मनीषा, व्रत, धन्वन्(धनुष), चूडा (चोटी), केका (मोर की आवाज), करुणा, जरा, उद्यम आदि। आकृति गण

व्रीह्यादिभ्यस्तौ 7-2-5

★ सूत्रार्थ — व्रीहि आदि शब्दों से मतु अर्थ में इक-इन् प्रत्यय।

eg. व्रीहिकः, व्रीही, व्रीहिमान्] मायिकः, मायी, मायावान् ~~मायी~~ मायावी (7-2-47 से)

→ ~~व्रीहि~~ व्रीहि आदि प्रयोगगम्याः।

अतोऽनेकस्वरात् 7-2-6

★ सूत्रार्थ — अनेक स्वर वाले सकारान्त नामों से मतु अर्थ में इक-इन् प्रत्यय।

eg. दण्डिकः दण्डी दण्डवान् । छत्रिकः, छत्री, छत्रवान्

प्रतिउदाहरण — अनेकस्वरादिति किम्? अकारान्त नाम अनेकस्वर वाला ही होना चाहिए।

eg. खवान्, स्ववान्।

आशिरसोऽशीर्षश्च 7-2-7

★ सूत्रार्थ — आशिरस् शब्द से मतु अर्थ में इक-इन् प्रत्यय और आशिरस् का अशीर्ष आदेश।

eg. न विद्यते शिरः अस्य अशिराः । आशिराः अस्ति यस्य यस्मिन् वा स अशीर्षिकः अशीर्षी, अशीर्षवान्। आशिरस् + इन् । इक ⇒ अशीर्ष + इक । इन् ।

विशेष प्र. 'शीर्षः स्वरे तद्धिते 3-2-103' से शीर्ष आदेश होता है तो यहाँ वापस क्यों लिखा?

उ. वहाँ स्वरादि तद्धित प्रत्यय पर होता है। यहाँ मतु प्रत्यय पर आदेश करने के लिए फिर से लिखा।

अर्थादिधर्मादिभावात् 7-2-8

★ सूत्रार्थ — 'भावार्थ' अर्थ वाले ही अर्थ और अर्थ अन्त वाले शब्दों से मतु अर्थ में इक-इन् प्रत्यय। अर्थ शब्द = धन, प्रयोजन, भावार्थ

eg. आर्थिकः, अर्थी। प्रत्यर्थ = उत्तर, जवाब, प्रत्यर्थिकः प्रत्यर्थी।

प्रतिउदाहरण — भावादिति किम्? भाव वाचक अर्थ शब्द ही होना चाहिए।

eg. अर्थ = धन ⇒ अर्थवान्। यहाँ इक-इन् नहीं होंगे।

→ भाव वाचक अर्थ शब्द से इक, इन् प्रत्यय ही होंगे, मतु नहीं होगा।

→ अन्य अर्थ वाले अर्थ शब्द से मतु प्रत्यय होगा, इक-इन् नहीं होंगे।

PAGE NO.
DATE / /

* व्रीह्यर्थ- तुन्दादेरिलश्च 7-2-9

सूत्रार्थ व्रीहि अर्थ वाले शब्द और तुन्दादि शब्दों से इल, इक, इन् प्रत्यय।

eg. ① व्रीह्यर्थ → शालि- शालिलः, शालिकः, शाली, शालिमान्। एवं कलमा- कलमिलः...

② तुन्दादि → तुन्दिलः, तुन्दिकः, तुन्दी, तुन्दवान्। एवं उदरिलः, उदरिकः, उदरी, उदरवान्।

→ तुन्दादि- तुन्द, उदर, ग्रह, यव, पङ्क, गुहा, कला, काक आदि।

विशेष → व्रीहि शब्द 'व्रीह्यादिभ्यस्तौ 7-2-5' में आने से इल प्रत्यय नहीं होगा।

* स्वाङ्गाद् विवृद्धात् ते 7-2-10

सूत्रार्थ विवृद्ध अर्थ वाले स्वांग वाचक शब्दों से इल, इक, इन् प्रत्यय।

विशेषेण वृद्धः विवृद्धः = विशेषरूप से बढ़े हुए।

eg. विवृद्धौ महान्तौ कर्णौ यस्य स कर्णिलः, कर्णिकः, कर्णी, कर्णवान् (हाथी)

एवं ओष्ठिलः ओष्ठिकः ओष्ठी ओष्ठवान्।

विशेष- यदि विवृद्ध अर्थ न हो तो 'अतोऽनेकस्वरात् 7-2-6' से इक-इन् प्रत्यय होंगे, इल नहीं होगा।

* वृन्दादारकः 7-2-11

सूत्रार्थ वृन्द शब्द से मतु अर्थ में आरक प्रत्यय। वृन्द = समूह, बड़ी संख्या।

eg. वृन्दारकः, वृन्दवान्, वृन्दी (7-2-5 से)। वृन्दारकः = देव का समूह।

* शृङ्गात् 7-2-12

सूत्रार्थ शृङ्ग शब्द से मतु अर्थ में आरक प्रत्यय।

eg. शृङ्गारकः, शृङ्गवान्, शृङ्गी। (सींग वाला बैल, हिरण आदि)

* फल- बर्हाच्चेनः 7-2-13

सूत्रार्थ फल, बर्ह, शृङ्ग शब्द से मतु अर्थ में इन प्रत्यय।

eg. ~~फल~~ फलिनः, फलवान्।

बर्ह = पंख। बर्हिणः, (मोर) बर्हवान्। एवं शृङ्गिणः, शृङ्गवान्।

(पुं. नपुं.) → 7-2-5 से फली, बर्ही।

मत्वादीमसश्च 7-2-14

★ सूत्रार्थ — मत् शब्द से मतु अर्थ में ईमस, इन प्रत्यय।

eg. मत्तीमसः, मत्तिनः, मत्वान्।

मरुत्-पर्वणस्तः 7-2-15

★ सूत्रार्थ — मरुत्, व पर्वन् शब्द से मतु अर्थ में त प्रत्यय।

eg. मरुत्तः, मरुत्वान्। पर्वतः, पर्ववान्।

→ मरुत्वान् → 'न स्तं मत्वर्थे 1-1-23' से पद संज्ञा न होने से त् का द् नहीं हुआ।

→ पर्व = गांठ। पर्वत = शिलाओं की गांठें जिसमें हैं।

वत्ति-वटि-तुण्डैर्भः 7-2-16

★ सूत्रार्थ — वत्ति-वटि-तुण्डि शब्द से मतु अर्थ में भ प्रत्यय।

eg. → वत्ति = झुर्रियां। वत्तिभः वत्तिमान् = वृद्ध।

→ वटि = उन्नता नाभिः। वटिभः

→ तुण्डि = प्रवृद्धा नाभिः। तुण्डिभः, तुण्डित्वः (7-2-21 से रोग वाचक होने से)

ऊर्णा-ऽहं-शुभमो युस् 7-2-17

★ सूत्रार्थ — ऊर्णा, अहं, शुभं शब्द से मत्वर्थ में यु प्रत्यय। सित् होने से 'नाम सियय्-व्यञ्जने 1-1-21' से पद संज्ञा। पदसंज्ञा होने से 'अवर्णेवर्णस्य 7-4-68 सूत्र नहीं लगेगा, जिससे ऊर्णा के अ का लोप नहीं हुआ।

eg. ऊर्णायुः (भेड़) अहंयुः (अहंकारी) शुभंयुः (कल्याणकारी)

कं-शंभ्यां युस्-ति-यस्-तु-त-व-भम् 7-2-18

★ सूत्रार्थ — कं और शं शब्द से मतु अर्थ में यु, ति, य, तु, त, व, भ प्रत्यय। सित् पदसंज्ञा करने के लिए। (कम्, शम् अव्यय = सुख)

eg. कंयुः, शंयुः, कंतिः, शंतिः, कंयः, शंयः, कंतुः, शंतुः, कंतः, शंतः, कंवः, शंवः, कंभः, शंभः (सुखी)

★ बल-वात-दन्त-ललाटादूल 7-2-19

सूत्रार्थ बल, वात, दन्त, ललाट शब्द से मतु अर्थ में ऊल प्रत्यय।

eg. बलूलः, वातूलः, दन्तूलः (हाथी), ललाटूलः। बलवान्, वातवान्, दन्तवान्, ललाटवान्

★ प्राण्यङ्गादातो लः 7-2-20

सूत्रार्थ आकारान्त प्राणि अंग वाचक नामों से मतु अर्थ में ल प्रत्यय।

eg. चूडा= चोटी, शिखा। चूडालः चूडावान्। जङ्घालः जङ्घावान्। शिखालः, शिखावान्

प्रत्युदाहरण ① ~~प्राण्यङ्गादिति~~ अङ्गग्रहणं किम्? प्राणि के अंगवाचक नाम ही होना चाहिए।

eg. इच्छा, भावना, वासना ऐसे प्राणिगत भाववाचक शब्दों से ल प्रत्यय नहीं होगा।

② प्राणिग्रहणं किम्? प्राणि का ही अंग होना चाहिए।

eg★ जङ्घावान् प्रासादः = महल का पिल्लर

★ सिध्मादि-क्षुद्रजन्तु-रुग्भ्यः 7-2-21

सूत्रार्थ सिध्म आदि शब्द, क्षुद्रजन्तुवाचक शब्द और रोग वाचक शब्दों से मतु अर्थ में लप्रत्यय।

eg. सिध्मलः, सिध्मवान् (सिध्म= नपुं. कोढ़), वध्मलः। यूकालः। मूर्च्छालः।

→ सिध्मादि- सिध्म (कोढ़), वध्मन्, गडु (कूबड़), मणि, बीज, नाभि, पांशु, पशु, पार्ष्णी (एडी), धमनी, सक्तु, मांस, ~~पत्त~~ पत्र, वात, पित्त, श्लेष्मन्, कर्ण, सानि, स्नेह, शीत, कृष्ण, श्याम, पिङ्ग, पक्ष्मन्, पृथु, मृदु, मञ्जु (~~म~~ मनोहर, सुंदर), चटु (सुंदर शब्द, चापलूसी), कण्डू (खाज)

विशेष ① पार्ष्णी, धमनी - दीर्घ ईकारान्त से ही ल प्रत्यय। ह्रस्व इकारान्त से मतु प्रत्यय।

② वत्सलः (स्नेहवान्), अंसल (बलवान्) - सिध्मादि पाठ में समावेश करना।

③ प्र. सिध्म शब्द रोग वाचक शब्दों में आ जाता, तो भिन्न ग्रहण क्यों किया?

उ. 7-2-60 से इन् प्रत्यय नहीं करने के लिए।

★ प्रज्ञा-पर्णोदक-फेनाल्लेलौ 7-2-22

सूत्रार्थ प्रज्ञा पर्ण उदक फेन शब्द से मतु अर्थ में ल, इल प्रत्यय।

eg. प्रज्ञालः, प्रज्ञिलः। पर्णिलः, पर्णलः। उदकलः, उदकिलः। फेन= झाग, फेनलः, फेनिलः (साबुन), फेनवान्। प्रज्ञावान्, पर्णवान्, उदकवान्।

कात्या-जटा-घाटात् क्षेपे 7-2-23

सूत्रार्थ ★ कात्या, जटा, घाटा शब्द से निन्दा अर्थ में त्य, इल प्रत्यय।

eg. कात्या = पैर की नस विशेष; कात्यात्य:, कात्यिल:)
जटा = बालों का गुच्छा; जटात्य:, जटिल:= लोगों को ठगने के लिए जो जटा रखता है।
घाटा = गले की घंटी; घाटात्य:, घाटिल:= निन्द्य घंटी है जिसके पास।

→ मतु प्रत्यय से निन्दा अर्थ गम्यमान न होने से निन्दा अर्थ में मतु प्रत्यय नहीं करना, त्य-इल प्रत्यय ही करना।

अतिउदाहरण क्षेपे इति किम्? निन्दा अर्थ ही होना चाहिए।

eg. कात्यावान् जटावान् घाटावान्। यहाँ निन्दा अर्थ नहीं है।

वाच आत्या-डाटौ 7-2-24

सूत्रार्थ ★ वाच् शब्द से निन्दा वाले मतु अर्थ में आत्य, आट प्रत्यय।

eg. वाचात्य:, वाचाट:= जो बहुत निरर्थक बोलता है।

→ मतु प्रत्यय से निन्दा अर्थ गम्यमान न होने से मतु प्रत्यय नहीं करना।

गिन् 7-2-25

सूत्रार्थ ★ वाच् शब्द से मतु अर्थ में गिन् प्रत्यय।

eg. वाग्मी, वाग्वान्

→ पृथग् योग करने से क्षेप अर्थ की निवृत्ति हुई। गिन् प्रत्यय करणानुवृत्ति से प्रशंसा अर्थ में ही करना। मतु प्रत्यय मात्र स्वरूप अर्थ में।

मधवादिभ्यो र: 7-2-26

सूत्रार्थ ★ मधु आदि शब्दों से मतु अर्थ में र प्रत्यय।

eg. मधुर: रस:। खर: गर्दभ:।

→ मधु शब्द यहाँ गुण वाचक लेना, द्रव्य वाचक नहीं।

→ मधु आदि - प्रयोग गम्या:।

→ अन्य प्रयोग - मुखर: (वाचाल), कुञ्जर (कुञ्ज = हाथी दाँत, हाथी), नगरं, पुरं, ऊषरं क्षेत्रं (ऊष = नमक), शुषिरं (शुषि = छिद्र), कण्डूर:, पाण्डुर:, पांशुर:।

PAGE NO.
DATE / /

★ कृष्यादिभ्यो वलच् 7-2-27

सूत्रार्थ कृषि आदि शब्दों से मतु अर्थ में वलच् प्रत्यय।

eg. कृषीवल: (किसान), आसुतीवल: (शराब बेचने वाला) । आसुति= शराब।

→ च् इत् - 'वलच्यापित्र्यादे: 3-2-82' से पूर्व स्वर दीर्घ करने के लिए।

→ परिषद्वलं (पङ्किल), रजस्वला स्त्री, दन्तावल: राजा हस्ती वा,

→ प्रयोग गम्या:।

★ लोम-पिच्छादे: शेलम् 7-2-28

सूत्रार्थ लोमादि शब्दों से और पिच्छादि शब्दों से श और इल प्रत्यय, यथासंख्यं।

eg. लोमश: लोमवान् गिरिश:। पिच्छिल:, पिच्छवान्, उरसिल:।

→ लोमादि - लोमन्, रोमन्, बभ्रु (भूरा रंग अथवा गंजा), वल्गु (सुंदर), हरि, कपि, मुनि, गिरि, उरु, कर्क

→ पिच्छादि - पिच्छ (मोर की पींछी अथवा कलगी), उरस्, धुवका, पक्ष, चूर्ण। आदि।

★ नोऽङ्गादे: 7-2-29

सूत्रार्थ अंगादि शब्दों से मतु अर्थ में न प्रत्यय।

eg. अङ्गानि अस्या: सन्ति अङ्गना (रूढि से सुंदर अंगवाली स्त्री)। पामन: पामवान् (पामन् = खस)। वामन: वामवान् (वामन् = ठिंगना)।

→ अङ्गादि - अङ्ग, वामन्, पामन्, हेमन्, श्लेष्मन्, सामन् (खुश करना), वर्ष्मन् (शरीर), शाकिन् (शाक वाला), ऊष्मन्, कद्रु (भूरा रंग), वलि। आदि

★ शाकी-पलाली-दर्द्र्वा ह्रस्वश्च 7-2-30

सूत्रार्थ इन शब्दों से मतु अर्थ में न प्रत्यय और अन्त्य स्वर ह्रस्व।

eg ① महत् शाकं शाकसमूहो वा शाकी 'गौरादिभ्यो मुख्यान्ङी 2-4-19' से ङी। शाकी अस्ति अस्य शाकिन:। शाकीमान्

② पलाल= घास। महत् पलालं पलालक्षोद: वा पलाली 'गौरादिभ्यो मुख्यान्ङी 2-4-19' पलाली अस्ति अस्य पलालिन:। पलालीमान्

③ दर्द्रू= व्याधि विशेष। दर्द्रुण: दर्द्रूमान्।

★ विष्वचो विषुश्च 7-2-31

सूत्रार्थ विषु अञ्चति इति विष्वच् विष्वच् → विष्वक् (चारों तरफ)

इस अव्यय से मतु अर्थ में ण प्रत्यय और विष्वक् का विषु आदेश।

eg. विष्वञ्चः रश्मयः सन्ति यस्य स विषुणः = चारों तरफ हैं किरणें जिसकी, सूर्य।

विष्वग् गतानि=गमनानि यस्य स विषुणः वायुः = चारों तरफ है गति जिसकी।

★ लक्ष्म्या अनः 7-2-32

सूत्रार्थ लक्ष्मी शब्द से मतु अर्थ में अन प्रत्यय।

eg. लक्ष्मी अस्ति अस्य लक्ष्मणः, लक्ष्मीवान्।

★ प्रज्ञा-श्रद्धा-ऽर्चा-वृत्तेर्णः 7-2-33

सूत्रार्थ प्रज्ञा श्रद्धा अर्चा वृत्ति शब्द से मतु अर्थ में ण प्रत्यय।

eg. प्राज्ञः प्रज्ञावान्। श्राद्धः श्रद्धावान्। आर्चः अर्चावान्। वार्त्तः, वृत्तिमान्।

विशेष → स्त्री लिंग में आप् प्रत्यय – श्राद्धा, प्राज्ञा, आर्चा, वार्त्ता।

→ प्र. प्राज्ञी प्रयोग कैसे होता है।

उ. प्रजानाति इति प्रज्ञः 'उपसर्गादातो डोऽश्यः 5-1-56'

प्रज्ञः एव प्राज्ञः 'प्रज्ञादिभ्योऽण् 7-2-165' से स्वार्थिक अण् प्रत्यय।

⇒ प्राज्ञी 'अणजे... 2-4-20' से ङी

★ ज्योत्स्नादिभ्योऽण् 7-2-34

सूत्रार्थ ज्योत्स्नादि शब्दों से मतु अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. ज्योत्स्ना अस्ति अस्याः ज्यौत्स्नी रात्रिः, ज्यौत्स्नः पक्षः। तामिस्री रात्रिः।

→ तपस् → तापसः, कौतुपं गृहम्, वैपादिकं कुष्ठम्, वैसर्पो व्याधिः।

प्रयोगगम्याः।

★ सिकता-शर्करात् 7-2-35

सूत्रार्थ इन शब्दों से मतु अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. सैकतः देशः, शार्करः ओदनः। सिकतावान्, शर्करावान्।

PAGE NO.
DATE / /

★ इलश्च देशे 7-2-36

सूत्रार्थ सिकता- शर्करा शब्द से देशरूप मतु अर्थ में इल, अण् प्रत्यय।

eg. सौ सिकतिल:, सैकत:, सिकतावान् देश:। शर्करिल: शार्कर: शर्करावान् देश:

★ द्यु-द्रोर्म: 7-2-37

सूत्रार्थ द्यु, द्रु शब्द से मतु अर्थ में म प्रत्यय। द्यु = ~~स्वर्ग या आकाश~~ दिवस, द्रु = ~~शाखा~~ लकड़ी।

eg. द्युम:(सूर्य) द्रुम: (वृक्ष:)

★ काण्डा-ऽऽण्ड-भाण्डादीर: 7-2-38

सूत्रार्थ काण्ड(विभाग) आण्ड (पिशाब की कोथली ~~urinary bladder~~ Testes मुष्क) भाण्ड (बर्तन) शब्द से मतु अर्थ में ईर प्रत्यय।

eg. काण्डीर: काण्डवान्। आण्डीर:, आण्डवान्। भाण्डीर: भाण्डवान्।

★ कच्छ्वा डुर: 7-2-39

सूत्रार्थ कच्छू (खुजली) शब्द से मतु अर्थ में डुर प्रत्यय।

eg. कच्छुर: कच्छूमान् (खुजली का रोगी)

★ दन्तादुन्नताद् 7-2-40

सूत्रार्थ उन्नत उपाधि वाले दन्त शब्द से डुर प्रत्यय।

→ विवृद्धि = प्रमाण से अतिरेक, उन्नत = सामान्य से थोड़ा ज्यादा।

★ मेधा-रथान्नवेर: 7-2-41

सूत्रार्थ मेधा और रथ शब्दों से ~~इर~~ मतु अर्थ में इर प्रत्यय विकल्प से होता है। विकल्प पक्ष में 7-2-47 से विन् (मेधावी), इक, इन् आदि यथाप्राप्त।

eg. मेधिर: मेधावान् मेधावी। रथिर: रथिक: रथी।

★ कृपा-हृदयादालु: 7-2-42

सूत्रार्थ कृपा- हृदय शब्द से मतु अर्थ में आलु प्रत्यय विकल्प से।

eg. कृपालुः, कृपावान्, हृदयालुः, हृदयी, ~~हृदय~~ हृदयवान्।

★ केशाद् वः 7-2-43

सूत्रार्थ केश शब्द से मतु अर्थ में व प्रत्यय।

eg. केशवः (रूढ़ि अर्थ-कृष्ण, केश वाला) केशवान्, केशी

★ मण्यादिभ्यः 7-2-44

सूत्रार्थ मणि आदि शब्दों से मतु अर्थ में व प्रत्यय।

→ पृथक् योग से 'नवा' का अधिकार निवृत्त।

eg. मणिवः मणिलः (सिध्मादि पाठ 7-2-21) मणिमान्।

→ मणिआदि → मणि, हिरण्य, बिम्ब, कुरर (समुद्री क्रौंच पक्षी), कुरव (वृक्ष विशेष) पौधा
राजी (पंक्ति), इष्टका, गाण्डि, गाण्डी (धनुष विशेष), अजका (छोटी बकरी)

विशेष → राजीवं, गाण्डीवः, गाण्डिवः (अर्जुन) आदि रूढ़ि शब्द हैं। रूढ़ में मतु नहीं करना, अन्य अर्थ में करना।

★ हीनात् स्वाङ्गादः 7-2-45

सूत्रार्थ हीनत्व उपाधि वाले स्वांग वाचि नाम से अ प्रत्यय।

eg. कर्णः = छोटे कान वाला। नासिकः = हीन, छिन्न नाक वाला।

प्रतिउदाहरण हीनात् इति किम्? स्वांग हीन होना चाहिए।

eg. कर्णवान्

★ अभ्रादिभ्यः 7-2-46

सूत्रार्थ अभ्रादि शब्दों से मतु अर्थ में अ प्रत्यय।

eg. अभ्रं नभः (बादलवाला आकाश) अर्शसो मैत्रः (अर्शस्=नपुं रोग विशेष, रोग वाला मैत्र)

→ अभ्र, अर्शस्, उरस्, तुन्द, चतुर, पलित, जटा, घाटा, कर्दम, काम, बल, घटा, अम्ल, लवण आदि आकृतिगण। यथादर्शनं।

PAGE NO.
DATE / /

★ अस्-तपो-माया-मेधा-स्रजो विनि 7-2-47

सूत्रार्थ अस् अन्तवाले, तपस्, माया, मेधा, स्रज् शब्द से मतु अर्थ में विन् प्रत्यय।

eg. यशस्वी, यशस्वान्। तपस्वी। मायावी, मायिक: (7-2-9), मायी, मायावान्। मेधावी। स्रग्वी, स्रग्वान्। →7-2-134 से अण् प्रत्यय द्वारा बाध न हो इसलिए तपस् पृथक् ग्रहण किया।

★ आमयाद् दीर्घश्च 7-2-48

सूत्रार्थ आमय शब्द से मतु अर्थ में विन् प्रत्यय और अन्त्य स्वर दीर्घ।

eg. आमयावी, आमयवान्।

★ स्वान्मिन्नीशे 7-2-49

सूत्रार्थ स्व शब्द से ईश रूप मतु अर्थ में मिन् प्रत्यय और अन्त्य स्वर दीर्घ।

eg. स्वामी।

प्रतिउदाहरण ईश अर्थ न हो तो स्ववान्।

★ गोः 7-2-50

सूत्रार्थ गो शब्द से मतु अर्थ में मिन् प्रत्यय।

eg. गोमी, गोमान्

★ ऊर्जो विन्-वलावस् चान्तः 7-2-51

सूत्रार्थ ऊर्ज् शब्द से मतु अर्थ में विन् और वल प्रत्यय, ~~अन्त्य का~~ अस् का आगम।

eg. ऊर्जनं इति क्विप् ऊर्ज् ⇒ ऊर्क् ऊर्जौ ऊर्जः। क्रुत्संपदादिभ्यः क्विप् 5-3-114' ऊर्जस्वी, ऊर्जस्वलः, ऊर्ग्वान्।

★ तमिस्रा-र्णव-ज्योत्स्नाः 7-2-52

सूत्रार्थ ये शब्द मतु अर्थ में निपात होते हैं।

eg. ① तमः अस्ति अस्मिन् तमिस्रा रात्रिः, गुफा, तमिस्राणि गुहामुखानि। र प्रत्यय, पूर्व के म का मि ~~और~~ निपात।

② अर्णस् नपुं= पानी। अर्णः अस्ति अत्र अर्णवः (समुद्र)। व प्रत्यय, स् लोप निपातन।

③ ज्योतिः अस्ति अत्र ज्योत्स्ना (चन्द्र का प्रकाश)। न प्रत्यय, इ लोप निपातन।

★ सूत्रार्थ — गुणादिभ्यो यः 7-2-53
गुणादि शब्दों से मतु अर्थ में य प्रत्यय।
eg. गुण्यः पुरुषः गुणी (शिखादिभ्य इन् 7-2-4)। हिम्यो गिरिः, हिमवान्।
→ गुणादि प्रयोग गम्याः।

★ सूत्रार्थ — रूपात् प्रशस्ता-ऽऽहतात् 7-2-54
प्रशस्त और आहत उपाधि वाले रूप शब्द से मतु अर्थ में य प्रत्यय।
eg. प्रशस्तं रूपं अस्य रूप्यो गौः (सुंदर रूप वाला बैल)।
आहतं रूपं अस्य रूप्यं कार्षापणम् (घिसे हुए रूप वाला सिक्का)।
→ 'आ यात् 7-2-2' से मतु की अवधि पूर्ण। आगे वाले सूत्रों में वही प्रत्यय ~~पूर्णमासो ऽण् 7-2-55~~ होंगे, मतु नहीं होगा।

★ सूत्रार्थ — पूर्णमासो ऽण् 7-2-55
पूर्णमास् शब्द से मतु अर्थ में अण् प्रत्यय।
eg. प्राति मिमीते वा मास् 'कृणादि 952' अस् प्रत्यय।
प्रा + अस् = मास् (चंद्र)
पूर्णः मासः अस्यां सा पूर्णमास् + अण् + ङी ⇒ पौर्णमासी।

★ सूत्रार्थ — गोपूर्वादत इकण् 7-2-56
जो शब्द है पूर्वपद में जिसके ऐसे अकारान्त नाम से मतु अर्थ में इकण् प्रत्यय।
eg. गवां शतं इति गोशतम्। गोशतम् अस्ति अस्य गौशतिकः। = 100 गाय वाला
गवां शते इति गोशतम् (गायों का 200)। गोशतम् अस्ति अस्य गौशतिकः = 200 गाय वाला
गवां शतानि इति गोशतम् ⇒ गौशतिकः = 300 से 900 तक गाय वाला।
गवां सहस्रं गोसहस्रम् ⇒ गौसहस्रिकः = 1000 गाय वाला।
गवां सहस्राणि = गोसहस्रं ⇒ गौसहस्रिकः = 2000-99000 गाय वाला।

प्रतिउदाहरण — अत इति किम् ? अकारान्त नाम ही होना चाहिए।

eg. — गवां विंशतिः गोविंशतिः => सा अस्ति अस्य गोविंशतिमान् ।

★ निष्कादेः शत-सहस्रात् 7-2-57

सूत्रार्थ — निष्क है आदि जिनका ऐसे अवयव ~~से पर~~ जो शत और सहस्र शब्द, तदन्त नाम से मतु अर्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. — निष्काणां शतं निष्कशतं => तद् अस्ति अस्य नैष्कशतिकः, नैष्कसहस्रिकः।

प्रतिउदाहरण — आदेरिति किम् ? निष्क शब्द आदि में ही होना चाहिए।

eg. — स्वर्णनिष्कशतं अस्य अस्ति।

★ एकादेः कर्मधारयात् 7-2-58

सूत्रार्थ — एक है आदि में जिसके ऐसे अकारान्त कर्मधारय समास से मतु अर्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. — एकश्चासौ गौश्च एकगवः 'गोस्तत्पुरुषात् 7-3-105' से अट् समासान्त
एकगवः अस्ति अस्य ऐकगविकः।

★ सर्वादेरिन् 7-2-59

सूत्रार्थ — सर्व है आदि में जिसके ऐसे अकारान्त कर्मधारय समास से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. — सर्वं च तद् धनं च सर्वधनं अस्ति अस्य सर्वधनी। सर्वबीजी। सर्वकेशी नटः

★ प्राणिस्थादस्वाङ्गाद् द्वन्द्व-रुग्-निन्द्यात् 7-2-60

सूत्रार्थ — प्राणि में रहा स्वांग सिवाय अर्थवाला अकारान्त द्वन्द्व समास, रोग वाचक शब्द और निन्द्य अर्थ वाले शब्दों से पर मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. — कटकानि च वलयानि च एतेषां समाहारः कटकवलयं। कटकवलयं अस्ति अस्याः कटकवलयिनी। कटक= कड़ा, वलय= चूड़ी।
कुष्ठं (कोढ़) अस्ति अस्य कुष्ठी।

ककुद् इव आवर्तः ककुदावर्त्तः (गाय की खूंध जैसा पीठ का भाग) - उपमानपूर्वपद समास
ककुदावर्त्तः अस्ति अस्य ककुदावर्त्ती।

प्रतिउदाहरण ① प्राणिस्थाद् इति किम्? स्वांग सिवाय का नाम प्राणि में होना चाहिए। प्राणी = त्रस जीव या बड़े शरीर वाले जीव।

eg. पुष्पफलवान् वृक्षः = वृक्ष प्राणि नहीं है इसलिए इन् प्रत्यय नहीं हुआ।

② अस्वाङ्गादिति किम्? स्वांग सिवाय का होना चाहिए।

eg. ~~स्तौन~~ स्तनकेशवती स्त्रीः = स्तन ~~औकर~~ केश स्त्री के स्वांग हैं।

विशेष → 'अतोऽनेकस्वरात् 7-2-6' से इन् प्रत्यय सिद्ध होने पर भी दूसरे प्रत्ययों के बाध के लिए यह सूत्र बनाया।

★ वाता-ऽतीसार-पिशाचात् कश्चान्तः 7-2-61

सूत्रार्थ वात, अतीसार और पिशाच शब्द से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय और क का आगम।

eg. वातः अस्ति अस्य वातकी। अतिसारकी। पिशाचकी

विशेष → सूत्र में अतीसार शब्द में 'ती' दीर्घ है, तथा दृष्टांत में 'ति' ह्रस्व है। यहाँ 'घञ्युपसर्गस्य बहुलम् 3-2-86' से विकल्पे दीर्घ होता है। 'एकदेशविकृतमनन्यवत्' न्याय से अतीसार भी अतिसार जैसा होता है। अतः दीर्घ से भी यह सूत्र का कार्य होता है, यह बताने के लिए सूत्र में दीर्घ रखा। तथा यह न्याय बताने के लिए भी सूत्र में मात्रा बढ़ने पर भी दीर्घ रखा।

★ पूरणाद् वयसि 7-2-62

सूत्रार्थ पूरण प्रत्ययान्त नामों से वय अर्थ गम्यमान होने पर मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. पञ्चमः मासः संवत्सरो वा अस्य पञ्चमी बालः।

★ सुखादेः 7-2-63

सूत्रार्थ सुखादि शब्दों से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. सुखी, दुःखी।

→ सुखादि - तृप्र (दुःख), कृच्छ्र, ~~अल्लिक~~, कृपण, अलीक, अस्र (पु. बाल्य, नपुं. आँसू, खून), क्लीप (विपरीत) प्रणय, हस्त, हल, कक्ष, शील्य। आदि।

★ मात्वाया: क्षेपे 7-2-64

सूत्रार्थ क्षेप-निंदा अर्थ जनाने पर माला शब्द से इन् प्रत्यय।

eg. माली

प्रतिउदाहरण क्षेप इति किम् ? क्षेप अर्थ हो तो ही इन्।

eg. मालावान्।

विशेष → माला शब्द शिखादि गणपाठ में भी आता है। अत: 'शिखादिभ्य इन् 7-2-4' से इन् प्रत्यय सिद्ध था। किन्तु क्षेप अर्थ में मतु न करने के लिए यह सूत्र बनाया।

★ धर्म-शील-वर्णान्तात् 7-2-65

सूत्रार्थ धर्म, शील, वर्ण अंत वाले शब्दों से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. मुने: धर्म: मुनिधर्म:। स अस्ति अस्य मुनिधर्मी। एवं यतिशीली, ब्राह्मणवर्णी

★ बाहूर्वादिर्बलात् 7-2-66

सूत्रार्थ बाहु और ऊरु हैं आदि में जिसके, ऐसे बल शब्द से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय।

eg. बाहो: बलं बाहुबलं अस्ति अस्य बाहुबली। ऊरुबली।

★ मन्-मा-ऽब्जादेर्नाम्नि 7-2-67

सूत्रार्थ मन् अन्त वाले, म अन्त वाले और अब्जादि शब्दों से मतु अर्थ में इन् प्रत्यय, संज्ञा में।

eg. मन् अन्त - दामिनी (बिजली), सामिनी, धर्मिणी आदि।

म अन्त - भामिनी, कामिनी (स्त्री) यामिनी, सोमिनी (चंद्रिका)

अब्जादि - अब्जिनी, कमलिनी, सरोरुहिणी, सरोजिनी, अम्भोजिनी, अरविन्दिनी आदि। (कमल की नाल)

★ हस्त-दन्त-कराज्जातौ 7-2-68

सूत्रार्थ इन शब्दों से मतु अर्थों में इन् प्रत्यय, यदि जाति की संज्ञा बनते हो तो।

eg. हस्ती दन्ती करी (हाथी)

★ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि 7-2-69

सूत्रार्थ वर्ण शब्द से ब्रह्मचारी अर्थ में इन् प्रत्यय। वर्ण = ब्रह्मचर्य

eg. वर्णी = ब्रह्मचारी। वर्णवान् अन्यः

★ पुष्करादेर्देशे 7-2-70

सूत्रार्थ पुष्करादि शब्दों से मतु अर्थ इन् प्रत्यय, यदि ~~किसी देश की संज्ञा हो तो~~ देशवाचक नाम बने तो।

eg. पुष्करिणी, पद्मिनी (बावड़ी)

→ पुष्करादि – पुष्कर (नीलकमल), पद्म, उत्पल (नील कमल), तमाल (वृक्षविशेष), कुमुद (सफेद या लाल कमल), कैरव (सफेद कमल), नल (कमल), कपित्थ (कैथ वृक्ष), बिस (कमल तंतु), मृणाल (कमल तंतु), करीष, शिरीष, तट, तरङ्ग, कल्लोल, हिरण्य आदि।

प्रत्युदाहरण देशे इति किम्? देशवाचक नाम बनना चाहिए।

eg. पुष्करवान् हस्ती।

★ सूक्त-साम्नोरीयः 7-2-71

सूत्रार्थ सूक्त और साम अर्थ में नाम से मतु अर्थ में ईय प्रत्यय।

eg. अच्छावाक् = सोम याग में होतृ के साथ बोलने वाला ऋत्विग्।
अच्छावाक् अस्ति अत्र सूक्ते अच्छावाकीयं सूक्तम्।
यज्ञायज्ञीयं साम

→ सूक्त और साम ग्रंथ विशेष या ग्रंथों के अधिकार, विभाग वाचक शब्द हैं।

★ लुब् वाऽध्यायाऽनुवाके 7-2-72

सूत्रार्थ अध्याय और अनुवाक अर्थ में नाम से ईय का लोप विकल्प से होता है। लुप् होने से ही विकल्पे ईय प्रत्यय होता है, यह ~~क्रम~~ पता चला।

eg. गर्दभाण्डः गर्दभाण्डीयः अध्यायः अनुवाको वा।

→ अनुब्रवीति इति अनुवाकः अच् प्रत्यय। न्यङ्क्वादि-मेघादयः 5-1-112 से च् का क्।

★ विमुक्तादेरण् 7-2-73

सूत्रार्थ विमुक्तादि शब्दों से अध्याय-अनुवाक अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. वैमुक्तः, दैवासुरः अध्यायः अनुवाको वा। → विमुक्त, देवासुर, उपसद्, वसु, मरुत्, वयस्,

PAGE NO.
DATE / /

★ घोषदादेरक: 7-2-74

सूत्रार्थ घोषद् आदि शब्दों से अध्याय-अनुवाक अर्थ में अक प्रत्यय।

eg. घोषदक: गोषदक: अध्याय: अनुवाको वा।

→ अश्वन, स्वाहा, कृशानु, वाचस्पति, प्राण आदि।

★ प्रकारे जातीयर् 7-2-75

सूत्रार्थ प्रथमान्त नाम से षष्ठी अर्थ में, ~~प्रकार अर्थ में~~ जातीयर् प्रत्यय, यदि प्रथमान्त नाम प्रकार = सामान्य वाचक शब्द के दूसरे विशेषों को अनुसरने वाले, विशेष हो तो।

सामान्य	विशेष	अन्य विशेष
गुण	रूप	पीला, लाल, हरा
(रूप, रस, गंध, स्पर्श)	↑	

रूप गुण शब्द का विशेष है तथा अन्य विशेषों को भी अनुसरने वाला है, अतः रूप शब्द प्रकार अर्थ वाला हुआ।

गुण	पटु	पटुतर, पटुतम

ऐसे ही पटु शब्द भी प्रकार अर्थ वाला हुआ।

→ 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुः 7-2-1' से तद् का अधिकार चालू होने से टीका में स्यन्तं पद लिखा।

→ जातीयर् प्रत्यय में रित् 'रिति 3-2-58' सूत्र से पुंवद् भाव के लिए।

eg. पटुजातीय: = पटु: प्रकार: अस्य, पटु प्रकार वाला।

मृदुजातीय:, नानाजातीय:, एवंजातीय:, यज्जातीय:, तज्जातीय:।

★ कोऽण्वादे: 7-2-76

सूत्रार्थ अणु आदि शब्दों से 'तदस्य प्रकार' अर्थ में क प्रत्यय। जातीयर् का अपवाद।

eg. अणु: प्रकार: अस्य अणुक: पट:। स्थूलक: पट:। अणुका माषा:।

→ अण्वादि - अणु, स्थूल, माष, इषु, इक्षु, वाय, तिल, मणि, बृहत्, चञ्चत्, चन्द्र आदि।

★ जीर्ण-गोमूत्रा-ऽवदात-सुरा-यव-कृष्णाच्छाल्याच्छादन-सुरा-ऽहि-व्रीहि-तिले 7-2-77

सूत्रार्थ इन 6 शब्दों से अनुक्रमश: 6 अर्थों में 'तदस्य प्रकार' अर्थ में क प्रत्यय।

eg. जीर्णक: शालि: । गोमूत्रकं आच्छादनम् (गोमूत्र के colour का पर्दा)। अवदातिका सुरा।
सुरकोऽहि: (शराब के वर्ण वाला अहि)। यवको व्रीहि: (जौ जैसे दिखने वाले चावल)।
कृष्णका: तिला: (काले तिल)।

★ भूतपूर्वे च्चरट् 7-2-78

सूत्रार्थ पूर्वं भूत: भूतपूर्व:। भूतपूर्व अर्थ में नाम से चरट् प्रत्यय।
→ पित् 'क्यङ्-मानि-पित्तद्धिते 3-2-50' से पुंवद् भाव के लिए। टित् ङी के लिए 3-2 / 2-4-20।

eg. आढ्या भूतपूर्वा आढ्यचरी। दर्शनीयचर: (जो पहले दर्शनीय था)।

★ गोष्ठादीनञ् 7-2-79

सूत्रार्थ भूतपूर्व अर्थ में गोष्ठ शब्द से ईनञ् प्रत्यय।

eg. गौष्ठीन: देश: (पहले गाय का स्थान था)

★ षष्ठ्या रूप्य-च्चरट् 7-2-80

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त नाम से भूतपूर्व अर्थ में रूप्य और चरट् प्रत्यय।

eg. मैत्रस्य भूतपूर्व: मैत्ररूप्यो गौ: , मैत्रचर: गौ:। (जो बैल पहले मैत्र का था)

★ व्याश्रये तसु: 7-2-81

सूत्रार्थ व्याश्रय = अनेक पक्ष का आश्रय। व्याश्रयणं व्याश्रय:
वि + आ + श्रि + अल् 'युवर्ण-वृ-दृ-वश-रण-गमृद्-ग्रह: ~~अल्~~ 5-3-28'
⇒ व्याश्रय: (भाव में अल्)

षष्ठ्यन्त नाम से अनेक पक्ष का आश्रय अर्थ गम्यमान होने पर तसु प्रत्यय।

eg. अर्जुनस्य पक्षे अर्जुनत: ⇒ देवा अर्जुनतोऽभवन् (देव अर्जुन के पक्ष में हुए)
पहले देवों के लिए 2 विकल्प थे (पांडव या कौरव) इसलिए व्याश्रय अर्थ हुआ।
रवि: कर्णतोऽभवत् = सूर्य कर्ण के पक्ष में हुआ।
अर्जुनकर्णयोर्विवदमानयो: अर्जुनस्य पक्षे देवा: कर्णस्य पक्षे रवि: ~~अ~~भवत् भावार्थ:।
एवं यस्य पक्षे यत्त: । मम पक्षे मत्त: , त्वत्त:, तत्त:।
→ उ इत् 'अधातुस्वाद्याशस: 1-1-32' से अव्यय करने के लिए।

★ रोगात् प्रतीकारे 7-2-82

सूत्रार्थ षष्ठ्यन्त ~~नाम से~~ रोग वाचक नाम से प्रतीकार अर्थ में तस् प्रत्यय।

eg. प्रवहणं प्रवाहिका (दस्त का रोग) 'नाम्नि पुंसि च 5-3-121' से णक प्रत्यय।

प्रवाहिकात: कुरु = प्रवाहिकाया: प्रतीकारं कुरु (तू दस्त के रोग का नाश कर)

★ पर्यभे: सर्वोभये 7-2-83

सूत्रार्थ परि और अभि अव्यय से क्रमश: सर्व और उभय अर्थ में तस् प्रत्यय।

eg. परित: (सभी तरफ से), अभित: (दोनों तरफ से)

प्रतिउदाहरण सर्वोभये इति किम्? सर्व और उभय अर्थ में ही होगा।

eg. वृक्षं परि, अभि वा = वृक्ष के सम्मुख या वृक्ष का लक्षण।

★ आद्यादिभ्य: 7-2-84

सूत्रार्थ आदि वि. शब्दों से संभव होने वाले स्यादि के अर्थ में तस् प्रत्यय।

eg. आदौ आदे: वा आदित:। मध्ये मध्यात् वा मध्यत:। अन्तत:, अग्रत:, पार्श्वत:, पृष्ठत:, मुखत:, सर्वत:, उभयत:, अन्यत:, एकत:, प्रमाणत: वि.। प्रयोगगम्या:।

★ क्षेपा-ऽतिग्रहा-ऽव्यथेष्वकर्तुस्तृतीयाया: 7-2-85

सूत्रार्थ कर्ता सिवाय के तृतीयान्त नाम से क्षेप, अतिग्रह या अव्यथा अर्थ में तस् प्रत्यय।

eg. वृत्तत: क्षिप्त: अतिग्राह्य: न व्यथते वा = वर्तन या आचरण से फेंका हुआ, अतिग्रहण करने योग्य या व्यथा न ~~उत्पन्न~~ करने वाला।

वृत्तेन क्षिप्त: निन्दित इत्यर्थ:।

अतिक्रम्य अतिशयेन वा ग्रहणं अतिग्रह:। वृत्तेन अतिगृह्यते वृत्तत: अतिग्राह्य:।

अचलनं अक्षोभनं अभीति: वा अव्यथा। वृत्तेन न बिभेति वृत्तत: न व्यथते।

प्रतिउदाहरण अकर्तुरिति किम्? कर्ता सिवाय का तृतीयान्त नाम होना चाहिए।

eg. मैत्रेण क्षिप्त:।

★ पाप-हीयमानेन 7-2-86

सूत्रार्थ कर्ता सिवाय के तृतीयान्त नाम से पाप और हा = त्याग अर्थ वाले धातु के योग में तस् प्रत्यय।

eg. वृत्ततः पापः हीयते वा। शब्दतः पापः। स्वरतः हीनः। वर्णतः हीनः।

★ प्रतिना पञ्चम्याः 7-2-87
सूत्रार्थ प्रति के योग में पञ्चम्यन्त नाम से तसु प्रत्यय विकल्प से होता है।
eg. अभिमन्युः अर्जुनात् प्रति अर्जुनतः प्रति।
→ 'यतः प्रतिनिधि-प्रतिदाने प्रतिना 2-2-72' से पंचमी वि.।
तिलेभ्यः प्रति माषान् प्रयच्छति ⇒ तिलतः प्रति माषान् प्रयच्छति।

★ अहीय-रुहोऽपादाने 7-2-88
सूत्रार्थ अपादान पंचम्यन्त नाम से तस् प्रत्यय विकल्पे। यदि हीय या रुह् धातु का योग न हो तो।
हीय= हा धातु त्याग अर्थ में।
eg. ग्रामाद् ग्रामतो वा याति
प्रतिउदाहरण अहीय-रुह इति किम्? हा - रुह् धातु का संबंध नहीं होना चाहिए।
eg. सार्थाद् हीनः = सार्थ से भ्रष्ट। गिरेरवरोहति = पहाड़ से उतरता है।

★ किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्यबहोः पित् तस् 7-2-89
सूत्रार्थ किम्, द्वि आदि छोड़कर सर्वादि और विपुलता अर्थ सिवाय के बहु इन शब्द, इन पञ्चम्यन्त नामों से तस् पित् होता है।
eg. कुतः, सर्वतः, यत्तः, बहुतः (अनेक प्रकार से, विशाल नहीं)
प्रतिउदाहरण द्व्यादि वर्जनं किम्? द्वाभ्याम्, त्वत्।
अवैपुल्य इति किम्? बहोः सूपात् = बहुत सारी दाल से।

★ इतोऽतः कुतः 7-2-90
सूत्रार्थ तसन्त वाले ये निपात।
eg. इतः = इदम् +तस् (अस्मात्) इदम् → इ निपात।
एतस्मात् = अतः एतद् → अ निपात।
कस्मात् = कुतः किम् → कु निपात।

PAGE NO.
DATE / /

* भवत्वायुष्मद्-दीर्घायुर्देवानांप्रियैकार्थात् 7-2-91

सूत्रार्थ भवतु आदि के साथ तुल्य अधिकरण या एक अर्थ वाले, सर्वस्यादि अंतवाले किमादि शब्दों से पित् तस् प्रत्यय विकल्प से होता है।

eg. स भवान्, ततो भवान् ⇒ यहाँ ने 'वह ऐसे आप' में वह और आप तुल्य अधिकरण वाले अर्थात् एक ही है।

ते भवन्तः, ततो भवन्तः। स आयुष्मान्, ततो आयुष्मान्। स दीर्घायुः, ततो दीर्घायुः।
तं देवानांप्रियम्, ततो देवानांप्रियम्।

* त्रप् च 7-2-92

सूत्रार्थ भवतु आदि के साथ एक अर्थ वाले, सर्वस्यादि अंतवाले किमादि शब्दों से त्रप् प्रत्यय भी विकल्प से होता है।

eg. स भवान्, तत्र भवान्, ततो भवान्। तस्मिन् भवति, ततो भवति, तत्र भवति।

विशेष → भवतु में उ इत् भू धातु की शतृ प्रत्ययान्त और मतु प्रत्ययान्त (भं अस्ति अस्य भवत्) का बाध करने के लिए।

* क्व-कुत्रा-ऽत्रेह 7-2-93

सूत्रार्थ त्रप् अन्त वाले ये निपात होते हैं।

eg. क्व = कस्मिन् ⇒ किम् + त्रप् किम् → क्व, त्रप् → अ आदेश निपात।
कुत्र = कस्मिन् ⇒ किम् + त्रप् किम् → कु निपात।
अत्र = एतस्मिन् एतकस्मिन् वा ⇒ एतद् + त्रप् ⇒ एतद् → अ निपात।
इह = अस्मिन् ⇒ इदम् + त्रप् = इदम् → इ, त्रप् → ह निपात।

विशेष → भवतु आदि के साथ क्व भवान्, कुत्र भवान् आदि प्रयोग भी होते हैं।

* सप्तम्याः 7-2-94

सूत्रार्थ सप्तम्यन्त किमादि शब्दों से त्रप् प्रत्यय।

eg. कुत्र, सर्वत्र, तत्र, बहुत्र

विशेष पित् 'क्यङ्-मानि-पित्तद्धिते 3-2-50' से पुंवद् भाव के लिए।
बह्वीषु = बहुत्र

* किम्-यत्-तत्-सर्वैका-ऽन्यात् काले दा 7-2-95
सूत्रार्थ सप्तम्यन्त इन नामों से काल अर्थ में दा प्रत्यय।
eg. कदा = कस्मिन् काले। यदा (जिस काल में)। तदा। सर्वदा। एकदा। अन्यदा

* सदा-ऽधुनेदानीं-तदानीमेतर्हि 7-2-96
सूत्रार्थ काल अर्थ में निपातन।
eg. सर्वस्मिन् काले = सदा। सर्व → स निपात।
अस्मिन् काले = अधुना। इदम् + धुना ⇒ इदं → अ निपात।
अस्मिन् काले = इदानीं। इदं + दानीम् ⇒ इदं → इ निपात।
तस्मिन् काले = तदानीं। तद् + दानीम् ⇒।
अस्मिन् काले = एतर्हि। इदम् + र्हि ⇒ इदम् → एत निपात।

* सद्यो-ऽद्य-परेद्यव्यह्नि 7-2-97
सूत्रार्थ दिवस रूप काल अर्थ में निपात।
eg. समाने अहनि सद्यः ⇒ समान + द्यस् ⇒ समान् → स निपात।
अस्मिन् अहनि अद्य ⇒ इदम् + द्य ⇒ अद्य इदम् → अ निपात।
परस्मिन् अहनि पर + एद्यवि = परेद्यवि
→ अन्य मत वाले काल मात्र अर्थ में भी इन प्रयोगो को मान्य करते हैं।

* पूर्वा-ऽपरा-ऽधरोत्तरा-ऽन्या-ऽन्यतरेतराद् एद्युस् 7-2-98
सूत्रार्थ इन शब्दों से दिवस रूप काल अर्थ में एद्युस् प्रत्यय।
eg. पूर्वस्मिन् अहनि पूर्वेद्युः। अपरेद्युः। अधरेद्युः। उत्तरेद्युः। अन्येद्युः। अन्यतरेद्युः
इतरेद्युः।

* उभयाद् द्युस् च 7-2-99
सूत्रार्थ उभय शब्द से दिवस अर्थ में द्युस् और एद्युस् प्रत्यय।
eg. उभयद्युः। उभयेद्युः।

* ऐषमः-परुत्-परारि वर्षे 7-2-100

सूत्रार्थ वत्सर अर्थ में ये शब्द निपात।

eg. अस्मिन् इमकस्मिन् वा संवत्सरे ऐषमः। इदम्+समसिण् प्रत्यय

इदम्→इ आदेश, वृद्धि, मूर्धन्य ष निपात। जो साल चल रहा हो (eg. 2072)

पूर्वस्मिन् परस्मिन् वा वर्षे पूर्व+उत् पर+उत् = परुत् 'जो साल चल रहा है, उसके आगे-पीछे-वाले साल (2071, 2073)। पूर्व→पर आदेश निपात।

पूर्वतरे परतरे वा वर्षे परारि= जो साल चल रहा है, उसके एक साल बाद के साल (2070, 2074)

* अनद्यतने र्हिः 7-2-101

सूत्रार्थ अनद्यतन काल अर्थ वाले सप्तम्यन्त किमादि शब्दों से र्हि प्रत्यय।

eg. कस्मिन् अनद्यतने कर्हि='आज सिवाय के कौन से काल में। यर्हि अमुर्हि बहुर्हि।

* प्रकारे था 7-2-102

सूत्रार्थ प्रकार अर्थ वाले, संभवते स्यादि अंतवाले किमादि शब्दों से था प्रत्यय।

eg. सर्वेण प्रकारेण सर्वथा। अन्यथा। तथा। इतरथा।

→प्रकार= सामान्यस्य भिद्यमानस्य भेदान्तरानुप्रवृत्तः भेदः। '7-2-75' जैसे ही।

* कथमित्थम् 7-2-103

सूत्रार्थ प्रकार अर्थ में निपात।

eg. केन प्रकारेण कथम्। अनेन एतेन वा प्रकारेण इत्थम्।

→ 7-2-102 का अपवाद

* सङ्ख्याया धा 7-2-104

सूत्रार्थ प्रकार अर्थ वाले संख्या वाचक नामों से धा प्रत्यय।

eg. एकेन प्रकारेण एकधा। कतिभिः प्रकारैः कतिधा। द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां द्विधा। त्रिधा।

शतधा। बहुधा। गणधा। तावता प्रकारेण तावद्धा।

विचाले च 7-2-105

सूत्रार्थ ★ एक का अनेक रूप करना या अनेक का एक रूप करना = विचाल। eg. एक राशि ढेर पड़ा हो, उसे दो भागों में बाँटना अथवा अनेक अलग-अलग ढेर पड़े हो, उन्हें एक करना। विचाल अर्थ गम्यमान होने पर संख्यावाचक नामों से धा प्रत्यय विकल्प से होता है।

eg. एकः राशिः द्वौ द्विधा वा क्रियते। अनेकं एकं एकधा वा ~~क्रियते~~ करोति।

→ 'च' 7-2-106 सूत्र में प्रकार और विचाल दोनों अर्थों के समुच्चय के लिए।

वैकाद् धमञ् 7-2-106

सूत्रार्थ ★ एक शब्द से प्रकार और विचाल अर्थ में धमञ् प्रत्यय विकल्प से होता है।

eg. ऐकध्यम् एकधा भुङ्क्ते = एकेन प्रकारेण भुङ्क्ते।
अनेकं एकं करोति = ऐकध्यं एकधा वा करोति।

→ वा ग्रहण धा प्रत्यय के लिए।

द्वि-त्रेर्धमञेधौ वा 7-2-107

सूत्रार्थ ★ द्वि त्रि शब्द से प्रकार और विचाल अर्थ में धमञ्, धा प्रत्यय विकल्प से होते हैं। विकल्प पक्ष में धा प्रत्यय।

eg. द्वैधम् त्रैधम्, द्विधा, त्रेधा, द्विधा, त्रिधा भुङ्क्ते। (प्रकारार्थ)
द्वैधम् त्रैधम् द्विधा त्रेधा द्विधा त्रिधा एकं करोति। (विचाल अर्थ)

तद्वति धण् 7-2-108

सूत्रार्थ ★ द्वि-त्रि शब्द से पर प्रकार वाला और विचाल वाला अर्थ में धण् प्रत्यय

eg. द्वैधानि, त्रैधानि वा पुष्पाणि = दो या तीन प्रकार वाले पुष्प। अथवा दो या तीन विभाग वाले पुष्प।

तौ = प्रकार-विचालौ स्तः यस्य स तद्वान् (प्रकारवान्, विचारवान्), तस्मिन् = तद्वति (प्रकारवति विचालवति च)

वारे कृत्वस् 7-2-109

सूत्रार्थ ★ वार अर्थ में वर्तते संख्यावाचक शब्द से वार वाले धातु के अर्थ में कृत्वस् प्रत्यय।

eg. पञ्च वारा: अस्य पञ्चकृत्व: भुङ्क्ते।

★ द्वि-त्रि-चतुरः सुच् 7-2-110

सूत्रार्थ द्वि, त्रि, और चतुर् शब्द से बार वाले धातु के अर्थ में स् (सुच्) प्रत्यय।

eg. द्वौ वारौ अस्य द्विः । त्रिः।

चत्वारः वारौ अस्य चतुर् + स् 'रात् सः 2-1-90' से स् लुक्

चतुः

★ एकात् सकृच्चास्य 7-2-111

सूत्रार्थ एक शब्द से बार वाले धातु अर्थ में स् (सुच्) प्रत्यय और एक का सकृद् आदेश।

eg. एकवारं एक + स् ⇒ सकृद् + स् ⇒ सकृत् (पदस्य 2-1-89 से स् का लोप)

★ बहोर्धाऽऽसन्ने 7-2-112

सूत्रार्थ संख्यावाचक बहु शब्द से आसन्न यानि नजदीक के वार अर्थ में धा प्रत्यय।

eg. बहुधा भुङ्क्ते = एकदम नजदीक के काल में बहुत ही बार-बार खाता है।

→ केचित् गणधा कतिधा तावद्धा आदि प्रयोगान् अपि अस्मात् सूत्रात् मन्यन्ते।

★ दिक्शब्दाद् दिग्-देश-कालेषु प्रथमा-पञ्चमी-सप्तम्याः 7-2-113

सूत्रार्थ दिग्-देश-काल अर्थ में वर्त्तते, प्रथमा-पञ्चमी-सप्तम्यन्त ऐसे, दिशा वाचक शब्द से स्वार्थ में धा प्रत्यय।

eg. 1. प्राची दिग् रम्या = प्राग् रम्यम् (पूर्व दिशा रमणीय है।)

प्राची + धा 'लुबञ्चेः 7-2-123' से धा लोप

प्राची ⇒ प्राग् 'ङ्यादेर्गौणस्या... 2-4-95' से ङी लोप।

→ दिशा वाचक शब्द = प्राची, दिग् अर्थ = पूर्व दिशा, प्रथमान्त नाम।

→ '1-1-32' अधणतस्वाद्या शसः' से अव्यय। अव्यय होने से रम्या का रम्यम् हुआ।

2. दिक् शब्द = प्राची, दिग् अर्थ = पूर्व दिशा, पञ्चम्यन्त नाम।

प्राच्या दिशः आगतः = प्राग् आगतः (पूर्व दिशा से आया हुआ)

3. दिक् शब्द = प्राची, दिग् अर्थ = पूर्व दिशा, सप्तम्यन्त नाम।

प्राच्यां दिशि वासः = प्राग्वासः (पूर्व दिशा में रहना)

4. दिक् शब्द = ~~प्राची~~ प्राग्, देश अर्थ, प्रथमान्त नाम।
प्राङ् देशः रमणीयः = प्राग् रम्यः (पूर्व देश रम्य है।)

5. दिक् शब्द = प्राग्, ~~देश~~ काल अर्थ, प्रथमान्त नाम।
प्राङ् कालः रमणीयः = प्राग् रम्यः (पूर्व काल रम्य था।)

6. दिक् शब्द = प्राग्, देश अर्थ, पञ्चम्यन्त नाम।
प्राचः देशात् आगतः = प्राग् आगतः (पूर्व देश से आया हुआ)

7. दिक् शब्द = प्राग्, काल अर्थ, पञ्चम्यन्त नाम।
प्राचः कालात् आगतः = प्राग् आगतः (पूर्व काल से आया हुआ।)

8. दिक् शब्द = प्राग्, देश अर्थ, सप्तम्यन्त अर्थ।
प्राचि देशे वासः = प्राग् वासः (पूर्व देश में रहना)

9. दिक् शब्द = प्राग्, काल अर्थ, सप्तम्यन्त अर्थ।
प्राचि काले वासः = प्राग् वासः (पूर्व ~~देश~~ काल में रहना।)

→ बहुवचन प्रथमादि में यथासंख्यं अटकाने के लिए।

* ऊर्ध्वाद् रि-रिष्टातौ उपश्चास्य 7-2-114

सूत्रार्थ दिगादि अर्थ में वर्तते, प्रथमादि अन्त वाले ऊर्ध्व शब्द से रि और रिष्टात् प्रत्यय और ~~ऊर्ध्व~~ ऊर्ध्व का उप आदेश।

eg. उपरि, उपरिष्टात् रम्यम् = ऊपर की दिशा रम्य है, ऊपर का देश रम्य है, ऊपर का काल रम्य है।

उपरि, उपरिष्टात् आगतः = ऊपर (दिशा) से आया हुआ, ऊपर के देश से, ऊर्ध्वकाल से आया हुआ।

उपरि, उपरिष्टात् वासः = ऊर्ध्व दिशा में रहना, ऊर्ध्व देश में रहना, ऊर्ध्व काल में रहना।

* पूर्वा-ऽवरा-ऽधरेभ्योऽसस्तातौ पुरवधश्चैषाम् 7-2-115

सूत्रार्थ ~~पू~~ दिगादि अर्थ में वर्तते, प्रथमादि अन्त वाले पूर्व, अवर और अधर शब्द से अस् और अस्तात् प्रत्यय और क्रमशः इनके पुर्, अव्, अध् आदेश।

eg. पुरः, पुरस्तात् रम्यम् = पूर्व दिशा, पूर्व देश या पूर्व काल रम्य है।
पुरः पुरस्तात् आगतः = पूर्व दिशा से, पूर्व देश से या पूर्व काल से आया हुआ।
पुरः पुरस्तात् वासः = पूर्व दिशा में, पूर्व देश में या पूर्व काल में रहना।

अवर = नीचे या पीछे, पश्चिम
पर = अपर = दूसरा या अन्य
अधर = नीचे

अव: अवस्तात् रम्यम् = पश्चिम दिशा, देश या काल अथवा नीचे की दिशा, देश या काल रम्य है।
अव: अवस्तात् आगत: = पश्चिम दिशा, देश या काल से अथवा नीचे की दिशा, देश, काल से आया हुआ
अव: अवस्तात् वास: = पश्चिम दिशा, देश या काल में अथवा नीचे की दिशा, देश, काल में रहना।
अध: अधस्तात् रम्यम् = नीचे दिशा, देश या काल रम्य है।
अध: अधस्तात् आगत: = नीचे दिशा, देश या काल से आया हुआ।
अध: अधस्तात् वास: = नीचे दिशा, देश या काल में रहना।

* परा-ऽवरात् स्तात् 7-2-116

सूत्रार्थ दिगादि अर्थों में वर्तते, प्रथमादि अंतवाले पर, अवर शब्द से स्वार्थ में स्तात् प्रत्यय।

eg. परस्तात् रम्यम् = दूसरी या भिन्न दिशा, देश, काल रम्य है।
परस्तात् आगत: = दूसरी दिशा, देश, काल से आया हुआ।
परस्तात् वास: = दूसरी दिशा, देश, काल में रहना।
अवरस्तात् रम्यम् = नीचे की दिशा, देश या काल रम्य है।
अवरस्तात् आगत: = नीचे की दिशा, देश या काल से आया हुआ
अवरस्तात् वास: = नीचे की दिशा, देश या काल में रहना।

* दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् 7-2-117

सूत्रार्थ दिगादि अर्थ में वर्तते, प्रथमादि अंतवाले दक्षिण, उत्तर, पर, अवर शब्द से अतस् प्रत्यय।

eg. दक्षिणत: रम्यं, आगत:, वासो वा = दक्षिण दिशा रम्य है, से आया, में रहना। एवं देशेऽपि, काले न।
उत्तरत: रम्यं, आगत:, वासो वा = उत्तर दिशा रम्य है, से आया, में रहना। एवं देशे, कालेऽपि
परत: अवरत: वा रम्यं, आगत:, वासो वा। एवं देशे, कालेऽपि।
→ सभी सूत्रों में पुंवद् भाव करने के लिए 'सर्वादियोऽस्यादौ 3-2-61'
परा दिक् रम्या = परस्तात् रम्यम्।
→ दक्षिण शब्द काल अर्थ में असंभव है, अत: दिशा और देश, दो अर्थों में ही विग्रह करना।

* ~~अपरा-ऽधसाच्चोऽस्तात् 7-2-118~~

~~सूत्रार्थ~~ ~~सिद्धि~~ → दक्षिण + अतस् = दक्षिणत: अवर्णोवर्णस्य 7-4-68

प्र. यहाँ अतस् की जगह तस् प्रत्यय करते, तो भी रूप सिद्ध हो जाता। फिर अतस् क्यों किया? उ. अतसन्तवाले शब्दों को 6-3-16 से त्यच् प्रत्यय का निषेध होता है।

★ अधरा-ऽपराच्चाऽऽत् 7-2-118

सूत्रार्थ दिगादि अर्थों में वर्तते, प्रथमादि अंतवाले शब्दों से अधर-अपर, दक्षिण, उत्तर शब्द से आत् प्रत्यय।

eg. अधरात् रम्यं आगतो वासो वा

पश्चात् रम्यं आगतो वासो वा → अपर शब्द का पश्च आदेश 7-2-124 से।

दक्षिणात् रम्यं आगतो वासो वा। उत्तराद् रम्यं आगतो वासो वा।

★ वा दक्षिणात् प्रथमा-सप्तम्या आः 7-2-119

सूत्रार्थ दिग्-देश अर्थ में, प्रथमा और सप्तम्यन्त दक्षिण शब्द से आ प्रत्यय विकल्प से होता है।

eg. दक्षिणा, दक्षिणतः, दक्षिणाद् रम्यं वासो वा।

→ पञ्चम्यन्त नाम से आ प्रत्यय नहीं होगा, इसलिए आगतः का दृष्टांत नहीं दिया

★ आ-ऽऽही दूरे 7-2-120

सूत्रार्थ दूर ऐसे दिग्-देश अर्थ में, प्रथमा-सप्तम्यन्त दक्षिण शब्द से आ और आहि प्रत्यय।

eg. ग्रामाद् दक्षिणा, दक्षिणाहि रम्यं वासो वा = गाँव से दूर दक्षिण दिशा, देश रम्य है।
गाँव से दूर दक्षिण दिशा, देश में रहना।

★ वोत्तरात् 7-2-121।

सूत्रार्थ दिगादि अर्थ में, प्रथमा-सप्तम्यन्त उत्तर शब्द से आ और आहि प्रत्यय विकल्पे।

→ पृथक् उपादान से दूरे का अधिकार निवृत्त।

eg. उत्तरा, उत्तराहि, उत्तरतः, उत्तराद् रम्यं वासो वा।

★ अदूरे एनः 7-2-122

सूत्रार्थ दिगादि अर्थ में, प्रथमा-सप्तम्यन्त दिक् वाचक शब्द से अदूर = समीप अर्थ में एन प्रत्यय।

eg. पूर्वा अदूरा दिक् = पूर्वेण अस्य रम्यं वसति वा
इसकी समीप में पूर्व दिशा या देश या काल रमणीय है।
इसके समीप की पूर्व दिशा, देश, काल में रहता है।

लुबञ्चे: 7-2-123

सूत्रार्थ* दिगादि अर्थ में वर्तते, प्रथमादि अंत वाले अञ्च् अंत वाले दिक् वाचक शब्दों से पर
रो था या इरन प्रत्यय का लुप् होता है।

eg. प्राग् रम्यं आगतो वासो वा। एवं प्रत्यक् (पश्चिम् दिशा), अवाक् (नीचे, दक्षिण)
उदक् (ऊपर, उत्तर)।

→ लोप होने पर स्त्री-प्रत्यय (ङी) का भी लोप होगा।

पश्चोऽपरस्य दिक्पूर्वस्य चाऽऽति 7-2-124

सूत्रार्थ* अपर शब्द का, केवल या दिशावाचक शब्द पूर्व में हो तो, आत् प्रत्यय पर पश्च आदेश

eg. पश्चात् रम्यं आगतो वासो वा।
दक्षिणा चासौ अपरा च दक्षिणापरा। दक्षिणापरा दिक् रम्या
दक्षिणापरस्या: दिश: आगत: ⇒ दक्षिणपश्चात्
दक्षिणापरस्यां दिशि वास: रम्यं आगतो वासो वा

→ प्र. पश्च आदेश अकारान्त क्यों? यदि पश्च् होता तो भी पश्चात् रूप सिद्ध हो जाता।
उ. पश्चार्द्ध: वि. रूप सिद्ध करने के लिए।

वोत्तरपदेऽर्धे 7-2-125

सूत्रार्थ* केवल या दिक् वाचक शब्द पूर्व में हो जिसके ऐसे अपर शब्द का अर्ध उत्तरपद होने पर
पश्च आदेश विकल्प।

eg. अपरस्या: दिश: अर्धम् ⇒ पश्चार्धम्, अपरार्धम्।
दक्षिणापरस्या: दिश: अर्धम् ⇒ दक्षिणपश्चार्द्धम्, दक्षिणापरार्द्धम्।

कृ-भ्वस्तिभ्यां कर्म-कर्तृभ्यां प्रागतत्तत्त्वे च्विः 7-2-126

सूत्रार्थ* कर्म अर्थ में कृ धातु और कर्तृ अर्थ में भू-अस् धातु के योग में 'पहले नहीं था, और
अब है' अर्थ गम्य होने पर च्वि प्रत्यय।

eg. अशुक्लं शुक्लं करोति शुक्लीकरोति परम्।
प्राग् अशुक्ल: शुक्ल: भवति। स्यात् शुक्लीभवति। शुक्लीस्यात् पट:।
शुक्ल + च्वि + करोति। भवति ⇒

ईश्चाववर्णस्याऽनव्ययस्य 4-3-111 से अ → ई
शुक्लीकरोति शुक्लीभवति।

प्रतिउदाहरण प्रागिति किम् ? प्राग् अभाव और फिर भाव होना चाहिए।

eg. अशुक्लं शुक्लं करोति एकदा। एकदा = एक ही काल में, शीघ्रतया।
ऐसे शीघ्रता से कार्य होने में प्राग् और पश्चात् का भेद करना मुश्किल होने से च्वि प्रत्यय नहीं होगा।

* अरुर्मनश्चक्षुश्चेतो-रहो-रजसां लुक् च्वौ 7-2-127

सूत्रार्थ इन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का ~~च्वि~~ च्वि प्रत्यय पर लोप होता है।

eg. अरुस् = घाव। अनरुः अरुः स्यात् अरूस्यात् स् लोप, दीर्घश्च्वि-यङ्-यक्-क्येषु च 4-3-108'

उन्मनीस्यात्। चक्षूस्यात्। चेतीस्यात्। रहीस्यात्। रजीस्यात्।
→ सूत्र में बहुवचन तदन्त नाम से भी कार्य करने के लिए है।
'ग्रहणवता नाम्ना न तदन्त विधिः' = ग्रहण किए हुए नाम से होने वाली विधि तदन्त नाम से नहीं होती। इस न्याय के बाध के लिए बहुवचन किया।

eg. महत् चादः अरुः च महारुः। अमहारुः महारुः स्यात् महारूस्यात्।

* इसुसोर्बहुलम् 7-2-128

सूत्रार्थ इस् उस् अन्तवाले नामों के ~~इस् उ~~ अन्त्य स् का बहुलता से च्वि प्रत्यय पर लोप होता है।

eg. असर्पिः सर्पिः करोति सर्पीकरोति, सर्पिर्भवति।
धनूस्याद् वंशः धनुर्भवति।

* व्यञ्जनस्यान्त ई 7-2-129

सूत्रार्थ च्वि प्रत्यय पर व्यञ्जनान्त नाम में बहुलता से ई का आगम होता है।

eg. अदृषद् दृषद् भवति दृषदीभवति शिला। दृषद्भवति शिला।
समिध्यीभवति काष्ठम्, समिद्भवति।

PAGE NO.
DATE / /

★ व्याप्तौ स्सात् 7-2-130

सूत्रार्थ: कृ-भू-अस् धातु के योग में क्रमशः कर्म और कर्तृ से 'प्राग् अतत् तत्त्वे' अर्थ में स् आदि वाला सात् प्रत्यय। यदि व्याप्ति गम्यमान होय तो।

व्याप्ति= पहले उस रूप न हो, फिर उस रूप हो, उस पदार्थ का सभी प्रकार से द्रव्य के साथ संबंध गम्यमान हो तब।

eg. अग्निसात् करोति काष्ठम्, अग्निसाद् भवति, अग्निसात् स्यात् = काष्ठ अग्निमय होता है। उदकसात् करोति लवणम्।

→ स्स षत्व के निषेध के लिए = न स्सः 2-3-59

→ व्याप्ति भाव प्रकरणादि से जानना।

★ जातेः सम्पदा च 7-2-131

सूत्रार्थ: कृ-भू-अस् और सम् पूर्वक पद् धातु के योग में सामान्य जाति वाचक नाम की से 'प्राग् अतत् तत्त्वे' विषय में व्याप्ति गम्यमान हो तब स्सात् प्रत्यय।

eg. अस्यां सेनायां सर्वं शस्त्रं अग्निसात् करोति दैवम् = इस सेना में दैव=भाग्य सभी शस्त्र अग्निमय करता है। भाला, तलवार, गदा सभी व्यक्तिरूप शस्त्र हैं, शस्त्र जातिवाचक शब्द है।

→ च अनुकर्षण के लिए नहीं। किन्तु चारों धातु के समुच्चय के लिए। इसलिए नीचे 'चानुकृष्टं नानुवर्तते' न्याय नहीं लगेगा।

वर्षासु सर्वं लवणं उदकसात् करोति मेघः।

★ तत्राऽधीने 7-2-132

सूत्रार्थ: कृ भू अस् सं+पद् धातु के योग में सप्तम्यन्त नाम से अधीन अर्थ में सात् प्रत्यय।

eg. राज्ञि राजनि वा अधीनं राजसात् करोति, भवति, स्यात्, सम्पद्यते। गुरुसात् करोति शिष्यः।

★ देये त्रा च 7-2-133

सूत्रार्थ: सप्तम्यन्त नाम से 'देने योग्य वस्तु अधीन करने' अर्थ में कृ-भू-अस्-सं+पद् के योग में त्रा प्रत्यय।

eg. देवे अधीनं करोति, देवत्रा करोति। देवत्रा भवत्, स्यात्, सम्पद्यते।
प्रतिउदाहरण देय इति किम्? वस्तु देय होना चाहिए।
eg. राजसाद् भवति राष्ट्रम्। राष्ट्र = देय नहीं जेय वस्तु है।
→ च-कृ, भू, अस, सं+पद् के अनुकर्षण के लिए है परंतु सात् प्रत्यय के लिए नहीं, क्योंकि सात् प्रत्यय अधीनता मात्र विवक्षा में ऊपर के सूत्र से सिद्ध है। इसलिए अब कृ आदि नीचे सूत्र में नहीं उतरेंगे।

★ सप्तमी-द्वितीयाद् देवादिभ्यः 7-2-134
सूत्रार्थ सप्तम्यन्त और द्वितीयान्त देवादि शब्दों से स्वार्थ में त्रा प्रत्यय।
eg. देवे = देवत्रा वसेत् ⇒ देव के पास रहता है।
देवं = देवत्रा करोति, देवान् = देवत्रा गच्छति।
→ क्रियापद पर से द्वितीया या सप्तमी समझना।
→ पुरुष, मनुष्य, मर्त्य, बहु आदि प्रयोगगम्याः।

★ तीय-शम्ब-बीजात् कृगा कृषौ डाच् 7-2-135
सूत्रार्थ तीय अन्त वाले, शम्ब और बीज शब्दों से कृ धातु के योग में कृषि के विषय में डाच्।
eg. ① द्वितीया करोति = द्वितीयं वारं क्षेत्रं करोति (दूसरी बार खेत को जोतता है।)
② शम्बा करोति = सीधे जोतकर फिर तिरछा जोतता है।
③ बीजा करोति क्षेत्रं = बीज बोने के बाद बीज के साथ खेत जोतता है।
→ डाच् में चित् 'डाच्यादौ' 7-2-149 सूत्र की विशेषता के लिए।

★ सङ्ख्यादे गुणात् 7-2-136
सूत्रार्थ संख्या रूप आदि अवयव से पर जो गुण शब्द, उस गुण अन्त वाले शब्दों से कृ धातु के योग में कृषि के विषय में डाच् प्रत्यय।
eg. द्विगुणं कर्षणं करोति क्षेत्रम् = खेत को दो गुणा खोदता है। कुछ फसल के बीजों को ज्यादा गहराई में बोना पड़ता है, अतः ऐसा किया जाता है।
क्षेत्रस्य द्विगुणं त्रिगुणं च विलेखनं करोति इत्यर्थः।

★ समयाद् यापनायाम् 7-2-137

सूत्रार्थ समय शब्द से कालक्षेप अर्थ में कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. समया करोति = काल पसार करता है।

★ सपत्र-निष्पत्रादतिव्यथने 7-2-138

सूत्रार्थ सपत्र और निष्पत्र शब्द से अति पीड़ा अर्थ में कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. सपत्रा करोति मृगम् = मृगस्य शरीरे पत्रं (शरं, बाणं) प्रवेशयतीत्यर्थः।

निष्पत्रा करोति = शरीर से बाण खींचता है।

प्रतिउदाहरण अतिव्यथने इति किम्? अति पीड़ा गम्य हो तो ही डाच् प्रत्यय।

eg. सपत्रं करोति तरुं सेकः = पेड़ को पत्ते सहित सिंचन करता है।

★ निष्कुलान्निष्कोषणे 7-2-139

सूत्रार्थ निष्कुल शब्द से 'निष्कोषण = अंदर के अवयव को बाहर निकालना' अर्थ में कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. निष्कुला करोति दाडिमम् = अनार को खोलता है।

निष्कुला करोति पशुं चाण्डालम्।

प्रतिउदाहरण निष्कोषण इति किम्? निष्कोषण अर्थ होना चाहिए।

eg. निष्कुलं करोति शत्रुम् = शत्रु को कुल बिना का करता है।

★ प्रियसुखादानुकूल्ये 7-2-140

सूत्रार्थ प्रिय-सुख शब्द से आनुकूल्य अर्थ गम्य हो तो कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. प्रिया करोति, सुखा करोति गुरुम् = गुरु को प्रिय या सुख करता है।

प्रतिउदाहरण आनुकूल्य इति किम्? अनुकूलता अर्थ गम्यमान हो तो ही डाच् प्रत्यय।

आनुकूल्य चेतन का धर्म है, जड़ का नहीं।

eg. प्रियं करोति साम = मीठावचन प्रिय करता है।

सुखं करोति औषधपानम् = औषध का पान सुख करता है।

→ यहाँ करने वाला कर्ता जड़ है जबकि ऊपर में कर्ता 'शिष्य' सचेतन है।

* दुःखात् प्रातिकूल्ये 7-2-141

सूत्रार्थ दुःख शब्द से प्रतिकूलता अर्थ गम्य हो तो कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. दुःखा करोति शत्रुम् = शत्रु को दुःख करता है।

प्रतिउदाहरण प्रातिकूल्य इति किम्? प्रातिकूल्य भी सचेतन का धर्म है, अतः कर्ता सचेतन होना चाहिए। eg. दुःखं करोति रोगः।

* शूलात् पाके 7-2-142

सूत्रार्थ शूल शब्द से पाक अर्थ में कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. शूला करोति मांसम् = शूले पचतीत्यर्थः।

* सत्यादशपथे 7-2-143

सूत्रार्थ अशपथ अर्थ वाले सत्य शब्द से कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. सत्या करोति वणिग् भाण्डम् = व्यापारी भांड को सत्य करता है, विश्वास खड़ा करता है। जैसे वि. देने के द्वारा, मैं इन भांड को अवश्य खरीदूँगा, ऐसा विश्वास दिलाता है।

प्रतिउदाहरण अशपथ इति किम्? शपथ सिवाय का अर्थ होना चाहिए।

eg. सत्यं करोति, शपथं करोति इत्यर्थः।

* मद्र-भद्राद् वपने 7-2-144

सूत्रार्थ मद्र-भद्र शब्द से वपन = मुंडन अर्थ गम्य हो तो कृ धातु के योग में डाच् प्रत्यय।

eg. मद्रा करोति, भद्रा करोति नापितः = नाई मंगल के लिए मुंडन करता है। (मद्र, भद्र = मंगल, कल्याण)

प्रतिउदाहरण वपन इति किम्? मुंडन अर्थ होना चाहिए।

eg. मद्रं, भद्रं करोति साधुः = साधु कल्याण करते हैं।

* अव्यक्तानुकरणादनेकस्वरात् कृ-भ्वस्तिनाऽनितौ द्विश्च 7-2-145

सूत्रार्थ जिस ध्वनि में और जिस शब्दोच्चार में वर्ण विशेष रूप से नहीं जनाते हैं, वह अव्यक्त ध्वनि। 'अव्यक्त का अनुकरण करना' ऐसे अर्थ वाले, इति पर में न हो ऐसे, अनेक-

स्वर वाले शब्द से कृ-भू-अस् धातु के योग में डाच् प्रत्यय विकल्प से होता है और पूरी प्रकृति द्वित्व होती है।

eg. परत् करोति ⇒ परत् + डाच् ⇒ परत् परत् + डाच्

⇒ परपरत् + डाच् 'डाच्यादौ 7-2-149' से त् लोप।

⇒ परपद् + आ 'डित्यन्त्यस्वरादेः 2-1-114' 'अप्रयोगीत् 1-1-37'

⇒ परपरा करोति भवति स्याद् वा।

एवं दमत् - दमदमा करोति, मसत् - मसमसा करोति, खरत् - खरखरा करोति।

प्रतिउदाहरण ① अनेकस्वरादिति किम्? अनेक स्वर वाला अव्यक्त शब्द का अनुकरण होना चाहिए

eg. खाट् करोति।

② अनिताविति किम्? इति पर में नहीं होना चाहिए।

eg. पटिति करोति - 7-2-146 सूत्र।

⇒ अव्यक्त ध्वनि का अनुकरण तो व्यक्त वर्ण वाला ही होता है।

* इतावतो लुक् 7-2-146

सूत्रार्थ अनेकस्वर वाले अव्यक्त के अनुकरण का जो अत् है, उसका इति शब्द पर लुक्।

eg. परत् + इति ⇒ पट् + इति ⇒ पटिति।

* न द्वित्वे 7-2-147

सूत्रार्थ अनेक स्वर वाले अव्यक्तानुकरण का द्वित्व होने पर इति शब्द पर अत् का लुक् नहीं।

eg. परत् ⇒ 'वीप्सायां 7-4-80' ⇒ परत्परत् + इति ⇒ परत्परादिति।

* तो वा 7-2-148

सूत्रार्थ अनेक स्वरी अव्यक्तानुकरण का द्वित्व होने पर अंत के अत् के त् का लोप विकल्प से।

eg. परत्परत् + इति ⇒ परत्पर + इति ⇒ परत्परेति करोति

⇒ परत्परदिति वा।

* डाच्यादौ 7-2-149

सूत्रार्थ अनेक स्वरी अव्यक्त के अनुकरण रूप शब्द का द्वित्व होने पर आदि अवयव के अत् के त् का

डाच् प्रत्यय पर लुक्।

eg. पटत्पटत् करोति ⇒ पटत्पटत् + डाच् ⇒ पटपटा करोति।

प्रतिउदाहरण आदौ इति किम्? आदि के अवयव के त् का ही लोप।

eg. पतपता करोति। ⇒ पतत् पतत् + डाच्। यहाँ आदि अवयव में दो त हैं, अत् के त् का ही लोप होगा, मूल प्रकृति के त् का नहीं।

★ बह्वल्पार्थात् कारकादिष्टा-ऽनिष्टे प्शस् 7-2-150

सूत्रार्थ कारक वाची ऐसे बहु अर्थ वाले और अल्प अर्थ वाले नाम से अनुक्रमे इष्ट अने अनिष्ट विषय में पित् शस् प्रत्यय।

→ इष्ट = प्राशित्रादि = मेहमानादि जिसके घर हो।

प्र + अश् (गण 9, खाना) ⇒ प्राश्नाति इति प्राशितृ = अच्छा-अच्छा खाने वाला (मेहमान)

प्राशिता प्राप्तः यस्य स इति प्राशित्रः (जिसके घर मेहमान आए हो)

प्राशितृ + अण् ⇒ प्राशित्रः 'ऋत्वादिभ्योऽण् 6-4-125'

अथवा- बालक द्वारा जो पहला भोजन किया जाता है, उसे भी प्राशित्र कहा जाता है।

→ अनिष्ट = श्राद्धादि श्राद्ध वि. अनिष्ट, अशुभ विषय हैं।

eg. ग्रामे बहवः बहुशः वा ददति = गाँव में बहुत लोग इष्ट विषय में दान देते हैं।

एवं भूरिशः। प्रभूतशः। गणशः।

अल्पं अल्पशः वा धनं दत्ते श्राद्धे, एवं स्तोकशः = श्राद्ध में लोग कम धन देते हैं।

प्रतिउदाहरण इष्टानिष्ट इति किम्? बहु दत्ते श्राद्धे = श्राद्ध में बहुत देता है।

अल्पं प्राशित्रे = प्राशित्र में अल्प देता है।

यहाँ दोनों विषय विपरीत हैं।

अन्य उदाहरण- विवाहे बहून् कार्षापणान् ददाति, बहुशः ददाति। विवाहे बहुभिः अतिथिभिः भुक्तम्, बहुशः भुक्तम्। बहुभ्यः बहुशो वा अतिथिभ्यः ददाति। बहुभ्यः बहुशो वा ग्रामेभ्यः आगच्छति। बहुषु बहुशो वा ~~ग्रामे~~ ग्रामेषु वसति। एवं अल्पार्थेऽपि।

प्रतिउदाहरण कारकादिति किम्? कारक होना चाहिए। बहूनां स्वामी।

→ पित् पित्कार्य के लिए। स्त्रीलिंग शब्द से पुंवद् भाव।

PAGE NO.
DATE / /

* संख्यैकार्थाद् वीप्सायां शस् 7-2-151

सूत्रार्थ कारकवाचि संख्यावाचक नाम से तथा एकार्थ= एकव. में वर्तते नाम से वीप्सा अर्थ द्योतित होने पर शस् प्रत्यय विकल्प से।

eg. एकं दत्ते ⇒ वीप्सायां 7-4-80 एकैकं दत्ते (प्रत्येक को देता है।)
एकैकं एकशः वा दत्ते। द्वौ द्वौ द्विशः वा दत्ते। त्रिशः तावच्छः कतिशः आदि।
एकैकेन दीयते, एकशः दीयते।
माषं माषं माषशो वा दत्ते।

प्रतिउदाहरण ① संख्यैकार्थादिति किम्? संख्या वाची नाम या एकव. वाला नाम ही चाहिए।
eg. माषौ माषौ दत्ते = दो-दो माष देता है।
② वीप्सायां इति किम्? वीप्सा अर्थ भी होना चाहिए।
eg. द्वौ दत्ते - वीप्सा की विवक्षा नहीं है। दो को देता है या दो देता है।

विशेष → वा का अधिकार 'वाऽऽद्यात् 6-1-11' से चालू।
→ 'वीप्सायां 7-4-80' सूत्र से द्वित्व की प्राप्ति होने पर भी उसके विकल्प स्वरूप यह सूत्र है।
आप्तुं इच्छा= वीप्सा सन्नन्त भाववाचक शब्द।
वि + आप् + सन् 'ज्ञप्यापो ज्ञीपीप्, न च द्विः, सि सनि 4-1-16'
वि + ईप् + सन् ⇒ वीप्स + अ 'शंसि-प्रत्ययात् 5-3-105' से भाव में अ
वीप्स + आप् ⇒ वीप्सा

* संख्यादेः पादादिभ्यो दान-दण्डे चाऽकल्लुक् च 7-2-152

सूत्रार्थ संख्या वाची शब्द हैं आदि में जिनके, ऐसे पाद वि. अंतवाले नाम से दान, दण्ड और च से वीप्सा अर्थ में अकल् प्रत्यय और उसके योग में प्रकृति के अन्त्य का लोप।

eg. ① द्वौ पादौ दत्ते = द्विपदिकां दत्ते।
दान ⇒ द्वि पाद + अकल् ⇒ द्वि पाद् + अकल् 'य-स्वरे पादः पदाणि-क्य-घुटि 2-1-102'
⇒ द्विपद् + अकल् 'अस्याऽयत्-तत्-क्षिपकादीनां 2-4-111'
⇒ द्विपदिक + आप् लित् स्त्री. में आप्
⇒ द्विपदिकां दत्ते = दो-दो कदम पर देता है।

② दण्ड → द्विपदिकां दण्डितः दो-दो कदम पर दंडित होता है।
③ वीप्सा → द्विपदिकां भुङ्क्ते दो-दो कदम पर भोजन करता है।

★ तीयाट्टीकण् न विद्या चेत् 7-2-153
सूत्रार्थ अविद्या अर्थ वाले, तीय अन्त वाले नाम से टीकण् प्रत्यय स्वार्थ में विकल्प से होता है।
eg. द्वितीयं वचनं, द्वैतीयीकम्। तृतीयं, तार्तीयीकम्।
द्वितीया विद्या।

★ निष्फले तिलात् पिञ्ज-पेजौ 7-2-154
सूत्रार्थ ~~निष्~~ निष्फल अर्थ में तिल शब्द से पिञ्ज-पेज प्रत्यय।
eg. तिलपिञ्जः तिलपेजः।

★ प्रायोऽतोर्द्वयसट्-मात्रट् 7-2-155
सूत्रार्थ अतु अन्त वाले नाम से स्वार्थ में द्वयसट्-मात्रट् प्रत्यय, प्रायः से जैसे प्रयोग मिले वैसे।
eg. यावदेव यावद्द्वयसम्, यावन्मात्रम्।

★ वर्णा-ऽव्ययात् स्वरूपे कारः 7-2-156
सूत्रार्थ वर्ण और अव्यय से स्वरूप अर्थ में ही कार प्रत्यय।
eg. वर्ण- अकारः। अव्यय- ऊँकारः, चकारः, एवकारः, हुंकारः, पूत्कारः, चीत्कारः, नमस्कारः, सीत्कारः, अहमेव अहंकारः।
प्रतिउदाहरण स्वरूप इति किम्? स्वरूप अर्थ में ही लगेगा।
eg. अः विष्णुः (पर्यायवाची), कः ब्रह्मा, खं आकाशम्।

★ रादेफः 7-2-157
सूत्रार्थ र से स्वरूप अर्थ में एफ प्रत्यय विकल्प से। विकल्प में कार प्रत्यय।
eg. रेफः रकारः।
→ विकल्प प्रायः के अधिकार से।

PAGE NO.
DATE / /

* नाम- रूप- भागाद् धेय: 7-2-158

सूत्रार्थ इन शब्दों से स्वार्थ में धेय प्रत्यय विकल्प।

eg. नामधेयम्, रूपधेयम्, भागधेयम्। नाम एव, रूप एव, भाग एव

* मर्तादिभ्यो य: 7-2-159

सूत्रार्थ स्वार्थ में य प्रत्यय।

eg. मर्त: एव मर्त्य:। सूर: एव सूर्य:। भाग्यम्। अपराध्यम्।

→ प्रयोगगम्या:।

* नवादीन-तनत्नं च नू चास्य 7-2-160

सूत्रार्थ नव शब्द से स्वार्थ में ईन, तन, त्न, य प्रत्यय और इनके योग में नव का नू आदेश।

eg. नव + ईन = नू + ईन 'अस्वयम्भुवोऽव् 7-4-70'

नवीनम्। नूतनम्। नूत्नम्। नव्यम् 'य्यक्ये 1-2-25'।

* प्रात् पुराणे नश्च 7-2-161

सूत्रार्थ पुराण अर्थ वाले प्र अव्यय से न, ईन, तन, त्न प्रत्यय।

eg. प्रणम्। प्रीणम्। प्रतनम्। प्रत्नम् पुराणम् = पुराना। प्रगतं काल इत्यर्थ:।

* देवात् तल् 7-2-162

सूत्रार्थ देव शब्द से स्वार्थ में तल् प्रत्यय।

eg देव: एव देवता लित् स्त्री. के लिए।

* होत्राया ईय: 7-2-163

सूत्रार्थ होत्रा शब्द से स्वार्थ में ईय प्रत्यय।

eg. होत्रा एव होत्रीयम्

★ भेषजादिभ्यष्ष्यञ् 7-2-164

सूत्रार्थ भेषजादि शब्दों से ष्यञ् प्रत्यय स्वार्थ में।

eg. भैषज्यम्, आनन्त्यम्।

→ भेषजादि - भेषज (औषधि), अनन्त, इतिह (उपदेश की परंपरा में अव्यय, ऐतिह्यम्), चतुर्वर्णम्, चतुर्वेद, त्रिवेद, त्रिलोक (त्रैलोक्यम्), सर्ववेद, सर्वलोक।

★ प्रज्ञादिभ्योऽण् 7-2-165

सूत्रार्थ प्रज्ञादि शब्दों से स्वार्थ में अण्।

eg. प्रज्ञः एव प्राज्ञः, वणिग् एव वाणिजः

→ प्रज्ञादि - प्रत्यक्ष, विद्वस्, विदत्, विद्या, मनस्, रक्षस् (राक्षसः), असुर, शत्रु, चोर (चौरः), चक्षुस्, पिशाच, चण्डाल (चाण्डालः) आदि।

★ श्रोत्रौषधि-कृष्णाच्छरीर-भेषजमृगे 7-2-166

सूत्रार्थ श्रोत्र, ओषधि, कृष्ण शब्द से क्रमशः शरीर, भेषज और मृग अर्थ में अण् प्रत्यय।

eg. श्रौत्रं वपुः, ~~औषधि~~ औषधं भेषजम्, काष्र्णो मृगः (काला मृग)।

★ कर्मणः ~~सन्~~ सन्दिष्टे 7-2-167

सूत्रार्थ संदिष्ट अर्थ में कर्मन् शब्द से स्वार्थ में अण् प्रत्यय।

eg. संदिष्ट = अन्य द्वारा अन्य को जो कहा जाए, कि तेरे द्वारा यह कार्य करने योग्य है, वह कार्य संदिष्ट कर्म कहा जाता है।

eg. कर्म संदिष्टं = कार्मणम्।

→ वृद्ध परंपरा के उपदेश से वशीकरण मंत्र की क्रिया को कार्मण कहा जाता है।

→ 'वाऽऽद्यात् 6-1-11' से वा का अधिकार चालू होने पर भी विशिष्ट अर्थ प्रत्यय बिना ज्ञात नहीं होता, इसलिए नित्य प्रत्यय विधि होती है।

★ वाच इकण् 7-2-168

सूत्रार्थ संदिष्ट अर्थ वाले वाक् शब्द से स्वार्थ में इकण् प्रत्यय।

eg. संदिष्टा वाक् = वाचिकम्। वाचिक = संदेश

→ नित्य प्रत्यय विधि विशेष अर्थ में करना।

★ सूत्रार्थ — विनयादिभ्यः 7-2-169
स्वार्थ में इकण् प्रत्यय।
eg. वैनयिकम्, सामयिकम् (समय)
→ विनयादि - कथंचित्, अकस्मात् (आकस्मिकम्), उपचार (औपचारिकम्), व्यवहार (व्यावहारिकम्), समाचार, संप्रदाय (सांप्रदायिकम्), संगति, संग्राम, समूह, विशेष, प्रत्यय, अत्यय आदि।

★ सूत्रार्थ — उपायाद्वध्रस्वश्च 7-2-170
उपाय शब्द से स्वार्थ में इकण् और पा का ह्रस्व।
eg. उपाय एव औपयिकम्।

★ सूत्रार्थ — मृदस्तिकः 7-2-174
मृद् शब्द से स्वार्थ में तिक प्रत्यय।
eg. मृत्तिका

★ सूत्रार्थ — सस्नौ प्रशंसायाम् 7-2-172
मृद् शब्द से प्रशस्त अर्थ में स और स्न प्रत्यय।
eg. प्रशस्ता मृद् मृत्सा ~~मृस~~ मृत्स्ना।